Resource: Open Hindi Contemporary Version

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Exodus 1:1

1 याकोब के साथ मिस्र में अपने-अपने घराने के साथ आकर
रहनेवाले इस्राएलियों के नाम निम्न लिखित हैं:

2 रियूबेन, शिमओन, लेवी और यहूदाह;

3 इस्साखार, ज़ेबुलून तथा बिन्यामिन;

4 दान एवं नफताली; गाद एवं आशेर.

5 याकोब के वंश में सत्तर जन थे, योसेफ़ पहले ही मिस्र में थे.

6 वहां योसेफ़ और उनके सभी भाई तथा पूरी पीढ़ी के लोगों
की मृत्यु हो गई थी.

7 इस्राएली बहुत फलवंत थे और वे बढ़ते चले गए, और बहुत
सामर्थ्यी होकर पूरे देश में भर गए.

8 फिर मिस्र में एक नया राजा बना, जो योसेफ़ को नहीं जानता
था.

9 उसने अपनी प्रजा से यह कहा, “इस्राएल के लोग संख्या में
और बल में हमसे अधिक हैं.

10 इसलिये हम समझदारी से रहें, ये लोग तो बढ़ते जाएंगे! ऐसा
न हो कि युद्ध की स्थिति में हमारे शत्रुओं के साथ मिलकर,
हमसे ही युद्ध करने लगें और देश छोड़कर चले जाएं.”

11 इस विचार से उन्होंने इस्राएलियों को कड़ी मेहनत कराने
के उद्देश्य से ठेकेदार नियुक्त कर दिए. तब फ़रोह के लिए
पिथोम तथा रामेसेस नामक भण्डारगृह नगरों को बनाए.

12 जितना इस्राएलियों को कष्ट दिया गया, उतने ही वे बढ़ते
और देश में फैलते गए, इसलिये इस्राएली मिस्रवासियों के
लिए डर का कारण बन गये.

13 मिस्री इस्राएलियों से कठोर मेहनत कराते रहे.

14 इस प्रकार मिस्रियों ने इस्राएलियों के जीवन को दुःखपूर्ण
कर दिया. उन्हें गारे तथा ईंट के लिए कड़ी मेहनत करनी
पड़ती थी. सभी कामों में उन्हें दुःखी कर सताया जाता था.

15 यह देख मिस्र देश के राजा ने इब्री धायों को बुलवाया. इनमें
एक का नाम शिफ़्राह तथा दूसरी का पुआह था.

16 राजा ने उनसे कहा, “इब्री स्त्रियों का प्रसव कराते समय
जैसे ही तुम्हें यह पता चली कि लड़का है, तुम उसकी हत्या
कर देना; किंतु यदि वह पुत्री हो, तो उसे जीवित रहने देना.”

17 किंतु धायें परमेश्वर का भय मानने वालीं थीं. इस कारण
उन्होंने राजा की बात नहीं मानी; वे पुत्रों को जीवित छोड़ती
चली गईं.

18 इसलिये राजा ने धायों को बुलवाया और उनसे पूछा, “तुम
ऐसा क्यों कर रही हो? क्यों लड़कों को जीवित छोड़ रही हो?”

19 उन्होंने फ़रोह को उत्तर दिया, “इब्री स्त्रियां मिस्री स्त्रियों के
समान नहीं होती; वे हृष्ट-पुष्ट होती हैं, इसलिये हमारे पहुंचने से
पहले ही प्रसव कर चुकी होती हैं.”

20 इस कारण परमेश्वर की दया उन धायों पर बनी रही,
इस्राएली बढ़ते और शक्तिशाली होते गए.

Exodus 2:1

21 धायों के मन में परमेश्वर का भय था, इस कारण परमेश्वर ने
उनको अपने परिवार दिये.

22 फिर फ़रोह ने सब लोगों से कहा, “हर नवजात पुत्र को, जो
तुम्हारे आस-पास जन्म लेता है, उन्हें नील नदी में फेंक दिया
करना, किंतु पुत्री को जीवित रहने देना.”

Exodus 2:1

1 लेवी गोत्र के एक व्यक्ति ने लेवी गोत्र की एक कन्या से विवाह
किया.

2 उस कन्या ने गर्भधारण किया और एक बच्चे को जन्म दिया,
और वह बहुत सुंदर था, उसने उसे तीन महीने तक छिपाए
रखा.

3 किंतु जब बच्चे को छिपाए रखना उसके लिए मुश्किल हो
गया तब उसने एक टोकरी बनाई और उस पर तारकोल और
पीच का लेप किया. उसने बच्चे को टोकरी में रख उस टोकरी
को नील नदी के किनारे लंबी घासों के बीच में रख दिया.

4 उस बच्चे की बहन बच्चे के साथ क्या होगा यह देखने के
लिए दूर खड़ी हुई थी.

5 फ़रोह की पुत्री नील नदी में स्नान करने आई और उसकी
दासियां नदी के किनारे चल रही थीं. फ़रोह की पुत्री की नजर
उस टोकरी पर पड़ी. उसने अपनी दासियों को वह टोकरी
लाने को कहा.

6 उस टोकरी को खोलने पर उसकी नजर उस बच्चे पर पड़ी,
जो उस समय रो रहा था. बच्चे पर उसको दया आई और वह
समझ गई कि यह किसी इब्री का ही बच्चा है.

7 उस बच्चे की बहन ने फ़रोह की पुत्री से पूछा, “क्या मैं जाकर
इसके लिए इब्री धायों में से किसी को ले आऊं जो इसे दूध
पिला सके?”

8 फ़रोह की पुत्री ने उससे कहा, “जाओ!” तब वह लड़की
जाकर बच्चे की मां को ही बुला लाई.

9 फ़रोह की पुत्री ने उससे कहा, “इस बच्चे को ले जाओ और
इसका पालन पोषण करो. इसके लिए मैं तुम्हें मजदूरी दूंगी.”
तब वह स्त्री उस बच्चे को ले गई और उसका पालन पोषण
किया.

10 जब बच्चा बड़ा हो गया तब वह बच्चे को फ़रोह की पुत्री के
पास ले गई और फ़रोह की पुत्री ने उसे अपना पुत्र मान लिया.
उसने उसका नाम मोशेह रखा. उसका मतलब था, “मैंने उसे
जल में से पाया है.”

11 जब मोशेह जवान हुए, तब वह अपने लोगों से मिलने उनके
पास गए तो देखा कि वे कड़ी मेहनत कर रहे थे. उसी समय
उन्होंने देखा कि एक मिस्री किसी इब्री को मार रहा था.

12 इसलिये मोशेह ने उस मिस्री को मार दिया और उसे रेत में
छिपा दिया.

13 अगले दिन मोशेह ने देखा कि दो इब्री आपस में लड़ रहे हैं.
इसलिये मोशेह ने उनसे पूछा, “क्यों आपस में लड़ रहे हो?”

14 उस व्यक्ति ने मोशेह को जवाब दिया, “किसने तुम्हें हम पर
राजा और न्याय करनेवाला ठहराया है? कहीं तुम्हारा मतलब
कल उस मिस्री जैसे मेरी भी हत्या का तो नहीं है?” यह सुनकर
मोशेह डर गए और उन्होंने सोचा, “अब यह भेद खुल चुका
है.”

15 जब फ़रोह को यह मालूम हुआ, तब उसने मोशेह की हत्या
करने को सोचा, किंतु मोशेह फ़रोह के सामने से भागकर
मिदियान देश में रहने लगे, वहां एक कुंआ था.

16 मिदियान के पुरोहित की सात पुत्रियां थीं. वे उस कुएं में जल
भरने आईं तथा उन्होंने अपने पिता की भेड़-बकरियों के लिए
नांदों में जल भरा.

17 तभी कुछ चरवाहे आए और उन कन्याओं को वहां से भगा
दिया; तब मोशेह वहां आए और उन कन्याओं का बचाव
किया तथा उनकी भेड़-बकरियों को जल पिलाया.

18 जब वे घर लौटीं, तो उनके पिता रियुएल ने उनसे पूछा,
“आज इतनी जल्दी कैसे घर लौट आई हो?”

19 उन्होंने उत्तर दिया, “एक मिस्री ने उन चरवाहों से हमारी
रक्षा की. यही नहीं, उसने कुएं से जल निकालकर हमें और
हमारी भेड़-बकरियों को भी पिलाया.”

20 रियुएल ने अपनी पुत्रियों से पूछा, “वह व्यक्ति कहां है? तुम
उसे वहीं क्यों छोड़ आई? उसे भोजन के लिए बुला लाओ!”

21 मोशेह उनके साथ रहने के लिए तैयार हो गए. रियुएल ने
अपनी पुत्री ज़ीप्पोराह का विवाह मोशेह के साथ कर दिया.

22 उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया. मोशेह ने उसका नाम
गेरशोम रखा, उसका मतलब था, “मैं परदेश में एक अजनबी
हूं.”

23 उस लंबे समयकाल के बाद मिस्र देश के राजा की मृत्यु हो
गई. इस्राएली अपने दासत्व में कराह रहे थे और दुहाई दे रहे
थे. वे सहायता की गुहार कर रहे थे और उनके दासत्व की यह
गुहार परमेश्वर तक पहुंची.

24 परमेश्वर ने उनकी कराहट सुनी, और अब्राहाम, यित्सहाक
तथा याकोब के साथ की गई अपनी वाचा को याद किया.

25 परमेश्वर ने इस्राएल की ओर दृष्टि की तथा उनकी स्थिति पर
ध्यान दिया.

Exodus 3:1

1 मोशेह अपने ससुर, मिदियान के पुरोहित येथ्रो की भेड़-
बकरियां चराते हुए निर्जन क्षेत्र के पश्चिम में परमेश्वर के पर्वत
होरेब पर पहुंच गए.

2 वहां उन झाड़ियों के बीच में से आग की लौ में याहवेह के
दूत ने उनको दर्शन दिया, उन्होंने देखा कि झाड़ी जल रही थी,
पर भस्म नहीं होती.

3 इसलिये मोशेह ने सोचा, “मैं जाकर जलती हुई झाड़ी को
देखूं कि झाड़ी जलकर भस्म क्यों नहीं होती.”

4 जब याहवेह ने यह देखा कि मोशेह यह देखने आगे बढ़ रहे
हैं, परमेश्वर ने उस झाड़ी से उन्हें बुलाया, “मोशेह, मोशेह!”
उन्होंने उत्तर दिया, “कहिए प्रभु.”

5 याहवेह ने कहा, “पास न आओ, अपनी पैरों से जूते उतार दो,
क्योंकि यह स्थान, जिस पर तुम खड़े हो, पवित्र है.”

6 याहवेह ने यह कहा, “मैं ही तुम्हारे पूर्वजों के पिता अर्थात्
अब्राहाम का, यित्सहाक तथा याकोब का परमेश्वर हूं.” यह सुन
मोशेह ने अपना मुंह छिपा लिया, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर
देखने से डरता था.

7 याहवेह परमेश्वर ने मोशेह से कहा, “मिस्र देश में मेरे लोगों
की हालत मैंने देखी है; उनके कष्टकर मेहनत कराने वालों के
कारण उनका रोना मैंने सुना है और उनके कष्ट को जानता हूं,

8 इसलिये अब मैं उन्हें मिस्रियों के अधिकार से छुड़ाने उतर
आया हूं, ताकि उन्हें उस देश से निकालकर एक उत्तम देश
में ले जाऊं, जहां दूध एवं मधु बहता है, जो कनानियों, हित्तियों,
अमोरियों, परिज़्ज़ियों, हिव्वियों तथा यबूसियों का देश है.

9 अब सुन लो: इस्राएलियों की प्रार्थना मुझ तक पहुंची है;
इसके अलावा मिस्रियों द्वारा उन पर किए जा रहे अत्याचार
भी मैंने देख लिए हैं.

10 इसलिये अब मैं तुम्हें फ़रोह के पास भेजूंगा कि तुम मेरी
प्रजा इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाए.”

11 किंतु मोशेह ने परमेश्वर से कहा, “मैं कौन हूं जो फ़रोह के
पास जाऊं और इस्राएलियों को मिस्र देश से निकालूं?”

12 किंतु परमेश्वर ने मोशेह से कहा, “मैं तुम्हारे साथ साथ रहूंगा,
तथा इस बात का सबूत स्वयं मैं हूं, जब तुम मेरी प्रजा को मिस्र
देश से निकाल चुके होंगे, तब तुम इसी पर्वत पर परमेश्वर की
आराधना करोगे.”

13 यह सुन मोशेह ने परमेश्वर को उत्तर दिया, “यदि मैं
इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहूं, ‘तुम्हारे ही पूर्वजों के
परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है.’ और वे मुझसे पूछें, ‘क्या
है उस परमेश्वर का नाम?’ तो मैं उन्हें क्या नाम बताऊं?”

14 परमेश्वर ने मोशेह को उत्तर दिया, “मैं वही हूं, जो मैं हूं.”
परमेश्वर ने आगे यह कहा, “तुम्हें इस्राएलियों से यह कहना
होगा: जिसका नाम ‘मैं हूं है, उन्हीं ने मुझे भेजा है.’ ”

15 फिर परमेश्वर ने मोशेह से कहा, “तुम इस्राएलियों से यह
कहना ‘याहवेह, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहाम,
यित्सहाक तथा याकोब के परमेश्वर ही ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है.’ “यही मेरा स्थिर नाम है, सब पीढ़ी से पीढ़ी तक स्मरण
रखने का मेरा नाम यही है.

16 “अब तुम जाओ और इस्राएलियों से कहो: ‘याहवेह परमेश्वर
जो तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अब्राहाम, यित्सहाक तथा
याकोब के परमेश्वर जो मुझ पर प्रकट हुए और मुझसे कहा
कि मैंने तुम पर नजर रखी है, और मिस्र देश में तुम्हारे साथ
जो कुछ किया गया है उसको मैंने देखा है.

17 इसलिये मैंने यह वायदा किया कि मैं तुम्हें मिस्र देश में हो
रहे कष्ट से बाहर निकालूंगा और कनानियों, हित्तियों,
अमोरियों, परिज्ज़ीर, हिव्वियों तथा यबूसियों के देश में ले
आऊंगा, जहां दूध एवं मधु की धारा बहती है.’

18 “इस्राएल के प्रधान तुम्हारी बातों को सुनेंगे. तब तुम
इस्राएल के प्रधानों के साथ मिस्र देश के राजा के सामने जाना
और उससे कहना कि याहवेह, जो इब्रियों के परमेश्वर हैं, हम
पर प्रकट हुए हैं. अब हमें तीन दिन की यात्रा की दूरी तक
निर्जन प्रदेश में जाने दे, ताकि हम याहवेह को, जो हमारे
परमेश्वर हैं, बलि अर्पित कर सकें;

19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिस्र देश का राजा तुम्हें तब तक
जाने नहीं देगा, जब तक उसे एक शक्तिशाली हाथ मजबूर न
करे.

20 इसलिये मैं अब अपना हाथ बढ़ाकर मिस्र देश में अलग-
अलग तरीक़ों के चमत्कारी कार्य करके उन पर वार करूंगा,
तब ही वे तुम्हें जाने देंगे.

21 “मैं अपनी इस प्रजा को मिस्रियों से अनुग्रहित करवाऊंगा;
जब तुम वहां से निकलोगे, तुम खाली हाथ न निकलोगे.

22 हर एक इब्री स्त्री अपने पास रह रहे मिस्री पड़ोसी स्त्री से
सोने, चांदी के जेवर तथा वस्त्र मांगकर अपने पुत्र-पुत्रियों को
पहना दे. इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूट लेना.”

Exodus 4:1

Exodus 4:1

1 यह सुन मोशेह ने पूछा, “क्या होगा जब वे मेरी बात का न
विश्वास करें और न मानें, और कहें, ‘यह असंभव है कि याहवेह
तुम पर प्रकट हुए हों?’ ”

2 याहवेह ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम्हारे हाथ में क्या है?” मोशेह
ने उत्तर दिया, “एक लाठी.”

3 याहवेह ने कहा, “उसे भूमि पर डाल दो!” तब मोशेह ने उसे
भूमि पर डाल दी. वह लाठी सांप बन गई, मोशेह डरकर दूर
चले गए.

4 याहवेह ने मोशेह से कहा, “अपना हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ
पकड़ लो!” तब मोशेह ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़
लिया और वह उनके हाथ में आते ही लाठी बन गई!

5 याहवेह ने कहा, “यह देखकर वे विश्वास करेंगे कि तुम्हारे
पूर्वजों के परमेश्वर, अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब के
परमेश्वर ही, तुम पर प्रकट हुए हैं.”

6 फिर याहवेह ने मोशेह से दुबारा कहा “अब अपना हाथ वस्त्र
के भीतर अपनी छाती पर रखो.” मोशेह ने अपना हाथ अपनी
छाती पर रखकर बाहर निकाला, तुरंत उनका हाथ कुष्ठ के
कारण हिम जैसा श्वेत हो गया.

7 तब याहवेह ने उनसे कहा, “अपना हाथ वापस अपनी छाती
पर रखो!” मोशेह ने अपना हाथ वापस अपनी छाती पर रखा;
और जब उन्होंने अपना हाथ छाती से बाहर निकाला, वह
वापस पहले जैसा सही हो गया.

8 “यदि वे तुम्हारी बात का विश्वास न करें या उस पहले वाले
चिन्ह को न मानें, हो सकता है कि वे दूसरे चिन्ह पर विश्वास
कर लें.

9 किंतु यदि वे इन दोनों चिन्हों पर भी विश्वास न करें और
तुम्हारी बात को भी न माने, तब तुम नील नदी से कुछ जल
लेकर सूखी भूमि पर डाल देना; नील नदी से लिया गया वह
जल सूखी भूमि पर डालते ही खून बन जाएगा.”

Exodus 4:1

10 तब मोशेह ने याहवेह से कहा, “याहवेह परमेश्वर, मुझे माफ
करें, मैं अच्छी तरह से बोल नहीं सकता हूं, पहले भी नहीं बोल
सकता था, और न जब से आपने अपने दास से बात की थी,
मेरी ज़ुबान तुतली और धीमी है!”

11 याहवेह ने उनसे पूछा, “किसने मनुष्य का मुंह बनाया है?
कौन उसे गूंगा या बहिरा बनाता है? कौन है जो उसको बोलने
की शक्ति या देखने के लिए रोशनी देता है? क्या मैं, स्वयं
याहवेह नहीं?

12 अब जाओ. मैं, हां, मैं तुम्हें बोलने की मदद करूंगा, और
बताऊंगा, कि तुम्हें क्या बोलना है.”

13 किंतु मोशेह ने मना किया और कहा, “प्रभु, अपने दास को
माफ कर दे, कृपया आप किसी दूसरे को भेज दीजिए.”

14 याहवेह मोशेह से नाराज हुए. उन्होंने मोशेह से कहा,
“तुम्हारा भाई, अहरोन, जो लेवी है, वह तुमसे मिलने यहीं आ
रहा है. तुम्हें देखकर वह खुश हो जाएगा.

15 तुम उसे यह सब बताना और उसके मुंह में बातें डालना
इसके अलावा मैं—हां मैं, तुम दोनों की बोलने में सहायता
करूंगा, मैं तुम दोनों को सही मार्ग पर चलना सिखाऊंगा.

16 वह तुम्हारी ओर से लोगों से बात करेगा व तुम अहरोन के
परमेश्वर समान होंगे.

17 इस लाठी को तुम अपने हाथ में ही रखना, इसी से तुम
अद्भुत काम कर पाओगे.”

18 मोशेह वहां से आकर अपने ससुर येथ्रो से मिलने गए और
उनसे कहा, “कृपया मुझे जाने दीजिए ताकि मैं मिस्र देश में
अपने भाई-बंधुओं से मिलकर पता करूं कि उनमें से कोई
अब भी ज़िंदा है या नहीं.” येथ्रो ने उनसे कहा, “तुम शांति से
जाओ.”

19 मिदियान देश में ही मोशेह को याहवेह की ओर से यह
आदेश मिल चुका था, “मिस्र देश को लौट जाओ, क्योंकि उन
सभी की मृत्यु हो चुकी है, जो तुम्हारी हत्या करना चाहते थे.”

20 फिर मोशेह अपनी पत्नी एवं पुत्रों को गधे पर बैठाकर मिस्र
देश को लौट गए. परमेश्वर के कहे अनुसार मोशेह परमेश्वर
की लाठी अपने हाथ में ली हुई थी.

21 याहवेह ने मोशेह से कहा, “मिस्र देश पहुंचकर तुम वे सभी
चिन्ह फ़रोह को दिखाना जो मैंने तुम्हारे वश में किए हैं, परंतु
मैं फ़रोह के मन को कठोर कर दूंगा, और वह इस्राएलियों को
जाने न देगा.

22 तब तुम फ़रोह से कहना, ‘याहवेह का संदेश यह है:
इस्राएल मेरा पुत्र—मेरा पहलौठा है.

23 यह मेरा आदेश है कि मेरे पुत्र को जाने दो, कि वह मेरी
आराधना कर सके; परंतु तुम उन्हें जाने नहीं दे रहे हो. इस
कारण मैं तुम्हारे बड़े बेटे को मार दूंगा.’ ”

24 मार्ग में सराय पर याहवेह मोशेह के पास आए कि उनको
मार दें.

25 लेकिन ज़ीप्पोराह ने एक नुकीले पत्थर से अपने पुत्र की
खलड़ी को काटकर मोशेह के पैरों पर डाल दिया और कहा,
“आप लहू बहानेवाले मेरे दूल्हा हैं!”

26 इसलिये याहवेह ने मोशेह को नहीं छुआ. यही वह समय था
जब ज़ीप्पोराह ने कहा था, “आप वास्तव में रक्त बहानेवाले
दूल्हा हैं,” क्योंकि उसी समय ख़तना किया था.

27 याहवेह ने अहरोन से कहा, “निर्जन प्रदेश में जाकर मोशेह
से मिलो.” और अहरोन परमेश्वर के पर्वत पर गये और मोशेह
से मिले. अहरोन ने मोशेह का चुंबन किया.

28 मोशेह ने अहरोन को वह सब बातें बताईं जिन्हें कहने के
लिये याहवेह ने उसे भेजा था. मोशेह ने वह अद्भुत चिन्ह भी
बताए, जिन्हें याहवेह ने मोशेह को करने की आज्ञा दी थी.

29 मोशेह तथा अहरोन ने इस्राएलियों के सब प्रधानों को
बुलाया.

30 अहरोन ने उनको वह सब बात बताई, जो याहवेह ने मोशेह
से कही थी. फिर उन्होंने सब लोगों के सामने वह चिन्ह भी
दिखाये.

31 चिन्ह देखकर लोगों ने उनका विश्वास किया और जब उन्हें
यह पता चला कि याहवेह ने इस्राएलियों की ओर कान लगाया
है और उनके दुखों की ओर ध्यान दिया है, तब उन्होंने
झुककर प्रणाम किया और परमेश्वर की आराधना की.

Exodus 5:1

1 इसके बाद मोशेह तथा अहरोन गये व फ़रोह से कहा,
"याहवेह, जो इस्राएल के परमेश्वर हैं, उनका कहना है, 'मेरी
प्रजा को जाने दो कि वे निर्जन प्रदेश में जाकर मेरे सम्मान में
एक उत्सव मना सकें.' "

2 किंतु फ़रोह ने उत्तर दिया, "कौन है याहवेह, जिसकी बात मैं
मानूं और इस्राएल को यहां से जाने दूं? मैं याहवेह को नहीं
जानता और मैं इस्राएल को यहां से जाने नहीं दूंगा."

3 यह सुनकर उन्होंने कहा, "इब्रियों के परमेश्वर ने हमसे कहा
है. इसलिये कृपा कर हमें निर्जन प्रदेश में तीन दिन की यात्रा
पर जाने दीजिए, कि हम याहवेह, अपने परमेश्वर के लिए बलि
चढ़ाएं, ऐसा न हो कि वे हमसे नाराज़ हो जाएं और हम पर
महामारी या तलवार से वार करें."

4 किंतु मिस्र देश के राजा ने उन्हें उत्तर दिया, "मोशेह और
अहरोन, तुम लोग इस प्रजा को उनके काम से दूर क्यों करना
चाह रहे हो? जाओ, तुम सब अपना अपना काम करो!"

5 फ़रोह ने उनसे दुबारा कहा, "सुनो, देश में लोग बहुत बढ़
गये हैं और अब तुम उन्हें उनके काम से अलग करना चाहते
हो!"

6 उसी दिन फ़रोह ने अपने दासों के निरीक्षकों और
अधिकारियों से कहा:

7 "अब तक तुम इन लोगों को ईंट बनाने का सामान, भूसा, सब
कुछ लाकर देते थे. लेकिन अब से ये लोग खुद अपना सामान
लायेंगे;

8 और उतनी ही ईंट बनाएंगे जितनी पहले बनाते थे; इससे कम
नहीं किया जायेगा; ये लोग आलसी हैं, इसलिये यहां से जाने
के लिए पूछ रहे हैं, 'हम अपने परमेश्वर के लिए बलि अर्पित
कर सकें.'

9 इनके काम और बढ़ा दो और उन्हें ज्यादा व्यस्त कर दो,
ताकि उनका ध्यान कहीं ओर न जाए."

10 दास-स्वामियों और निरीक्षकों ने बाहर जाकर लोगों से
कहा, "फ़रोह ने कहा है, 'अब से तुम्हें ईंट बनाने का सामान;
भूसा, नहीं दिया जायेगा.

11 यह तुम्हें ही लाना होगा—और तुम्हारे काम में कोई कमी न
हो.' "

12 इस कारण इस्राएली लोग पूरे मिस्र देश में फैल गये, और
ईंट बनाने का सामान: भूसा, ढूंढने की कोशिश करने लगे.

13 काम करनेवालों की देखरेख करनेवाले उन पर ज्यादा
दबाव डालते हुए कहने लगे, "ईंटों की गिनती में कमी नहीं
होनी चाहिए, पहले जितनी बनाते थे उतनी ही अब भी बनानी
हैं."

14 इस्राएलियों के ऊपर नियुक्त फ़रोह के दास-स्वामियों ने
इस्राएली निरीक्षकों की पिटाई की और उनसे ईंटों की गिनती
पूछते रहे!

15 इन सब सताव के कारण इस्राएलियों का पर्यवेक्षक फ़रोह
के पास जाकर पूछने लगे, "आप सेवकों से ऐसा व्यवहार क्यों
कर रहे हैं?

16 ईंट बनाने का सामान कुछ नहीं दिया जा रहा है, फिर भी
कहा जा रहा है, 'ईंट बनाओ, ईंट बनाओ!' और सेवकों की
पिटाई की जा रही है; जबकि दोष तो आपके लोगों का है."

17 फ़रोह ने उत्तर दिया, "तुम लोग आलसी हो—अत्यंत
आलसी; इसलिये यह कह रहे हो, 'हमें जाने दीजिए कि हम
यहां से जाकर याहवेह को बलि अर्पित करें.'

Exodus 6:1

18 अब जाओ और अपने काम करो. तुम्हें कुछ नहीं दिया
जाएगा, लेकिन जितना तुम पहले बनाते थे उतनी ही ईंट अब
भी बनाओगे."

19 इस्राएली लोग यह समझ गए थे कि उनकी परेशानी बहुत
बढ़ गई है; क्योंकि उन्हें कहा गया था कि रोज जितनी ईंटें
बनाने के लिए बोला गया है, उसमें कोई कमी नहीं आएगी.

20 जब वे फ़रोह के पास से बाहर आए, तो उनको मोशेह एवं
अहरोन मिले, जो वहां उन्हीं के लिए रुके हुए थे.

21 इस्राएलियों ने मोशेह तथा अहरोन से कहा, "अब याहवेह
ही हमें बचा सकते हैं: क्योंकि आप ही के कारण मिस्री हमसे
नफ़रत करने लगे हैं, आप ही ने हमें उनके हाथों में छोड़ दिया
है."

22 तब मोशेह याहवेह के पास गए और उनसे बिनती की,
"आपने अपने लोगों को परेशानी में डालने के लिए मुझे क्यों
चुना है?

23 जब मैंने फ़रोह से याहवेह के बारे में बात की, तब से फ़रोह
ने इस्राएलियों को परेशान करना शुरू किया. इस स्थिति में
आपने अपने लोगों को नहीं बचाया!"

Exodus 6:1

1 इस पर याहवेह ने मोशेह से कहा, "अब तुम देखना कि मैं
फ़रोह के साथ क्या करूंगा; मेरे पराक्रमी हाथ की वजह से
उसे तुम सबको छोड़ना ही पड़ेगा, मेरे पराक्रमी हाथ की वजह
से ही फ़रोह इतना परेशान हो जाएगा, कि वह अपने देश से
सबको निकाल देगा."

2 परमेश्वर ने मोशेह से यह भी कहा, "मैं ही याहवेह हूं;

3 अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब पर मैं ही सर्वसामर्थी
होकर प्रकट हुआ था; परंतु, याहवेह के नाम से कभी अपने
आपको प्रकट नहीं किया.

4 मैंने कनान देश, जहां वे पराये होकर रहते थे, उनको देने का
पक्का वायदा भी किया था.

5 परमेश्वर ने इस्राएलियों का रोना सुना है, क्योंकि मिस्रियों ने
उन्हें बंदी बना रखा है और मुझे मेरा वायदा जो मैं ने
इस्राएलियों से किया था याद है.

6 "इस कारण इस्राएलियों से यह कहना: 'मैं ही याहवेह हूं. मैं
ही तुम्हें मिस्रियों की परेशानी से निकालूंगा. मैं तुम्हें उनके
बंधन से छुड़ाऊंगा. मैं तुम्हें अपनी बाहों में लेकर तथा उन्हें
दंड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा.

7 फिर तुम मेरे लोग ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर. और तुम्हें
तसल्ली मिलेगी कि मैं ही याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं, जिसने
तुम्हें मिस्रियों के दबाव और बोझ से निकाला है.

8 मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा, जिसे देने का शपथ मैंने हाथ
उठाकर अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से ली थी, और वह
देश तुम्हारा ही हो जाएगा. मैं ही वह याहवेह हूं.' "

9 मोशेह ने वह सब बात जो याहवेह ने कही थी, सबको बता
दी, लेकिन इस्राएलियों ने फ़रोह के द्वारा हो रहे अत्याचार के
कारण इन पर विश्वास नहीं किया.

10 याहवेह मोशेह के पास आए और उनसे कहा,

11 "जाकर मिस्र देश के राजा फ़रोह से कहो कि वह
इस्राएलियों को इस देश से बाहर जाने दे."

12 मोशेह ने याहवेह से कहा, "इस्राएलियों ने मेरी बात नहीं
मानी है, तो फ़रोह कैसे मेरी बात मानेगा, मैं तो हकलाता बात
करता हूं."

13 फिर याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन से इस्राएल एवं मिस्र
के राजा फ़रोह के लिए यह आदेश दिया कि इस्राएली मिस्र
देश से निकाले जाएं.

14 इस्राएल के परिवार के मुखिया इस प्रकार थे: इस्राएल का
पहला बेटा रियूबेन. रियूबेन के पुत्र: हनोख, पल्लू, हेज़रोन,
कारमी; ये सभी रियूबेन के परिवार के लोग हैं.

Exodus 7:1

15 शिमओन के पुत्र: येमुएल, यामिन, ओहद, याकिन, ज़ोहार
तथा शाऊल, जो एक कनानी स्त्री से जन्मे थे; ये सभी
शिमओन के परिवार के लोग हैं.

16 लेवी के पुत्रों के नाम: गेरशोन, कोहाथ तथा मेरारी. (लेवी
की कुल आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई.)

17 गेरशोन के पुत्र उनके परिवारों के अनुसार: लिबनी और
शिमेई.

18 कोहाथ के पुत्र: अमराम, इज़हार, हेब्रोन तथा उज्ज़िएल.
(कोहाथ की कुल आयु एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई.)

19 मेरारी के पुत्र: माहली तथा मूशी. ये उनकी पीढ़ियों के
अनुसार लेवियों के परिवार हैं.

20 अमराम ने अपने पिता की बहन से विवाह किया, जिससे
अहरोन एवं मोशेह पैदा हुए. (अमराम की कुल आयु एक सौ
सैंतीस वर्ष की हुई.)

21 इज़हार के पुत्र: कोराह, नेफ़ेग तथा ज़ीकरी.

22 उज्ज़िएल के पुत्र: मिषाएल, एलज़ाफन तथा सिथरी.

23 अहरोन ने अम्मीनादाब की पुत्री, नाहशोन की बहन
एलिशेबा से विवाह किया, जिसने नादाब, अबीहू, एलिएज़र
तथा इथामार को जन्म दिया.

24 कोराह के पुत्र: अस्सिर, एलकाना तथा अबीयासाफ़.
कोराह के वंशजों के परिवार ये हैं.

25 अहरोन के पुत्र एलिएज़र ने पुतिएल की पुत्री से विवाह
किया, जिससे फिनिहास पैदा हुए. ये लेवी वंश के कुलों के
मुखिया थे.

26 ये अहरोन तथा मोशेह थे, जिन्हें याहवेह द्वारा कहा गया था,
“इस्राएलियों को अपनी समझदारी से मिस्र देश से निकाल
लाओ.”

27 मोशेह और अहरोन, जो इस्राएलियों को मिस्र देश से
निकालने के लिए फ़रोह से बार-बार कहते रहे.

28 जिस दिन याहवेह ने मिस्र देश में मोशेह से बात की,

29 और कहा, “मैं ही याहवेह हूं. और जो कुछ मैं तुमसे कहता
हूं, वह सब तुम मिस्र देश के राजा फ़रोह से कहना.”

30 लेकिन मोशेह ने याहवेह से कहा, “मैं अच्छी तरह बोल नहीं
सकता; फ़रोह मेरी बात क्यों सुनेगा?”

Exodus 7:1

1 यह सुनकर याहवेह ने मोशेह से कहा, “अब देखना कि मैं
तुम्हें कैसे फ़रोह के सामने ईश्वर-समान बना देता हूं. और
तुम्हारा भाई अहरोन तुम्हारा प्रवक्ता होगा.

2 जो जो बात मैं तुम्हें बताऊंगा, वह सब बात तुम अहरोन से
कहना और अहरोन वही सब फ़रोह से कह देगा, तब फ़रोह
इस्राएलियों को अपने देश से जाने देगा.

3 लेकिन मैं फ़रोह के मन को कठोर बना दूंगा, ताकि मैं मिस्र
देश में और ज्यादा चिन्ह और अद्भुत काम कर सकूं.

4 फिर भी फ़रोह उन सब बातों पर ध्यान नहीं देगा. तब मैं मिस्र
देश को बड़ा कष्ट और दंड दूंगा और मिस्र से इस्राएल के लोगों
को बाहर निकालूंगा.

5 मिस्र के लोग यह जान जाएंगे कि मैं ही याहवेह हूं, जिसने
मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाया है और मैंने ही इस्राएलियों
को उसके बीच से निकाला है.”

6 तब मोशेह एवं अहरोन ने ऐसा ही किया—जैसा याहवेह ने
उनसे कहा था.

7 जब मोशेह और अहरोन फ़रोह के पास गए, तब मोशेह की
उम्र अस्सी वर्ष तथा अहरोन की तेरासी वर्ष थी.

8 तब याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन को यह आदेश दिया,

9 "जब फ़रोह तुमसे चमत्कार दिखाने को कहे, तब तुम अहरोन से कहना, 'अपनी लाठी फ़रोह के सामने डाल दे, ताकि वह सांप बन जाए.' "

10 इसलिये मोशेह तथा अहरोन फ़रोह के पास गए और ठीक वही किया, जो याहवेह ने कहा था. अहरोन ने अपनी लाठी फ़रोह एवं उसके सेवकों के सामने डाल दी और वह सांप बन गई.

11 यह देख फ़रोह ने भी पंडितों तथा ओझों को बुलवाया और मिस्र देश के जादूगरों ने भी वैसा ही किया.

12 उन सबने अपनी-अपनी लाठी फेंकी जो सांप बन गईं. पर अहरोन की लाठी ने उन सभी की लाठियों को निगल लिया.

13 इससे फ़रोह का मन और कठोर हो गया और उसने उनकी बात नहीं मानी, जैसा ही याहवेह ने कहा था.

14 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह का मन बहुत कठोर हो गया है, वह लोगों को जाने नहीं देगा.

15 सुबह जब फ़रोह नदी की ओर जाएगा, तब तुम नदी पर उनसे मिलना और तुम्हारे हाथ में वही लाठी रखना, जो सांप बन गई थी.

16 तुम फ़रोह से यह कहना 'याहवेह ने, जो इब्रियों के परमेश्वर हैं, मुझे तुमको यह कहने के लिए भेजा है कि मेरे लोगों को जाने दो कि वे निर्जन प्रदेश में जाकर मेरी आराधना कर सकें; लेकिन अभी तक तुमने यह बात नहीं मानी है.

17 याहवेह ने यह कहा है कि तुम जान जाओगे कि मैं ही याहवेह हूं, तुम देखना कि नदी के जल पर मैं इस लाठी से, जो मेरे हाथ में है, मारूंगा और पानी खून बन जाएगा.

18 और उसमें सब मछलियां मर जायेंगी और नदी से बदबू आएगी और मिस्र के लोग नील नदी से पानी नहीं पी पायेंगे.' "

19 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "अहरोन से यह कहो: 'अपनी लाठी मिस्र देश की नदियों, नालों, तालाबों और जल-कुंडों की ओर बढ़ाए ताकि सारा पानी लहू बन जाये—चाहे पानी बर्तन में हो या पत्थर के पात्र में.' "

20 मोशेह तथा अहरोन ने वैसा ही किया, जैसा याहवेह ने उनसे कहा. उन्होंने लाठी उठाई और नील नदी के जल पर मारा. फ़रोह एवं उसके सेवक यह सब देख रहे थे. एकदम नील नदी का पूरा पानी लहू बन गया.

21 नील नदी में जो मछलियां थी, मर गईं. नदी में इतनी दुर्गंध थी कि मिस्र के लोग नील नदी का पानी नहीं पी सकते थे. पूरे मिस्र देश में रक्त फैल गया.

22 अपने तंत्र मंत्र से मिस्र के जादूगरों ने भी यही कर दिखाया; तौभी फ़रोह का मन और कठोर हो गया और उसने उनकी बात नहीं मानी.

23 फ़रोह पर इन सब बातों का कोई असर नहीं हुआ और वह अपने घर चला गया.

24 मिस्र के लोग पीने के पानी के लिए नील नदी के पास गड्ढे खोदने लगे, क्योंकि नील नदी का पानी पीने योग्य नहीं रहा था.

25 याहवेह द्वारा नील नदी के पानी को लहू बनाए सात दिन हो चुके थे.

Exodus 8:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह से कहो कि, याहवेह की ओर से यह आदेश है, 'मेरे लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी वंदना कर सकें.

2 यदि तुम उन्हें जाने न दोगे, तो पूरा देश मेंढकों से भर जायेगा.

3 नील नदी मेंढकों से भर जाएगी, मेंढक नदी में से निकलकर तुम्हारे घरों में, तुम्हारे बिछौनों पर, तुम्हारे सेवकों के घरों में और पूरी प्रजा के घरों में भी भर जाएंगे—यहां तक कि तुम्हारे तंदूरों में तथा तुम्हारे आटा गूंथने के बर्तनों में भी भर जायेंगे!

4 तुम पर, तुम्हारी प्रजा पर तथा तुम्हारे सभी सेवकों पर मेढक चढ़ जायेंगे.' "

Exodus 8:1

5 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “अहरोन से कहो, ‘अपने
हाथ में वह लाठी लेकर उसे नदियों, तालाबों तथा नालों की
ओर बढ़ाए, ताकि मेंढक मिस्र देश में भर जाएं.’ ”

6 तब अहरोन ने यही किया. मेंढक ऊपर तक आ गए तथा
समस्त मिस्र देश पर छा गए.

7 जादूगरों ने भी अपनी गुप्त कला से वही कर दिखाया, वे भी
मिस्र देश में मेंढक ले आए.

8 फ़रोह ने मोशेह तथा अहरोन को बुलवाया और उनसे कहा,
“याहवेह से बिनती करो कि वह इन मेंढकों को मुझसे तथा
मेरी प्रजा से दूर कर दें, तब मैं तुम लोगों को यहां से जाने दूंगा,
ताकि याहवेह को बलि चढ़ा सको.”

9 मोशेह ने फ़रोह को उत्तर दिया, “तुम ही मुझे बताओ कि
कब मैं आपके लिये प्रार्थना करूं कि ये मेंढक तुम्हारे तथा
तुम्हारे घरों से निकल जाएं और सिर्फ नील नदी में रह जाएं?”

10 फ़रोह ने जवाब दिया, “कल प्रार्थना करना.” मोशेह बोले,
“वैसा ही होगा, जैसा तुमने कहा है, ताकि तुमको यह मालूम
हो जाए, कि याहवेह, हमारे परमेश्वर, के तुल्य दूसरा कोई नहीं
है.

11 मेंढक तुमसे, तुम्हारे घरों से, तुम्हारे सेवकों तथा तुम्हारी
प्रजा से दूर कर दिए जाएंगे और केवल नील नदी में दिखेंगे.”

12 यह कहकर मोशेह तथा अहरोन फ़रोह के पास से चले गए.
फिर मोशेह ने मेढकों के जाने के बारे में जैसा फ़रोह ने कहा
था, याहवेह से प्रार्थना की.

13 याहवेह ने मोशेह की बात मानी, और घरों से, महल तथा
खेतों के सब मेंढक मर गये.

14 तब लोगों ने मरे हुए सब मेंढकों को एक तरफ इकट्ठा किया,
जिससे पूरे देश में बदबू फैल गई.

15 जैसे ही फ़रोह ने यह देखा कि मेंढक सब मर गये और
परेशानी सब दूर हो गई, उसने अपना मन फिर कठोर कर
लिया और उनकी बात नहीं सुनी.

16 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “अहरोन से कहो कि वह
अपनी लाठी बढ़ाए तथा ज़मीन पर मारे, ताकि पूरा मिस्र देश
पिस्सुओं से भर जायें.”

17 अहरोन ने लाठी को ज़मीन पर मारा, जिससे पिस्सू मनुष्यों
एवं पशुओं पर छा गए और पूरे मिस्र देश की भूमि की धूल
पिस्सू बन गई.

18 ऐसा ही जादू-टोना दिखाने वाले जादूगरों ने भी करने की
कोशिश की, लेकिन नहीं कर पाये; तब मनुष्यों एवं पशुओं को
पिस्सू ने परेशान कर दिया.

19 तब जादूगरों ने फ़रोह से कहा “यह तो सचमुच परमेश्वर का
काम है!” इस पर फ़रोह का मन और कठोर हो गया, जैसा
याहवेह ने कहा था, इसलिये उसने उनकी ओर ध्यान नहीं
दिया.

20 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “सुबह जल्दी उठकर
फ़रोह से मिलने जाना जब वह नदी की ओर जाए तब उससे
कहना, ‘याहवेह का आदेश है: मेरे लोगों को जाने दे, कि वे
मेरी आराधना करें.

21 अगर तुम मेरी प्रजा को जाने न दो, तो मैं तुम पर, तुम्हारे
सेवकों, तुम्हारी प्रजा तथा तुम्हारे घरों में कीटों के झुंड को
भेजूंगा. मिस्र के लोगों का घर और पूरा मिस्र कीटों से भर
जाएगा.

22 “ ‘लेकिन गोशेन देश, जहां मेरी प्रजा रहती है; वहां कीट
नहीं होगा, ताकि तुम्हें यह मालूम हो जाए कि मैं, याहवेह हूं,
और इस देश में मेरा अधिकार है.

23 मैं कल अपनी प्रजा तथा तुम्हारी प्रजा को अलग कर दूंगा.’
”

24 अगले दिन याहवेह ने वही किया. फ़रोह के राजमहल में
तथा उसके सेवकों के घरों को, कीटों से भर दिया. पूरा मिस्र
देश कीटों के कारण नाश हो गया.

Exodus 9:1

25 फ़रोह ने मोशेह तथा अहरोन को बुलवाया और उनसे कहा
कि तुम लोग जाओ और "अपने परमेश्वर को बलि चढ़ाओ,
लेकिन मिस्र में ही रहना इससे बाहर मत जाना."

26 लेकिन मोशेह ने जवाब दिया, "हम, याहवेह अपने परमेश्वर
को बलि मिस्र में रहकर नहीं कर सकते हैं. यदि हम मिस्रियों
के सामने बलि अर्पण करेंगे, तो क्या वे हमारा पथराव न कर
देंगे?

27 हमें तो निर्जन देश में तीन दिन की दूरी पर जाना ही होगा,
कि हम वहां याहवेह, अपने परमेश्वर, को उन्हीं के आदेश के
अनुसार बलि अर्पित कर सकें."

28 फ़रोह ने उत्तर दिया, "ठीक है, मैं तुम्हें जाने देता हूं, कि तुम
निर्जन प्रदेश में जाकर याहवेह, अपने परमेश्वर को बलि
चढ़ाओ, लेकिन बहुत दूर न जाना. वहां मेरे लिए भी प्रार्थना
करना."

29 यह सुन मोशेह ने उत्तर दिया, "अब मैं यहां से जा रहा हूं.
और मैं याहवेह से बिनती करूंगा, कि कीटों को फ़रोह, उसके
सेवकों तथा उसकी प्रजा से दूर कर दें; ऐसा न हो कि फ़रोह
वापस चालाकी से प्रजा को रोकने की कोशिश करे."

30 तब मोशेह फ़रोह के पास से चले गए और याहवेह से बिनती
की और

31 याहवेह ने कीटों के समूहों को फ़रोह, उसके सेवकों तथा
उसकी प्रजा से हटा लिया, और एक भी न बचा.

32 फिर फ़रोह ने अपना मन कठोर कर लिया और प्रजा को
जाने नहीं दिया.

Exodus 9:1

1 फिर परमेश्वर ने मोशेह से कहा, "जाकर फ़रोह को यह बता
दो, 'इब्रियों के परमेश्वर याहवेह ने यह कहा है, "मेरी प्रजा को
यहां से जाने दो, ताकि वे मेरी वंदना कर सकें."

2 यदि तुम उन्हें जाने नहीं दोगे

3 तो याहवेह का हाथ तुम्हारे पशुओं, घोड़ों, गधों, ऊंटों, गायों
एवं भेड़-बकरियों पर बढ़ेगा और बड़ी महामारी फैल जायेगी.

4 याहवेह मिस्रियों के पशुओं में महामारी फैलायेंगे, लेकिन
इस्राएल के पशुओं को कुछ नहीं होगा—जिसके कारण
इस्राएल वंश के एक भी पशु की मृत्यु न होगी.' "

5 याहवेह ने एक समय ठहराकर यह कह दिया: "अगले दिन
याहवेह इस देश में महामारी फैलायेंगे."

6 तब याहवेह ने अगले दिन वही किया—मिस्र देश के सभी
पशु मर गए; किंतु इस्राएल वंश में एक भी पशु नहीं मरा.

7 फ़रोह ने सच्चाई जानने के लिए सेवक को भेजा. तब उन्होंने
देखा कि इस्राएल में एक भी पशु की मृत्यु नहीं हुई थी. यह
देख फ़रोह का मन और कठोर हो गया, उसने प्रजा को जाने
नहीं दिया.

8 फिर याहवेह ने मोशेह और अहरोन से कहा, "अपने-अपने
हाथों में मुट्ठी भरके राख लेना, और उस राख को फ़रोह के
सामने आकाश की ओर फेंकना.

9 यह राख पूरे देश पर रेत में बदल जाएगी, जिससे पूरे
मिस्रवासियों एवं पशुओं के शरीर पर फोड़े फुंसी हो जायेंगे."

10 इसलिये मोशेह तथा अहरोन ने भट्ठे से राख उठाई और
फ़रोह के सामने गए. मोशेह ने राख को आकाश की ओर
उछाला, जिसके कारण मनुष्यों और पशुओं के शरीर पर
फोड़े निकल आए.

11 इन फोड़ों के कारण जादूगर मोशेह के सामने खड़े न रह
सके, क्योंकि फोड़े न केवल मिस्रवासियों की देह पर निकल
आए थे किंतु जादूगरों के शरीर भी फोड़े से भर गये थे!

12 याहवेह ने फ़रोह के मन को कठोर बना दिया, और फ़रोह
ने मोशेह की बात नहीं मानी; यह बात याहवेह ने मोशेह से
पहले ही कह दी थी.

13 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "सुबह जल्दी उठकर फ़रोह
के पास जाकर यह कहना, 'याहवेह, इब्रियों के परमेश्वर की

Exodus 9:1

यह आज्ञा है कि मेरी प्रजा को यहां से जाने दो, ताकि वे मेरी वंदना कर सकें.

14 क्योंकि इस बार मैं और ज्यादा परेशानियां तुम पर, तुम्हारे सेवकों पर तथा तुम्हारी प्रजा पर डाल दूंगा, जिससे तुम्हें यह मालूम हो जाए कि पूरे पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई भी नहीं है.

15 क्योंकि अब तक मैं अपना हाथ बढ़ाकर तुम और तुम्हारी प्रजा पर बहुत बड़ी विपत्तियां डालकर तुम्हें मिटा देता.

16 तुम्हारी उत्पत्ति के पीछे मेरा एकमात्र उद्देश्य था कि तुमको मेरे प्रताप का प्रदर्शन करूं, और सारी पृथ्वी में मेरे नाम का प्रचार हो.

17 लेकिन तुमने मेरी प्रजा को यहां से जाने की अनुमति न देकर अपने आपको महान समझा है!

18 अब देखना, कल इसी समय मैं बड़े-बड़े ओले बरसाऊंगा—ऐसा मिस्र देश में आज तक नहीं देखा गया है,

19 इसलिये अब सबको बता दो कि मैदानों से अपने पशुओं को तथा जो कुछ इस समय खेतों में रखा हुआ है, सुरक्षित स्थान पर ले जाएं. अगर कोई मनुष्य या पशु, ओले गिरने से पहले अपने घरों में न पहुंचें, वे अवश्य मर जायेंगे.' "

20 तब फ़रोह के उन सेवकों ने, जिन्होंने याहवेह की बात पर ध्यान दिया वे सब जल्दी अपने-अपने लोगों एवं पशुओं को लेकर घर चले गये

21 और जिन्होंने उस बात पर ध्यान नहीं दिया, वे सेवक एवं उनके पशु मैदान में ही रह गए.

22 याहवेह ने मोशेह को आदेश दिया, "अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाओ, ताकि पूरे मिस्र देश पर, मनुष्य एवं पशु, और मैदान के हर एक वृक्ष पर ओले गिरना शुरू हो जाएं."

23 मोशेह ने अपनी लाठी आकाश की ओर बढ़ाई, और याहवेह ने आकाश से बादल गरजाये और ओले बरसाए और ओलों के साथ बिजली भी पृथ्वी पर गिरने लगी.

24 ओलों के साथ बिजली भी गिर रही थी; ऐसी दशा मिस्र देश में इससे पहले कभी नहीं हुई थी.

25 ओले उन सब पर गिरे, जो मैदानों में थे—ओले पौधे तथा वृक्ष पर भी गिरे जो पूरे नष्ट हो गये.

26 केवल गोशेन प्रदेश में जहां इस्राएली रहते थे, ओले नहीं गिरे.

27 तब फ़रोह ने मोशेह एवं अहरोन को बुलवाया और उनके सामने मान लिया: "मैंने पाप किया है, याहवेह ही महान परमेश्वर हैं, मैं तथा मेरी प्रजा अधर्मी है.

28 तुम याहवेह से बिनती करो! बहुत हो चुका गरजना और ओले बरसना. मैं तुमको यहां से जाने दूंगा, तुम यहां मत रुको."

29 मोशेह ने फ़रोह को उत्तर दिया, "जैसे ही मैं नगर से बाहर निकलूंगा, मैं अपनी भुजाएं याहवेह की ओर उठाऊंगा; तब आग तथा ओले गिरना रुक जाएंगे, तब तुमको मालूम हो जाएगा कि पृथ्वी पर याहवेह का ही अधिकार है.

30 लेकिन तुम तथा तुम्हारे सेवकों के विषय में मुझे मालूम है कि अब भी तुममें याहवेह परमेश्वर के प्रति भक्ति नहीं है."

31 (इस समय सन एवं जौ की फसल नष्ट हो चुकी थी, क्योंकि जौ की बालें आ चुकी थीं तथा सन में कलियां खिल रही थीं;

32 लेकिन गेहूं नष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि उसका उपज देर से होता है.)

33 तब मोशेह फ़रोह के पास से निकलकर नगर के बाहर चले गए और उन्होंने याहवेह की ओर अपने हाथ उठाए; और तुरंत बादल गरजना एवं ओला गिरना रुक गया, भूमि पर हो रही वर्षा भी रुक गई.

34 जैसे ही फ़रोह ने देखा कि ओले गिरना तथा बादल गरजना रुक गया, उन्होंने पाप किया और उसने और उसके सेवकों ने अपना मन कठोर कर लिया.

[35] कठोर मन से फ़रोह ने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया— मोशेह को याहवेह ने पहले ही बता दिया था कि फ़रोह किस प्रकार अपने मन को फिर कठोर करेंगे.

Exodus 10:1

[1] फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह के पास जाओ. मैंने ही उसका तथा उसके सेवकों का मन कठोर कर दिया है, ताकि मैं उनके बीच में अपने चिन्ह को दिखांऊ,

[2] कि तुम खुद अपने पुत्र एवं पोतों से कह सको कि मैंने किस तरह से मिस्रवासियों को अपमानित करते हुए उनके बीच अपने चिन्ह दिखाए ताकि तुम लोग सुरक्षित मिस्र से निकल सको और समझ सको कि मैं ही याहवेह हूं."

[3] मोशेह एवं अहरोन ने फ़रोह के पास जाकर उससे यह कहा, "याहवेह, जो इब्रियों के परमेश्वर हैं, तुमसे कहते हैं, 'तुम कब तक परमेश्वर के सामने अपने आपको नम्र नहीं करोगे? मेरी प्रजा को यहां से जाने दो, ताकि वे मेरी आराधना कर सकें.

[4] और यदि तुम मेरी प्रजा को जाने नहीं दोगे तो, कल मैं तुम्हारे देश में टिड्डियां ले आऊंगा.

[5] वे देश में ऐसे भर जाएंगी कि किसी को भी भूमि दिखाई न देगी. ये टिड्डियां वह सब नष्ट कर देंगी, जो कुछ ओलों के गिरने से बचा हुआ है और मैदान में लगे हर पेड़ को भी सूखा देंगी.

[6] फिर तुम्हारे तथा तुम्हारे सेवकों तथा पूरे मिस्रवासियों के घरों में टिड्डियां भर जाएंगी. ऐसा तो तुम्हारे पिता ने और उनके पूर्वजों ने जन्म से लेकर अब तक कभी नहीं देखा होगा.' " यह कहने के बाद मोशेह फ़रोह के पास से चले गए.

[7] फ़रोह के मंत्रियों ने फ़रोह से पूछा, "और कब तक यह व्यक्ति हमारे लिए परेशानी का कारण बनेगा? इन्हें जाने दो ताकि वे याहवेह, अपने परमेश्वर की आराधना कर सकें. क्या आपको नहीं मालूम कि मिस्र देश नष्ट हो चुका है?"

[8] मोशेह तथा अहरोन को फ़रोह के पास लाया गया. फ़रोह ने उनसे कहा, "जाओ और याहवेह, अपने परमेश्वर की आराधना करो! कौन-कौन हैं, जो तुम्हारे साथ जाएंगे?"

[9] मोशेह ने उत्तर दिया, "हमारे साथ हमारे बालक और हमारे वृद्ध, हमारे पुत्र-पुत्रियां, हमारे पशु एवं भेड़-बकरियां सब जायेंगे, क्योंकि हम याहवेह के सम्मान में उत्सव मनाएंगे."

[10] फ़रोह ने कहा, "याहवेह तुम्हारे साथ रहें, लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हारे मन में कोई और योजना छिपी हुई है!

[11] केवल पुरुषों को ही लेकर याहवेह की वंदना करो, क्योंकि यही तुम्हारी इच्छा है." ऐसा कहकर वहां से मोशेह तथा अहरोन को उनके सामने से निकाल दिया.

[12] तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "मिस्र की ओर अपना हाथ बढ़ाओ कि टिड्डियां आकर मिस्र देश पर छा जाएं तथा हर पौधे को नष्ट कर दें."

[13] तब मोशेह ने अपनी लाठी मिस्र देश की ओर बढ़ाई तब याहवेह ने मिस्र देश में पूरा दिन और पूरी रात तेज हवा चलाई. और सुबह हवा के साथ टिड्डियां भी आईं.

[14] टिड्डियां पूरे मिस्र देश पर फैल गईं, वे असंख्य थीं. इससे पहले इतनी टिड्डियां कभी देखी नहीं गई थीं. और न ही इसके बाद ये ऐसी बड़ी संख्या में देखी जाएंगी.

[15] इन टिड्डियों ने पूरे देश की धरती को भर दिया था, जिससे देश में अंधेरा सा हो गया. इन्होंने देश के हर पौधे को तथा सभी वृक्षों के फलों को, जो ओलों से बचे थे नष्ट कर दिया. इस कारण पूरे मिस्र देश में वृक्षों तथा मैदान के पौधों में कोई भी फल फूल न बचे.

[16] तब फ़रोह ने जल्दी से मोशेह तथा अहरोन को बुलवाया और उनसे कहा, "मैंने याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर तथा तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है.

[17] इसलिये कृपा कर मेरे पाप क्षमा कर दो और याहवेह, अपने परमेश्वर से विनती करो, कि वह इस मृत्यु को मुझसे दूर कर दें."

[18] मोशेह फ़रोह के पास से बाहर चले गए और उन्होंने याहवेह से विनती की,

19 तब याहवेह ने हवा की दिशा को बदलकर, टिड्डियों को
लाल सागर में डाल दिया—तब पूरे देश में एक भी टिड्डी नहीं
बची.

20 किंतु याहवेह ने फ़रोह के मन को कठोर बना दिया. उसने
इस्राएलियों को जाने नहीं दिया.

21 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "अपना हाथ आकाश की
ओर बढ़ाओ, ताकि पूरे मिस्र देश पर अंधेरा छा जाए—इतना
गहरा अंधकार कि उसे स्पर्श कर सके."

22 तब मोशेह ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया और पूरे
मिस्र देश में तीन दिनों के लिए घोर अंधकार छाया रहा.

23 कोई भी एक दूसरे को देख नहीं पाया और कोई भी अपनी
जगह से तीन दिन तक नहीं हटा, लेकिन पूरे इस्राएलियों के
घर में रोशनी थी.

24 फ़रोह ने मोशेह को बुलवाया और कहा, "जाओ, याहवेह
की वंदना करो! लेकिन अपने पशुओं और भेड़-बकरी यहीं
छोड़ जाना. तुम्हारे बालक भी तुम्हारे साथ जा सकते हैं."

25 किंतु मोशेह ने उत्तर दिया, "हमें बलि तथा होमबलि के लिए
पशु और भेड़-बकरी ले जाना ज़रूरी है ताकि हम याहवेह
अपने परमेश्वर को बलि चढ़ा सकें.

26 इसलिये हमारे पशु भी हमारे ही साथ जाएंगे; हम कुछ भी
यहां नहीं छोड़ेंगे. जब तक हम अपनी जगह नहीं पहुंच जाते,
हमें नहीं मालूम कि हमें याहवेह हमारे परमेश्वर की आराधना
किस प्रकार करनी होगी."

27 किंतु याहवेह ने फ़रोह का मन कठोर बना दिया. वह उन्हें
जाने नहीं दे रहा था.

28 फ़रोह ने उनसे कहा, "दूर हो जाओ मेरे सामने से! फिर मत
आना मेरे सामने! जिस दिन तुम मेरा मुंह देखोगे, तुम अवश्य
मर जाओगे!"

29 मोशेह ने जवाब दिया, "ठीक कहा तुमने! अब मैं तुम्हारा
मुंह कभी न देखूंगा!"

Exodus 11:1

1 याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह तथा मिस्र पर मैं एक और
कष्ट भेजूंगा. इसके बाद वह तुम्हें यहां से जाने देगा; और वह
ज़रूर तुम्हें यहां से निकालेगा.

2 इस्राएलियों से यह कहो कि प्रत्येक पुरुष एवं स्त्री अपने-
अपने पड़ोसी से सोना एवं चांदी मांग ले."

3 याहवेह ही ने मिस्रियों को इस्राएलियों के प्रति दयालु बना
दिया. इसके अलावा मोशेह भी मिस्र देश में फ़रोह के सेवकों
तथा मिस्री लोगों में महान बने थे.

4 मोशेह ने कहा, "याहवेह का संदेश है, 'आधी रात को मैं मिस्र
देश के बीच में से निकल जाऊंगा.

5 और मिस्र देश के हर पहले बेटे की मृत्यु हो जाएगी. फ़रोह
के पहले बेटे से लेकर चक्की पीसने वाली का पहला बेटा और
सब पशुओं का भी पहिलौठा मर जाएगा.

6 तब पूरे देश में दुःख का माहौल होगा; ऐसा न तो कभी इससे
पहले हुआ, न ऐसा फिर कभी होगा.

7 पर इस्राएली मनुष्यों पर और उनके किसी पशु पर कोई
कुत्ता न भौंकेगा ताकि यह समझ आ जाये कि यह याहवेह ही
हैं जिन्होंने इस्राएलियों तथा मिस्रियों के बीच अंतर रखा है.'

8 तुम्हारे ये सभी सेवक मेरे पास आकर मुझे प्रणाम करेंगे और
कहेंगे, आप चले जाइए और अपने सब लोगों को भी अपने
साथ ले जाइए!" यह कहते हुए मोशेह बहुत गुस्से में फ़रोह के
पास से निकल गए.

9 इसके बाद याहवेह ने मोशेह से कहा, "फ़रोह तो अब भी
तुम्हारी न सुनेगा, क्योंकि मैं मिस्र देश में और अद्भुत काम
दिखाना चाहता हूं."

10 मोशेह तथा अहरोन ने सभी चमत्कार फ़रोह को दिखाए.
फिर भी याहवेह ने फ़रोह का मन कठोर बनाए रखा, और
फ़रोह इस्राएलियों को मिस्र देश से निकलने के लिए रोकता
रहा.

Exodus 12:1

Exodus 12:1

1 याहवेह ने मोशेह तथा अहरोन से कहा,

2 “तुम्हारे लिए यह महीना साल का पहला महीना होगा.

3 सब इस्राएलियों को बता दो कि इस महीने की दस तारीख को अपने-अपने परिवार के लिए एक-एक मेमना चुनकर अलग कर ले.

4 यदि एक परिवार एक पूरे जानवर को खाने के लिए बहुत छोटा है, तो उसे पड़ोस में दूसरे परिवार के साथ विभाग करना. प्रत्येक परिवार के आकार के अनुसार जानवर को विभाजित करें जितना वे खा सकते हैं.

5 मेमना एक साल का नर हो, मेमने में कोई दोष न हो और यह भेड़ में से या बकरियों में से लिया जा सकता है.

6 लेकिन इसी महीने के चौदहवें दिन तक मेमने का खास ध्यान रखना. फिर पूरे इस्राएली लोग मिलकर सूरज ढलने पर इसे बलि चढ़ाना.

7 वे जिस घर में मेमने को खाएंगे, उस घर के दरवाजे के दोनों तरफ और दरवाजे के माथे पर मेमने का खून लगाएं.

8 ज़रूरी है कि इस मेमने का मांस उसी रात को आग में भूनकर, बिना खमीर की रोटी और कड़वी सब्जी के साथ खाएं.

9 यह मांस न तो कच्चा खाएं और न उबाल कर, इसको आग में भूनकर इसके सिर, पांव तथा अंतड़ियां खानी है.

10 इसमें से दूसरे दिन के लिए कुछ भी नहीं बचाना और अगर बच जाता है तो उसे पूरा आग में जलाकर राख कर देना.

11 इसको खाते समय कमर पर कमरबंध बांधे, पांवों में जूते पहनकर हाथ में अपनी लाठी लेकर जल्दी से खाना; यही याहवेह का फ़सह पर्व होगा.

12 “क्योंकि उस रात मैं मिस्र देश में से होकर निकलूंगा और मिस्र देश की सभी पहली संतान—चाहे मनुष्य का हो या पशु का, सबको मार दूंगा; मैं ही याहवेह हूं और मैं मिस्र देश के सब देवताओं का भी न्याय करूंगा.

13 जिस घर के दरवाजे पर मेमने के रक्त का निशान होगा उस घर को मैं छोड़ दूंगा किंतु मिस्र का नाश होगा.

14 “याद रहे कि यह दिन तुम्हारे लिए एक यादगार दिन हो. यह दिन याहवेह के उत्सव के रूप में मनाया करना और—यह तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ियों के लिए हमेशा मनाए जाते रहने के लिए एक नियम बनाया जाए.

15 पहले दिन सब अपने-अपने घर से खमीर निकालकर फेंक देना और सात दिन तक बिना खमीर की रोटी खाना. अगर कोई इन सात दिनों में खमीर वाली रोटी खाएगा तो उसे इस्राएलियों के बीच से काट दिया जाएगा.

16 पहले और सातवें दिन पवित्र सभा होगी. इन दोनों दिनों में कोई भी काम न करना; केवल वे ही व्यक्ति काम करें जिन्हें खाना बनाना हो.

17 “तुम्हारा अखमीरी रोटी का पर्व मनाना ज़रूरी है; क्योंकि यही वह दिन है, जिस दिन मैंने तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला. यह एक यादगार दिन बनकर इन सब बातों को याद करते हुए यह उत्सव पीढ़ी से पीढ़ी तक मनाया जाए.

18 पहले महीने की चौदहवी तारीख को शाम को बिना खमीर रोटी खाना होगा और यही खाना इक्कीसवीं तारीख की शाम तक खाना.

19 इन सात दिनों में तुम्हारे घर में खमीर न रखना. और यदि कोई व्यक्ति खमीर वाला भोजन करता हुआ पाया गया, तो उसे इस्राएली प्रजा में से मिटा दिया जाएगा—चाहे वह विदेशी हो या स्वदेशी.

20 किसी भी प्रकार का खमीर वाला भोजन करना मना है. अपने घरों में बिना खमीर की रोटी ही खाना.”

21 तब मोशेह ने इस्राएलियों के सब प्रधानों को बुलाया और उनसे कहा, “जाकर अपने-अपने परिवारों के अनुसार एक-

एक मेमना अलग कर लो, और फ़सह के मेमने की बलि करना.

22 जूफ़ा नामक झाड़ी का गुच्छा लेकर उसे मेमने के रक्त में
डुबोना, और दरवाजे के दोनों तरफ तथा ऊपर लगाना. तुममें
से कोई भी सुबह तक इस दरवाजे से बाहर नहीं निकले,

23 क्योंकि याहवेह उस समय मिस्रियों को मारते हुए निकल
रहे होंगे. जिस घर के दरवाजे के दोनों तरफ और माथे पर
मेमने का खून दिखेगा, उसे छोड़ते हुए आगे निकल जाएंगे
और अंदर आकर किसी को नहीं मारेंगे.

24 “हमेशा तुम तथा तुम्हारी संतान इसे एक यादगार दिन के
रूप में मनाया करना.

25 जब तुम उस देश में जाओगे, जिसे याहवेह तुम्हें देंगे, वहां
भी तुम इन बातों को मानना.

26 जब तुम्हारे बालक तुमसे यह पूछें, ‘क्या मतलब है इस पर्व
का जो मनाया जाता है?’

27 तब तुम उन्हें उत्तर देना, ‘यह याहवेह के लिए फ़सह का
बलिदान है, जिन्होंने मिस्रियों को मारते हुए हम इस्राएलियों
को सुरक्षित रखा, अतः इसी कारण यह पर्व मनाया जाता है.’
” फिर लोगों ने झुककर प्रणाम किया और परमेश्वर की
आराधना की!

28 इस्राएलियों ने वैसा ही किया; जैसा याहवेह ने मोशेह एवं
अहरोन से कहा था.

29 लगभग आधी रात को याहवेह ने मिस्र देश में सभी
पहिलौठों को मार दिया, फ़रोह से लेकर तथा जो बंदीगृह में थे
और पशुओं के भी पहलौठे को मार दिया.

30 रात में फ़रोह, उसके सेवक तथा सब मिस्रवासी जाग उठे
क्योंकि पूरे मिस्र देश में रोने का शब्द सुनाई दे रहा था, कोई
भी ऐसा परिवार न था, जहां किसी की मृत्यु न हुई हो.

31 अतः फ़रोह ने रात में ही मोशेह तथा अहरोन को बुलवाया
और उनसे कहा, “यहां से निकल जाओ और जैसा तुम चाहते
हो, तुम इस्राएलियों समेत जाकर याहवेह की वंदना करो.

32 अपने पशु एवं भेड़-बकरी भी अपने साथ ले जाओ, और
मुझे आशीर्वाद देते जाना.”

33 मिस्रवासी इस्राएलियों को जल्दी अपने बीच से भेज देना
चाहते थे, क्योंकि उनको डर था कि कहीं उनकी भी मृत्यु न
हो जाये.

34 इससे पहले कि इस्राएलियों का गूंधा हुआ आटा खमीर हो
जाये, उन्होंने उसे कटोरे में रखकर और कपड़ों में बांधकर
अपने कंधों पर उठा लिया.

35 इस्राएल वंश ने बिलकुल वही किया, जैसा उनसे मोशेह ने
कहा था. उन्होंने मिस्र के लोगों से सोने-चांदी के गहने और
वस्त्र मांग लिए थे.

36 याहवेह ने इस्राएलियों को मिस्र के लोगों के मन में उनके
प्रति ऐसी मनोवृत्ति दी कि मिस्रवासी इस्राएलियों की इच्छा पूरी
करते गए. इस प्रकार इस्राएलियों ने पूरे मिस्रवासियों को लूट
लिया.

37 इस्राएली रामेसेस नामक स्थान से पैदल चलकर सुक्कोथ
तक पहुंचे. इनमें स्त्रियों और बच्चों के अलावा छः लाख पुरुष
थे.

38 इन इस्राएलियों के साथ बहुत से मिश्रित वर्ग के लोग भी
निकले और भेड़-बकरी, गाय-बैल और बहुत से पशु थे.

39 उन्होंने गूंधे हुए आटे से, जो वे मिस्र देश से अपने साथ लाए
थे, अपने लिए अखमीरी रोटियां बनाईं. क्योंकि वे मिस्र देश से
बहुत जल्दी में निकाले गए थे, उनको वहां रुकने की और
हिम्मत नहीं थी. वे तुरंत वहां से निकले और उन्हें अपने लिए
खाना बनाने का भी समय नहीं मिला.

40 मिस्र देश में इस्राएली चार सौ तीस वर्ष तक रहे.

41 जिस दिन चार सौ तीस वर्ष पूरे हुए, उसी दिन याहवेह की
सारी सेना मिस्र देश से निकल गई.

42 जिस रात वे सब मिस्र से निकले वह रात उनके लिए विशेष
रात कहलाई, यह याहवेह की महिमा की रात थी. जिसे,
इस्राएल के सभी लोगों को तथा उनकी पूरी पीढ़ियों को, उस
दिन को महत्व देना ज़रूरी था.

43 याहवेह ने मोशेह एवं अहरोन को फ़सह का नियम
समझाया: "इस्राएलियों के अलावा कोई भी परदेशी इस
भोजन को न खाए.

44 लेकिन जिस व्यक्ति को दाम देकर दास के रूप में खरीदा
हो और उसका ख़तना कर लिया हो, वह व्यक्ति इस भोजन
को खा सकता है.

45 कोई भी परदेशी और मज़दूर इसमें शामिल न किया जाए.

46 "खाना एक ही घर में रहकर खाया जाए, और मांस का कोई
भी टुकड़ा घर के बाहर न ले जाया जाए और मेमने की हड्डी
भी न तोड़ी जाए.

47 सभी इस्राएली इस उत्सव में शामिल हों.

48 "यदि कोई परदेशी मेहमान इस फ़सह में शामिल होना
चाहता है तो, पहले सारे पुरुषों का ख़तना करके याहवेह के
उस पर्व में उसे साथ लिया जा सकता है; तब वह उस देश के
ही लोग समान हो जाएगा; लेकिन कोई भी बिना ख़तना किए
इसमें शामिल न हो.

49 नियम स्वदेशी और विदेशी सबके लिए एक जैसा ही हो."

50 सभी इस्राएलियों ने जैसा मोशेह तथा अहरोन को याहवेह
ने आदेश दिया वैसा ही किया.

51 यह वही दिन था, जब याहवेह ने इस्राएलियों को मिस्र देश
से बाहर निकाला था.

Exodus 13:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा:

2 "मनुष्य एवं पशु की पहली संतान मेरे लिए अलग करो. सब
बच्चे, जो इस्राएल में पहिलौठे हैं, चाहे मनुष्य के हों, या पशु
के, उन सभी पर मेरा ही अधिकार होगा."

3 मोशेह ने लोगों से कहा, "यह दिन याद रखना, जब तुम मिस्र
से निकले थे—जब तुम ग़ुलामी में थे तब याहवेह ही ने अपने
सामर्थ्यी हाथों द्वारा उस जगह से तुम्हें बाहर निकाला; इस
कारण खमीर वाली कोई भी चीज़ न रखना.

4 अबीब के महीने में आज के दिन तुम निकले हो.

5 जब याहवेह तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से किए गए वायदे के
अनुसार कनानी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी तथा यबूसी जाति के
देशों में पहुंचा देंगे, जहां दूध एवं मधु की धाराएं बहती हैं, तब
तुम्हें इस दिन को मनाना ज़रूरी होगा.

6 सात दिन बिना खमीर की रोटी खाना और सातवें दिन
याहवेह के लिए उत्सव का दिन होगा.

7 सातों दिन बिना खमीर की रोटी ही खाना. तुम्हारे बीच खमीर
की कोई भी चीज़ न हो और पूरे देश से भी खमीर की कोई
वस्तु न लाना.

8 तुम अपने बच्चों को भी सच्चाई बताना, 'यह सब इसलिये
किया जाता है, क्योंकि जब हम मिस्र देश से निकले तब
याहवेह ने हमारे लिए यह सब किया था.'

9 इस कारण तुम्हें भी इस दिन को उतना ही मनाना और याद
रखना होगा, और याहवेह के नियम और व्यवस्था को कभी
नहीं भूलना. यह हमेशा अपने माथे पर याद कराने वाली बात
ठहरे और तुम्हारे हाथ में एक चिन्ह होगा, क्योंकि याहवेह ने
अपनी सामर्थ्य के द्वारा तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था.

10 इस कारण हर वर्ष इस विधि का सही समय पर पालन
करना.

Exodus 14:1

11 “तब याहवेह पूर्वजों से किए गए वायदे के अनुसार तुम्हें
कनानियों के देश में पहुंचा कर तुम्हें उसका अधिकार देंगे,

12 तब घर की हर पहली संतान को याहवेह को अर्पित करना
ज़रूरी होगा, हर पशु का भी पहिलौठा याहवेह का होगा. हर
एक पहिलौठे नर पर परमेश्वर का अधिकार होगा.

13 गधी के पहिलौठे के बदले में मेमने को अलग कर सकते
हो, और अगर मेमना न देना चाहो तो गदही के पहिलौठे का
गला तोड़ देना. पर हर एक पहिलौठे पुत्र का बदला देकर
छुड़ाना.

14 “जब, तुम्हारे पुत्र इसके बारे में तुमसे पूछें तब तुम बताना,
‘जब तुम गुलाम थे तब याहवेह ने कैसे अपनी सामर्थ्य से तुम्हें
मिस्र देश से निकाला.

15 मिस्र देश से फ़रोह हमें निकलने नहीं दे रहा था, तब याहवेह
ने मिस्र देश में प्रत्येक पहिलौठे को मार दिया—चाहे वह
मनुष्य का था या पशु का. इसलिये पशु के पहलौठे नर को
याहवेह के लिए बलि करते हैं, किंतु मनुष्य के पहिलौठे को
बदला देकर छुड़ा देते हैं.’

16 अब यह तुम्हारे हाथ पर चिन्ह के समान होगा तथा तुम्हारे
माथे पर टीका समान होगा—क्योंकि याहवेह ने हमें मिस्र देश
से अपने सामर्थ्यी हाथों के द्वारा निकाला था.”

17 जब फ़रोह ने प्रजा को वहां से जाने को कहा, तब परमेश्वर
उन्हें फिलिस्तीनियों के देश में से होकर नहीं ले गए, यह रास्ता
बहुत छोटा था. लेकिन परमेश्वर का कहना था, “लड़ाई
देखकर लोग मिस्र देश वापस चले न जाएं.”

18 परमेश्वर उन्हें घुमाकर रेगिस्तानी रास्ते से लाल सागर की
ओर ले गए ताकि मिस्र देश से निकलकर इस्राएली युद्ध के
लिए तैयार होकर आगे बढ़ें.

19 मोशेह ने अपने साथ योसेफ़ की अस्थियां भी ले लीं थी.
क्योंकि योसेफ़ ने इस्राएलियों से शपथ करवाई थी, “निश्चय
परमेश्वर तुम्हारी दशा पर ध्यान देंगे और जब तुम यहां से
जाओ तब मेरी अस्थियों को भी अपने साथ ले जाना.”

20 इस्राएलियों ने सुक्कोथ से चलना शुरू किया और एथाम में
रुक गये, जो रेगिस्तान के किनारे पर ही था.

21 याहवेह उन्हें मार्ग दिखाकर उनके आगे-आगे चले; दिन में
बादल तथा रात में आग की रोशनी देकर उनको चलाया,
ताकि वे दिन में तथा रात में भी आराम से चल सकें.

22 दिन में बादल और रात में आग का खंभा लोगों के आगे-
आगे चलता रहा याहवेह ने उनसे कभी दूर न हुए.

Exodus 14:1

1 याहवेह ने मोशेह से कहा,

2 “इस्राएलियों को आदेश दो, कि वे मुड़ जाएं तथा पी-
हाहीरोथ के पास, जो मिगदोल तथा सागर के बीच में है, अपना
तंबू डालें. तंबू सागर तट पर बाल-जेफोन के विपरीत खड़े
करना

3 ताकि फ़रोह यह समझे कि इस्राएली देश के उलझन से
मरुस्थल में भटक रहे हैं.

4 तब मैं फ़रोह के मन को कठोर कर दूंगा और वह
इस्राएलियों का पीछा करता हुआ आएगा. तब मैं फ़रोह तथा
उसकी सेना के द्वारा मेरी महिमा कराऊंगा, जिससे
मिस्रवासियों को यह मालूम हो जाएगा कि मैं ही याहवेह हूं.”

5 जब मिस्र के राजा को यह मालूम पड़ा कि वे लोग भाग गए
हैं, तब फ़रोह तथा उसके सेवकों का मन बदल गया. वे आपस
में कहने लगे: “हमने यह क्या कर दिया; हमने इस्राएलियों को
जाने दिया?”

6 फ़रोह ने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी सेना को
अपने साथ लिया.

7 फ़रोह ने छः सौ अच्छे रथ अपने साथ लिए तथा अपने
अधिकारियों को कहा कि मिस्र देश के सभी रथ एवं उनके
चालक भी साथ आएं.

8 याहवेह ने मिस्र देश के राजा फ़रोह का मन कठोर बना
दिया. इस्राएली निश्चिंत होकर चले जा रहे थे; फ़रोह ने उनका
पीछा किया.

9 पर मिस्री अपने सब घोड़ों, रथों, चालकों तथा सेना को साथ
लेकर इस्राएलियों का पीछा करते हुए सागर तट पर उनके
तंबू के पास जा पहुंचे, जो पी-हाहीरोथ में बाल-जेफोन के
विपरीत था.

10 जब फ़रोह उनके निकट पहुंचा तो इस्राएलियों ने देखा कि
मिस्री उनका पीछा करते हुए आ रहे हैं, तब वे बहुत डर गए
और याहवेह को पुकारने लगे.

11 वे मोशेह से लड़ने लगे, और कहने लगे, "क्या मिस्र देश में
कब्र नहीं थी, जो आप हमें यहां ले आए हैं, कि हमारी मृत्यु यहां
मरुभूमि में हो जाए? आपने हमसे ऐसा क्यों किया—क्यों आप
हमें मिस्र देश से निकाल लाए?

12 क्या हमने मिस्र में आपसे नहीं कहा था, 'हमें यहीं रहने
दीजिए, कि हम मिस्रियों की सेवा करते रहें'? इस निर्जन प्रदेश
में मरने से अच्छा था कि हम मिस्रियों की सेवा करते रहते!"

13 मोशेह ने लोगों से कहा: "मत डरो! स्थिर खड़े रहो और
याहवेह का अद्भुत काम देखो, जो वह तुम्हारे लिए करेंगे;
क्योंकि तुम आज जिन मिस्रियों को देख रहे हो, इसके बाद
उन्हें फिर कभी भी न देखोगे.

14 तुम चुप रहो, याहवेह ही तुम्हारे लिए लड़ेंगे."

15 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "क्यों मेरी दोहाई दे रहे हो?
इस्राएलियों से कहो कि वे आगे बढ़ें.

16 तुम्हारे लिए मेरा आदेश है कि अपनी लाठी समुद्र के ऊपर
बढ़ाओ और जल दो भाग हो जाएंगे, जिससे इस्राएली सूखी
भूमि से होकर चले जाएंगे.

17 मैं मिस्रियों के मन को कठोर बना दूंगा और वे उनका पीछा
करते हुए आएंगे. तब मैं फ़रोह की सेना, उसके रथों एवं
सवारियों के ज़रिये अपनी महिमा करवाऊंगा.

18 जब फ़रोह की सेना, उसके रथों एवं सवारियों के ज़रिये मेरी
महिमा होगी तब मिस्र के लोग समझ जायेंगे कि मैं ही याहवेह
हूं."

19 फिर परमेश्वर का स्वर्गदूत, जो अब तक इस्राएलियों के
आगे-आगे जा रहा था, उनके पीछे आ गया तथा बादल भी
आगे से हटकर उनके पीछे आ गए.

20 इस प्रकार स्वर्गदूत और बादल इस्राएलियों तथा मिस्रियों
के बीच आ गए. बादल के कारण एक ओर तो अंधकार था,
लेकिन रात में उन्हें रोशनी भी मिलती रही.

21 मोशेह ने समुद्र के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और याहवेह
ने रात भर तेज हवा बहाई और समुद्र को दो भाग करके जल
को पीछे हटा दिया, जिससे बीच की ज़मीन सूखी हो गयी.

22 इस्राएली सूखी ज़मीन पर चलकर दूसरी ओर आ गए,
क्योंकि जल उनके दोनों ओर दीवार बनकर खड़ा हो गया था.

23 तब मिस्रियों ने इस्राएलियों का पीछा किया और फ़रोह के
सभी घोड़े, उसके रथ तथा उनके चालक उनका पीछा करते
हुए समुद्र के बीच आ गये.

24 सुबह के समय याहवेह ने आग तथा बादल में से होकर
मिस्री सेना को देखा.

25 और उनके रथों के पहिये फंसा दिये ताकि वे आगे बढ़ नहीं
पायें. मिस्री आपस में कहने लगे, "चलो, हम इस्राएलियों का
पीछा करना छोड़कर भाग चलें—क्योंकि स्वयं याहवेह
उनकी ओर से हमारे विरुद्ध लड़ रहे हैं."

26 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "समुद्र के ऊपर अपना हाथ
बढ़ा दो कि जल मिस्रियों, उनके रथों और उनके घुड़सवारों
के ऊपर लौट आये."

27 मोशेह ने समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाया और सुबह होने पर
समुद्र पहले जैसा बहने लगा. तब तक मिस्री जल के बीच में
आ गये थे. वे जब भाग रहें थे, तब याहवेह ने उन्हें समुद्र के
बीच में ही डुबो दिया.

28 समुद्र के बहाव ने रथों, चालकों तथा फ़रोह की पूरी सेना
को डुबो दिया, जो इस्राएलियों का पीछा करते हुए समुद्र में
पहुंची थी. उनमें से एक भी व्यक्ति जीवित न रहा.

29 किंतु इस्राएली समुद्र के बीच में से सूखी भूमि पर चलते हुए
पार हो गए.

30 याहवेह ने उस दिन इस्राएल को मिस्रियों से बचाया.
इस्राएलियों ने समुद्र में मिस्रियों के शव देखे.

31 जब इस्राएलियों ने उस ताकतवर काम पर ध्यान दिया, जो
याहवेह ने मिस्रियों से किया, वे याहवेह के प्रति श्रद्धापूर्ण डर
से भर गए और उन्होंने याहवेह तथा उनके दास मोशेह पर
विश्वास किया.

Exodus 15:1

1 तब मोशेह तथा इस्राएलियों ने याहवेह के लिए यह गीत
गाया: "मैं याहवेह के लिए गीत गाऊंगा, क्योंकि वे अति महान
परमेश्वर हैं. घोड़ों एवं चालकों को उन्होंने समुद्र में डाल दिया.

2 "याहवेह मेरा बल और मेरा गीत हैं, वही मेरा उद्धार बना हैं.
यही हैं मेरे परमेश्वर, मैं उनकी स्तुति करूंगा; मेरे पिता के
परमेश्वर, उनकी मैं प्रशंसा करूंगा,

3 याहवेह योद्धा हैं और उनका नाम याहवेह है.

4 याहवेह ने फ़रोह के रथों एवं उसकी सेना को समुद्र में फेंक
दिया; उसके सभी अधिकारी लाल सागर में डूब गए,

5 वे पत्थर के समान गहराइयों में डूब गये, और गहरा पानी ने
उन्हें ढंक दिया.

6 हे याहवेह, आपका दायां हाथ सामर्थ्य से भरा है. और
आपका बायां हाथ शत्रु को चूर-चूर कर देता है.

7 "शत्रुओं को अपने बड़े पराक्रम से आप पराजित कर देते हैं,
जो आपके विरुद्ध सिर उठाते हैं; आप उन पर अपना क्रोध
प्रकट करते हैं. और उन्हें भूसे के समान जला देते है.

8 आपके नथुनों की सांस से समुद्र का जल इकट्ठा हो गया और
जल का बहाव रुक जाता है. बढ़ता पानी दीवार की तरह उठ
खड़ा हुआ, समुद्र के हृदय में गहरा जल जमा हो गया!

9 शत्रु ने कहा था, 'मैं पीछा करूंगा, मैं उन्हें पकड़ लूंगा और
लूटकर चीज़ों को बांट लूंगा तब मुझे तसल्ली मिलेगी, मैं
तलवार निकालूंगा और अपने हाथ से उन्हें नष्ट कर दूंगा.'

10 आपने अपना सांस फूंका तब सागर ने उन्हें ढंक लिया. वे
महा समुद्र में सीसे के समान डूब गए.

11 हे याहवेह, देवताओं में आपके तुल्य कौन है? कौन है
आपके समान, पवित्रता में सर्वोपरि, स्तुति के योग्य और
अनोखे काम करनेवाले?

12 "आपने अपना दायां हाथ बढ़ाया और पृथ्वी ने उन्हें निगल
लिया.

13 आपने अपनी कृपा से छुड़ाए हुए लोगों को चलाया, आप
अपने सामर्थ्य से उन्हें अपनी पवित्रता के स्थान में ले गए.

14 देश-देश के लोग यह सब सुनकर घबरा जाएंगे;
फिलिस्तीनियों पर डर छा जाएगा,

15 एदोम के प्रधान निराश हो जायेंगे; मोआब के ताकतवर
कांपने लगेंगे; कनान के निवासी उदास हो जाएंगे.

16 याहवेह, जब तक आपकी प्रजा वहां से निकल न जाए, जब
तक आपके द्वारा बचाये हुए लोग वहां से आ न जाए तब तक
उनमें डर बना रहेगा; आपके बाहों की ताकत से वे अब पत्थर
समान बन जाएंगे;

17 आप उन्हें लाकर अपने पहाड़ पर बसाएंगे. उस स्थान पर,
हे याहवेह, जो आपने अपने लिए अलग किया है; वही पवित्र
स्थान, जिसे आपने अपने हाथों से बनाया है.

18 "याहवेह का राज्य सदा-सर्वदा स्थिर रहेगा."

19 जब फ़रोह के घोड़े, उसके रथों तथा चालकों के साथ सब
समुद्र में डूब गए और याहवेह समुद्र के जल को उनके ऊपर

Exodus 16:1

ले आए—लेकिन इस्राएली समुद्र के बीच से सूखी भूमि पर चलते हुए निकल गए.

20 तब अहरोन की बहन मिरियम ने, जो नबिया थी, खंजरी उठाई और उसके साथ सभी स्त्रियां अपने-अपने हाथों में खंजरी लेकर नाचने लगीं.

21 मिरियम खुशी से गाने लगी, "याहवेह का गीत गाओ, क्योंकि वे अति महान हैं; उन्होंने तो घोड़ों को चालकों सहित समुद्र में डूबा दिया."

22 फिर मोशेह इस्राएलियों को लाल सागर से शूर के निर्जन देश में ले गए. वे तीन दिन पानी ढूंढ़ते रहे, किंतु उन्हें कहीं भी पानी का सोता नहीं दिखा.

23 वे माराह नामक स्थान पर पहुंचे, किंतु माराह का पानी कड़वा था; इस कारण इस स्थान का नाम माराह पड़ा;

24 इसलिये लोग मोशेह पर बड़बड़ाने लगे. वे कहने लगे, "हम क्या पिएंगे?"

25 मोशेह ने याहवेह को पुकारा और याहवेह ने उन्हें एक लकड़ी का टुकड़ा दिखाया. जब मोशेह ने उस पेड़ को पानी में डाला, पानी मीठा बन गया. उसी जगह याहवेह ने उनके लिए एक नियम और विधि बनाई.

26 याहवेह ने उनसे कहा, "यदि तुम याहवेह, तुम्हारे परमेश्वर के वचन को पूरे मन से मानोगे और सही काम करोगे, उनकी बातों पर ध्यान दोगे तथा उनके सब नियमों को मानोगे तो मिस्रियों के साथ घटित, ऐसी कोई परेशानी तुम पर नहीं आने दूंगा; क्योंकि मैं याहवेह राफ़ा हूं, अर्थात् चंगा करनेवाला हूं."

27 तब वे एलिम नामक स्थान पर पहुंचे, जहां बारह झरने तथा सत्तर खजूर के पेड़ थे. इस्राएलियों ने जल के स्रोतों के पास ही अपना पड़ाव डाला.

Exodus 16:1

1 फिर इस्राएली एलिम से चलकर सिन नामक निर्जन देश पहुंचे. यह एलिम एवं सीनायी के बीच में था. मिस्र देश से निकले दो महीने तथा पन्द्रह दिन हो चुके थे.

2 इस निर्जन क्षेत्र में सभी इस्राएली मोशेह तथा अहरोन से नाराज होने लगे.

3 इस्राएली कहने लगे, "अच्छा होता कि याहवेह ने हम लोगों को मिस्र में ही मार डाला होता, वहां हम मांस की हांडियों के पास बैठते थे और पेट भरकर रोटी खाते थे; आप तो हमें इस निर्जन देश में इसलिये ले आए हैं कि हम सारे लोग भूख से मर जाएं."

4 इस पर याहवेह ने मोशेह से कहा, "सुनो, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग से रोटी बरसाऊंगा, और प्रतिदिन लोग बाहर जाकर रोज अपनी ज़रूरत के अनुसार रोटी बटोर लें, मैं उन्हें जाचूंगा और देखूंगा कि वे मेरी आज्ञा मानते हैं या नहीं.

5 छठे दिन जब वह बटोरे हुए भोजन वस्तु से खाना बनाएं तब वह अन्य दिनों से दुगना होगा."

6 मोशेह एवं अहरोन ने सब इस्राएलियों को कहा, "शाम को तुम समझ जाओगे कि याहवेह ही ने तुम्हें मिस्र देश से निकाला है.

7 सुबह तुम्हें याहवेह का तेज दिखाई देगा, क्योंकि याहवेह ने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है—हम कौन हैं, जो तुम इतना गुस्सा दिखा रहे हो?"

8 मोशेह ने कहा, "अब याहवेह तुम्हें शाम को मांस और सुबह रोटी देंगे, क्योंकि याहवेह ने उनके विरुद्ध तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया हैं. हम कौन होते हैं? तुम्हारा गुस्सा हम पर नहीं, परंतु याहवेह पर होता है."

9 फिर मोशेह ने अहरोन से कहा, "सभी इस्राएलियों से कहो, 'याहवेह के पास आओ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है.' "

10 जब अहरोन सभी इस्राएलियों से बात कर रहे थे, तब उन्होंने निर्जन देश की ओर देखा और उनको याहवेह का तेज बादल में दिखाई दिया.

11 याहवेह ने मोशेह से कहा,

12 “मैंने इस्राएलियों का बड़बड़ाना सुन लिया है; उन्हें बता दो,
‘शाम को तुम्हें मांस और सुबह तुम्हें रोटी, पेट भरकर मिलेगी;
तब तुम जान जाओगे कि मैं ही याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर हूं.’ ”

13 सायंकाल बटेरें उड़ती हुई आईं और छावनी को ढक लिया
तथा सुबह छावनी के आस-पास ओस की एक परत पड़ी हुई
दिखी.

14 जब ओस की परत उठ गई, तब उन्होंने देखा कि ज़मीन पर
एक पतली परत पड़ी हुई है, जैसे बर्फ.

15 वे आपस में कहने लगे, “क्या है यह?” वे समझ नहीं पा रहे
थे कि वह क्या चीज़ है! मोशेह ने बताया, “यही है वह रोटी, जो
तुम्हारे खाने के लिए याहवेह ने दी है.

16 और याहवेह की आज्ञा है, ‘हर व्यक्ति जितना खा सके
उतना ही ले सब व्यक्ति अपने-अपने तंबू में हर व्यक्ति के लिये
एक ओमेर के हिसाब से ले.’ ”

17 इस्राएलियों ने वैसा ही किया. किसी ने कम तो किसी ने
ज्यादा लिया.

18 जिसने अधिक मात्रा में इकट्ठा कर लिया, उसने कुछ भी
ज्यादा नहीं पाया और जिसने कम इकट्ठा किया, उसे कोई
कमी न हुई.

19 मोशेह ने उनसे कहा, “कोई भी व्यक्ति इस भोजन को दूसरे
दिन के लिए मत रखना.”

20 लेकिन कुछ लोगों ने मोशेह की बात नहीं मानी; और दूसरे
दिन के लिए कुछ बचा रखा. दूसरे दिन उन्होंने देखा कि उसमें
पूरे कीड़े पड़ गए और बदबू आने लगी. मोशेह ने उन पर
गुस्सा किया.

21 फिर रोज सुबह जितनी उनको ज़रूरत होती थी उतना ही
वे लेते थे.

22 और छठवें दिन हर व्यक्ति ने अगले दिन का भी खाना
अपने-अपने लिए लिया और सभी ने जाकर मोशेह को बताया.

23 यह सुनकर मोशेह ने उन्हें समझाया: “याहवेह ने यही कहा
था: क्योंकि ‘कल विश्राम दिन है जो याहवेह को समर्पित महा
पवित्र दिन, इसलिये आज ही जो कुछ पकाना है पका लो, और
जो कुछ उबालना है उबाल लो और जो बच जाता है उसे
अगले दिन के लिए अलग रख देना.’ ”

24 उन्होंने बचा हुआ अगले दिन के लिए अलग रख दिया—
जैसे मोशेह ने कहा. इसमें न तो बदबू आई और न कीड़े लगे.

25 फिर मोशेह ने उनसे कहा, “आज तुम इसे खा लो, क्योंकि
आज याहवेह को समर्पित विश्राम का पवित्र दिन है; आज
बाहर खाना नहीं मिलेगा.

26 तुम्हें छः दिन ऐसा ही करना होगा किंतु सातवें दिन, विश्राम
का दिन है, उस दिन यह नहीं मिलेगा.”

27 कुछ व्यक्ति सातवें दिन भी खाना बटोरने गये लेकिन उन्हें
कुछ नहीं मिला.

28 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “तुम और कब तक मेरे
आदेशों और नियमों को नहीं मानोगे?

29 यह विश्राम का दिन, याहवेह ने, अलग किया हुआ दिन है;
याहवेह ही तुम्हें छठे दिन दो दिन का खाना देते हैं. और सातवें
दिन सब अपने-अपने घर पर ही रहें—सातवें दिन कोई भी
व्यक्ति अपने घर से बाहर न जाए.”

30 इस्राएलियों ने सातवें दिन विश्राम का दिन मानना शुरू
किया.

31 इस्राएलियों ने इस वस्तु को मन्ना नाम दिया. यह धनिये के
बीज जितना सफेद और स्वाद शहद से बने पुओं के जैसा
मीठा था.

32 फिर मोशेह ने उनसे कहा, “याहवेह की यह आज्ञा है: ‘पीढ़ी
से पीढ़ी तक सबको यह बताने और दिखाने के लिए एक
ओमेर माप मन्ना रख लो ताकि तुम उनको बता सको कि जब
मैं ने तुम्हें मिस्र देश से निकालकर लाया तब निर्जन देश में
यही खाना खिलाया था.’ ”

33 मोशेह ने अहरोन से कहा, “एक बर्तन में मन्ना लेकर
याहवेह के सामने रखना ताकि आनेवाली पीढ़ियों के लिए वह
यादगार रहे.”

34 याहवेह के द्वारा मोशेह को दिए गए आदेश के अनुसार
अहरोन ने मन्ना को वाचा के संदूक के पास रख दिया.

35 इस्राएली मन्ना तब तक खाते रहे जब तक उस प्रदेश में
नहीं आ गए जहां उन्हें बसना था. वे कनान की सीमा जब तक
नहीं पहुंच गए, तब तक उसे खाते रहे.

36 (एक माप ओमेर एफाह का दसवां भाग है.)

Exodus 17:1

1 फिर इस्राएल के सभी लोग सिन के निर्जन देश से निकले
और एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई चरणों में यात्रा करते
गए, जैसा याहवेह ने आज्ञा दी थी. उन्होंने रेफीदीम में तंबू
डाले. यहां उनको पीने के लिए पानी नहीं मिला.

2 फिर वे मोशेह से यह कहते हुए झगड़ा करना शुरू कर
दिया, “हमें पीने के लिए पानी दें!” मोशेह ने उनसे कहा, “क्यों
मुझसे लड़कर याहवेह की परीक्षा करते हो?”

3 लेकिन लोग बहुत प्यासे थे और वे मोशेह से कहते रहे, “आप
हमें मिस्र देश से क्यों लाए हैं—क्या हमारे बच्चे और हमारे
पशु प्यास से मर जायें?”

4 तब मोशेह ने याहवेह से कहा, “मैं इन लोगों का क्या करूं?
कुछ देर में तो ये मेरे ऊपर पथराव ही कर डालेंगे.”

5 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, “अपने साथ इस्राएल के कुछ
लोगों को ले लो और उसी लाठी को जिससे नील नदी पर मारा
था, लेकर आगे बढ़ो

6 और मैं होरेब पर्वत की एक चट्टान पर तुम्हारे पास खड़ा
रहूंगा. तुम उस चट्टान पर अपनी लाठी से मारना, तब उसमें
से पानी निकलेगा ताकि लोग उससे पी सकें.” मोशेह ने वैसा
ही किया.

7 और उन्होंने उस स्थान का नाम मस्साह तथा मेरिबाह रख
दिया, क्योंकि यहां इस्राएलियों ने बहस की और यह कहते हुए
याहवेह को परखा था, “हमारे साथ याहवेह हैं या नहीं?”

8 तब रेफीदीम में अमालेक इस्राएलियों से लड़ने लगे.

9 मोशेह ने यहोशू से कहा, “अपनी ओर से युद्ध के लिए कुछ
पुरुषों को अलग करे, ताकि वे जाकर अमालेकियों से युद्ध
करें. कल मैं परमेश्वर की लाठी लेकर इस पहाड़ी के ऊपर
खड़ा रहूंगा.”

10 यहोशू ने वैसा ही किया और वे अमालेकियों से लड़ने गए
उस समय मोशेह, अहरोन तथा हूर पहाड़ी के ऊपर पहुंच
गए.

11 जब मोशेह का हाथ ऊपर रहता, इस्राएली जीत जाते, और
जब मोशेह अपना हाथ नीचे करते, अमालेक जीत जाते.

12 जब मोशेह के हाथ थक गये तब उन्होंने एक पत्थर लाकर
वहां रखा और मोशेह उस पर बैठ गए और अहरोन और हूर
ने उनके दोनों हाथों को ऊपर उठाए रखा. शाम तक मोशेह
का हाथ ऊपर रहा.

13 इस प्रकार यहोशू ने अमालेकियों को तलवार की ताकत से
हरा दिया.

14 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “इस बात को याद रखने के
लिए किताब में लिख दो और यहोशू को पढ़कर सुनाना कि मैं
पृथ्वी पर से अमालेकियों को मिटा डालूंगा.”

15 मोशेह ने एक वेदी बनाई और उसका नाम याहवेह निस्सी
रखा.

16 मोशेह ने कहा, “याहवेह पीढ़ी से पीढ़ी तक अमालेकियों से
युद्ध करते रहेंगे, क्योंकि उन्होंने याहवेह के सिंहासन के
विरुद्ध हाथ उठाया हैं.”

Exodus 18:1

Exodus 18:1

1 मिदियान के पुरोहित, मोशेह के ससुर येथ्रो को यह सब बात
मालूम पड़ी कि कैसे परमेश्वर ने मोशेह तथा अपनी प्रजा
इस्राएलियों को याहवेह ने मिस्र देश से बाहर निकाला.

2 मोशेह ने अपनी पत्नी ज़ीप्पोराह और दोनों बेटों को उनके
पिता येथ्रो के पास छोड़ दिया था,

3 उनके एक पुत्र का नाम गेरशोम रखा क्योंकि मोशेह ने कहा,
“मैं दूसरे देश में परदेशी हो गया!”

4 दूसरे पुत्र का नाम एलिएज़र रखा, क्योंकि मोशेह ने यह कहा
था, “मेरे पिता के परमेश्वर मेरे सहायक रहे हैं, जिन्होंने मुझे
फ़रोह की तलवार से बचाया है.”

5 इस निर्जन प्रदेश में जहां इस्राएलियों ने परमेश्वर के पर्वत पर
तंबू डाला हुआ था, वहां मोशेह के ससुर, मोशेह की पत्नी तथा
दोनों पुत्रों को अपने साथ लेकर आया.

6 येथ्रो ने मोशेह से कहा, “मैं येथ्रो, तुम्हारा ससुर, तुम्हारी पत्नी
एवं दोनों पुत्रों को लेकर तुमसे मिलने आया हूं.”

7 यह सुन मोशेह अपने ससुर से मिलने तंबू से बाहर आये,
उनको प्रणाम करके चुंबन किया, और एक दूसरे का हाल
पूछा और मोशेह उन्हें अपने तंबू में ले गए.

8 मोशेह ने अपने ससुर को सब बातें बताई, जो इस्राएलियों के
लिए याहवेह ने फ़रोह तथा मिस्रियों के साथ की थी. मोशेह ने
उन्हें सब परेशानियां भी बताईं, जिनका सामना उन्होंने इस
यात्रा में किया था, तथा यह भी कि याहवेह ने किस तरह से
उनको रास्ते भर बचाया.

9 येथ्रो ने जब सुना कि याहवेह ने कैसे इस्राएलियों को संभाला.
वे बहुत खुश हुए, कि याहवेह ने इस्राएलियों पर अपनी भलाई
की और मिस्रियों से छुड़ाया.

10 तब येथ्रो ने कहा, “धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने तुम्हें मिस्रियों
एवं फ़रोह के अधिकार से छुड़ाया और उनके बंधन से
आज़ाद कराया.

11 अब मैं जान गया हूं कि याहवेह ही अन्य सभी देवताओं से
अधिक शक्तिशाली और बड़े हैं. यह तो उसी समय प्रमाणित
हो गया था, जब मिस्रियों ने इस्राएलियों पर अपना अहंकार
दिखाया था.”

12 तब मोशेह के ससुर येथ्रो ने परमेश्वर के लिए होमबलि एवं
मेल बलि चढ़ाई तथा अहरोन सभी इस्राएलियों और मोशेह के
ससुर के साथ मिलकर परमेश्वर के आगे भोजन करने आये.

13 दूसरे दिन मोशेह लोगों के न्याय करने के लिये न्यायाधीश
के आसन पर बैठे हुए थे और लोग सुबह से शाम तक मोशेह
के आस-पास खड़े रहे.

14 जब मोशेह के ससुर ने मोशेह को देखा, तो उन्होंने मोशेह
से पूछा, “तुम यह सब इस प्रकार क्यों कर रहे हो? जब ये सारे
लोग सुबह से शाम तक तुम्हारे आस-पास खड़े थे, तुम अकेले
ही सब क्यों संभाल रहे हो?”

15 मोशेह ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आते हैं क्योंकि वे
अपने लिए परमेश्वर की इच्छा जानना चाहते हैं.

16 यदि किसी व्यक्ति की अपने पड़ोसी से कोई बहस होती है
और वे मेरे पास आते हैं, तब मैं उस व्यक्ति तथा उसके पड़ोसी
के विषय में फैसला करके उनको परमेश्वर के नियम तथा
उनकी विधियां बता देता हूं.”

17 मोशेह के ससुर ने जवाब दिया: “तुम्हारा काम सही नहीं हैं.

18 तुम और ये लोग जो तुम्हारे साथ हैं, परेशान हो जाएंगे,
क्योंकि यह काम बहुत बड़ा है और तुम अकेले यह सब नहीं
कर पाओगे.

19 इसलिये मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें यह सलाह देना चाहता हूं
कि परमेश्वर तुम्हारे साथ रहें—तुम परमेश्वर के सम्मुख लोगों
के प्रतिनिधि रहो और उनके विवाद परमेश्वर के सम्मुख लाओ.

20 तुम उन्हें नियमों और व्यवस्था की बातें सिखाते जाओ और
उन्हें किस तरह रहना हैं और उनकी आदतें कैसी हों यह
सिखाओ, और कौन-कौन से काम उन्हें करने हैं यह बताते
जाओ.

21 साथ ही तुम इन लोगों में से कुछ ऐसे लोगों को चुन लो—जो सच्चाई से परमेश्वर के भय और श्रद्धा में जीने वाले हों, तथा अन्याय के लाभ से नफरत करते हों. इस प्रकार के व्यक्तियों को अलग करके, लोगों को झुंड में बांटकर, जवाबदारी उनको दे दो, जो हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास तथा दस-दस लोगों का झुंड हो.

22 ये ज़िम्मेदार व्यक्ति ही उन लोगों की बात सुनें और सुलझायें और जो बात न सुलझ पाए तब ही वे तुम्हारे पास आएं. तब तुम्हारा बोझ हल्का हो जाएगा और पूरे लोगों पर अच्छी तरह नियंत्रण रख पाओगे.

23 यदि परमेश्वर ऐसा करने की आज्ञा देते हैं, तो ऐसा ही करना, तब तुम्हारा काम आसान हो जाएगा तथा ये लोग भी शांति से अपनी जगह पहुंच सकेंगे."

24 मोशेह ने अपने ससुर की बात पर ध्यान दिया और वैसा ही किया.

25 सभी इस्राएलियों में से उन्होंने सक्षम व्यक्तियों को अगुआ बनाया; जो हजार-हजार, सौ-सौ, पचास-पचास तथा दस-दस लोगों के समूह के ऊपर अधिकारी थे.

26 वे अधिकारी सभी समय लोगों का न्याय करते थे, केवल बहुत मुश्किल विवाद ही मोशेह के पास लाते थे, लेकिन साधारण मामलों का समाधान वे ही करते थे.

27 मोशेह ने अपने ससुर को विदा कर दिया. वह विदा होकर अपने घर लौट गये.

Exodus 19:1

1 इस्राएलियों के मिस्र छोड़ने के तीसरे महीने के पहले दिन वे सीनायी के रेगिस्तान में आए, उसी दिन जब उन्हें मिस्र से निकलकर दो महीने पूरे हो गये थे.

2 पहले वे रेफीदीम नामक स्थान में गये, फिर वहां से वह सीनायी के निर्जन देश में आये, फिर उन्होंने अपना पड़ाव निर्जन देश में डाला जो पर्वत के सामने था.

3 मोशेह परमेश्वर के पास पर्वत पर गये, याहवेह ने मोशेह को पर्वत से बुलाया. याहवेह ने मोशेह से कहा, "याकोब के घराने से व इस्राएल से कहना:

4 'तुमने देखा है कि मैंने मिस्रियों के साथ क्या-क्या किया, और किस प्रकार मैं तुम्हें उकाब के तरह पंखों में बैठाकर यहां अपने पास ले आया हूं.

5 अब यदि तुम वास्तव में मेरे आदेशों को मानोगे, तथा मेरी वाचा का पालन करोगे, तब सब जनता के बीच तुम मेरी अपनी प्रजा कहलाओगे—क्योंकि पूरी पृथ्वी ही मेरी है.

6 तुम मेरे लिये राजकीय पुरोहित तथा पवित्र राष्ट्र माने जाओगे.' तुम यह बातें इस्राएल से कहना!"

7 तब मोशेह पर्वत से उतरे और सभी अधिकारियों को बुलवाया और उनसे याहवेह की सब बातें बताई जो पर्वत पर याहवेह ने कही थी.

8 फिर सब मिलकर एक साथ बोले, "हम सब बात मानेंगे जो याहवेह ने कहा है!" मोशेह ने जाकर लोगों का जवाब याहवेह को बता दिया.

9 याहवेह ने मोशेह से कहा, "अब सुनो, मैं एक बादल के अंधियारें में से होकर तुमसे बात करूंगा और जब मैं तुमसे बात करूंगा, तब सब लोग मेरी आवाज को सुनें और उनका विश्वास तुम पर बढ़ जाये." तब मोशेह ने परमेश्वर को वे सभी बातें बताई जो लोगों ने कहीं थीं.

10 याहवेह ने मोशेह से कहा, "लोगों के पास जाओ और उन्हें आज और कल पवित्र करना. वे सब अपने-अपने वस्त्र धोएं,

11 और तीसरे दिन अपने आपको तैयार करें; क्योंकि तीसरे दिन याहवेह सीनायी पर्वत पर लोगों के सामने उतरेंगे.

12 और तुम लोगों के चारों तरफ बाड़ा बांध देना और कोई भी पर्वत पर न चढ़े और इसकी सीमा को भी न छुए और यदि कोई उसे छुएगा वह मर जायेगा.

13 और कोई भी उस व्यक्ति को न छुए. अगर कोई उस व्यक्ति
को छुएगा उसे पत्थर से या तीर से मार दिया जाये—चाहे वह
पशु हो या मनुष्य, उसे जीवित नहीं छोड़ा जाए. जब तुरही का
शब्द देर तक सुनाई दे, तब सब पर्वत के पास आ जाएं."

14 तब मोशेह पर्वत से उतरकर लोगों के बीच आ गए और
लोगों को पवित्र किया और सबने अपने वस्त्र धो लिए.

15 लोगों से मोशेह ने कहा, "तीसरे दिन के लिए अपने आपको
तैयार करो. इस समय स्त्री-पुरुष आपस में न मिलें."

16 तीसरे दिन, सुबह होते ही, पर्वत पर अंधकार छा गया,
बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, फिर नरसिंगे की
तेज आवाज सुनाई दी और सभी लोग कांपने लगे.

17 मोशेह सभी को परमेश्वर से मिलाने छावनी से बाहर लाए.
वे सभी पर्वत के नीचे खड़े हुए.

18 पूरा सीनायी पर्वत धुएं से भरा था, क्योंकि याहवेह आग में
होकर उतरे थे और धुआं ऊपर उठ रहा था, जिस प्रकार भट्टी
का धुआं ऊपर उठता है. पूरा पर्वत बहुत कांप रहा था.

19 फिर जब नरसिंगे का शब्द तेज होता गया, तब मोशेह ने
परमेश्वर से बात की और परमेश्वर ने उन्हें जवाब दिया.

20 याहवेह सीनायी पर्वत के ऊपर उतरे और परमेश्वर ने
मोशेह को ऊपर आने को कहा और मोशेह ऊपर गए.

21 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "नीचे जाकर सबसे कहो कि
मुझे देखने की इच्छा में सीमा पार न कर दें, और सब नष्ट न हो
जाएं.

22 और पुरोहित भी, जो मेरे पास आने के लिए अलग किए गए
हैं, वे भी अपने आपको पवित्र करें, ताकि याहवेह उन्हें नष्ट न
करें."

23 मोशेह ने याहवेह से कहा, "लोग सीनायी पर्वत पर नहीं
आएंगे, क्योंकि आप पहले ही बता चुके हैं कि पर्वत के आस-
पास बाड़ा लगाकर उसे पवित्र रखना."

24 याहवेह ने मोशेह से कहा, "तुम नीचे जाओ और फिर तुम
और अहरोन दोनों पर्वत पर आना. परंतु इस्राएली और
पुरोहित सीमा पार न करने पाएं."

25 मोशेह पर्वत से नीचे आए और लोगों को सब बातें बताईं.

Exodus 20:1

1 तब परमेश्वर ने कहा:

2 "मैं ही हूं याहवेह, तुम्हारा परमेश्वर, जिसने तुम्हें मिस्र देश के
बंधन से छुड़ाया.

3 "मेरे अलावा तुम किसी दूसरे को ईश्वर नहीं मानोगे.

4 तुम अपने लिए न तो आकाश की, न पृथ्वी की, और न जल
की किसी वस्तु की मूर्ति बनाना.

5 न इनमें से किसी को दंडवत करना और न उसकी आराधना
करना—मैं, याहवेह, जो तुम्हारा परमेश्वर हूं, जलन रखनेवाला
परमेश्वर हूं, जो मुझे अस्वीकार करते हैं, मैं उनके पापों का
प्रतिफल उनके बेटों को, पोतों और परपोतों को तक दूंगा,

6 किंतु उन हजारों पीढ़ियों पर, जिन्हें मुझसे प्रेम है तथा जो मेरे
आदेशों का पालन करते हैं, अपनी करुणा प्रकट करता रहूंगा.

7 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर के नाम का गलत इस्तेमाल नहीं
करोगे, क्योंकि याहवेह उस व्यक्ति को बिना दंड दिए नहीं
छोड़ेंगे, जो याहवेह का नाम व्यर्थ में लेता है.

8 शब्बाथ को पवित्र दिन के रूप में मानने को याद रखो.

9 छः दिन मेहनत करते हुए तुम अपने सारे काम पूरे कर लोगे,

10 मगर सातवां दिन याहवेह तुम्हारे परमेश्वर का शब्बाथ है;
इस दिन तुम कोई भी काम नहीं करोगे; तुम, तुम्हारे पुत्र-
पुत्रियां, तुम्हारे पुरुष अथवा महिला सेवक न तुम्हारे सारे पशु
अथवा तुम्हारे यहां रहनेवाले विदेशी, तुम्हारे सेवक-सेविकाएं
भी तुम्हारे समान विश्राम करें.

Exodus 21:1

11 क्योंकि याहवेह ने इन छः दिनों में आकाशमंडल और पृथ्वी, तथा समुद्र और सभी की सृष्टि की, तथा सातवें दिन याहवेह ने कोई काम नहीं किया; तब याहवेह ने सातवें दिन को पवित्र ठहराया.

12 तुम अपने पिता एवं अपनी माता का आदर करना, ताकि वह देश, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हें देनेवाले हैं, उसमें तुम बहुत समय तक रह पाओ.

13 तुम मानव हत्या नहीं करना.

14 तुम व्यभिचार नहीं करना.

15 तुम चोरी नहीं करना.

16 तुम अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देना.

17 तुम अपने पड़ोसी के घर का लालच नहीं करना; तुम अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच नहीं करना; न किसी सेवक, सेविका का; अथवा उसके बैल अथवा गधे का—उसकी किसी भी वस्तु का लालच नहीं करना."

18 सभी इस्राएली बादल के गरजने तथा बिजली के चमकने तथा नरसिंगे के शब्द एवं पर्वत से धुंआ उठते हुए देखते रहे, और डरते और कांपते हुए दूर खड़े रहे.

19 उन्होंने मोशेह से कहा, "स्वयं आप ही हमसे बात कीजिए, किंतु परमेश्वर को हमसे बात न करने दीजिए. कहीं ऐसा न हो, कि हम मर जाएं."

20 मोशेह ने लोगों से कहा, "डरो मत; क्योंकि परमेश्वर यहां इसलिये आए हैं कि वह तुम्हें जांचें, ताकि उनके प्रति तुम्हारे मन में भय और श्रद्धा हो और तुम पाप न करो."

21 तब लोग दूर ही खड़े रहे, किंतु मोशेह उस घने बादल की ओर बढ़ते गए, जहां परमेश्वर की उपस्थिति थी.

22 तब याहवेह ने मोशेह से कहा, "इस्राएलियों से यह कहना कि तुमने देखा कि याहवेह ने स्वर्ग से कैसे बात की है.

23 तुम मेरे सिवाय किसी भी अन्य देवता को न मानना, और अपने लिए न चांदी की, न सोने की मूर्ति बनाना.

24 " मेरे लिए तुम मिट्टी से वेदी बनाना. इसी पर तुम गाय-बैलों तथा बछड़ों की होमबलि एवं मेल बलि चढ़ाना. और मेरी महिमा करना और मैं आकर तुम्हें आशीष दूंगा.

25 यदि तुम्हें पत्थर से वेदी बनानी पड़े, तो ऐसा पत्थर लेना जिस पर कभी हथियार नहीं चलाया गया हो,

26 सीढ़ियों से वेदी पर चढ़ना नहीं, चढ़े तो लोग तुम्हारी नग्नता को देख सकेंगे."

Exodus 21:1

1 "ये और जो नियम, तुम्हें उनको बताने हैं वे ये है:

2 "यदि तुम दास के लिए किसी इब्री को खरीदो तब वह छः वर्ष तक सेवा करे; और सातवें वर्ष वह दाम बिना चुकाए भी जा सकता है.

3 यदि वह अकेला ही आया हो, तो अकेला ही जाये. यदि वह किसी स्त्री का पति है, तो उसकी पत्नी भी उसी के साथ लौट जाएगी.

4 यदि उस दास की पत्नी होने के लिए स्त्री को मालिक ने भेजा हो और उस स्त्री के पुत्र-पुत्रियां पैदा हो गई हों, तो दास अकेला ही जाये किंतु उसकी पत्नी एवं संतान मालिक के ही रहेंगे.

5 "यदि वह दास कहे कि मुझे तो, मेरे मालिक, मेरी पत्नी एवं मेरी संतान प्रिय हैं; मैं जाना नहीं चाहता, तो

6 उसका मालिक उसे लेकर परमेश्वर के पास आए, और उस दास को दरवाजे के पास ले जाये और उसका मालिक उसके कान को सुई से छेद दे. इसके बाद वह दास उस मालिक का सेवक हो जाएगा.

7 “यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी होने के लिए देता है,
तो उसे दासी के समान न छोड़े.

8 यदि उसका मालिक, जिसने उसे खरीदा है, उससे प्रसन्न
नहीं है, तो मालिक उसे दाम देकर छोड़ दे. लेकिन मालिक
को यह अधिकार नहीं है कि वह दासी को विदेशियों में बेच दे,
क्योंकि उसने उसके साथ विश्वासघात किया है.

9 यदि वह व्यक्ति इस दासी को अपने पुत्र की पत्नी होने के
लिए चाहता है, तो उसे बेटियों के समान हक भी देना ज़रूरी
है.

10 यदि वह किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लेता है, तो वह इस
दासी को भोजन, वस्त्र तथा उसके वैवाहिक अधिकारों से दूर
नहीं रख सकता.

11 यदि मालिक उसके विषय में उन तीनों अधिकारों को पूरा
न करे, तब वह दासी बिना दाम दिये उसे छोड़कर जा सकती
है.

12 “यदि कोई व्यक्ति किसी पर ऐसा हमला करे कि उसकी
मृत्यु हो जाए, तब अवश्य उस व्यक्ति को मृत्यू-दंड ही दिया
जाए.

13 किंतु यदि यह हत्या पहले से नियोजित नहीं की गई हो, किंतु
यह मृत्यु परमेश्वर की इच्छा से हुई हो, तब मैं तुम्हारे लिए एक
ऐसी जगह बनाऊंगा, जहां तुम भागकर जा सकोगे.

14 किंतु यदि कोई व्यक्ति किसी को पूर्व नियोजित तरीके से
छलपूर्वक, गुस्से से उसकी हत्या कर देता है, तो तुम उस
व्यक्ति को, मेरी वेदी से मृत्यु दंड देने के लिए ले जा सकते हो.

15 “यदि कोई अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे, तो उसे
मृत्यु दंड दिया जाए.

16 “जो किसी मनुष्य का अपहरण करता है, चाहे वह अपहृत
को बेच दें या उसके पास हो, तो भी उसे मृत्यु दंड दिया जाए.

17 “जो अपने पिता अथवा अपनी माता को शाप देता है, उसे
निश्चयतः मृत्यु दंड दिया जाए.

18 “यदि दो व्यक्तियों में झगड़ा हो जाए, वह एक दूसरे को
पत्थर अथवा घूंसे से मारे, जिससे उसकी मृत्यु न हुई हो लेकिन
वह चल फिर न सके,

19 यदि वह व्यक्ति लाठी के सहारे चल फिर सके, तब जिसने
उसको मारा था, वह दंड के योग्य न होगा—लेकिन उसे ठीक
होने तक उसके देखरेख का ख़र्चा उसे देना होगा.

20 “यदि कोई व्यक्ति दंड देते हुए अपने दास या दासी पर
लाठी से मार दे और उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसे उसके लिए
सजा दी जाए.

21 किंतु यदि वह व्यक्ति मार खाने के बाद एक-दो दिन बाद
ठीक हो जाये, तो उसे सजा न दी जाये; क्योंकि दास या दासी
उसी की संपत्ति है.

22 “यदि लोगों के झगड़े में गर्भवती स्त्री को चोट लग जाये और
उसका समय से पूर्व प्रसव हो जाए, किंतु कोई नुकसान न
हुआ हो, तो निश्चयतः उस व्यक्ति को, जिसने मारा है, उस स्त्री
का पति जो भी मांगे और पंच जो भी फैसला करें और जो भी
निर्णय होता है वह उसे चुकाए.

23 और यदि चोट ज्यादा है तो, पंच प्राण के बदले प्राण का भी
फैसला कर सकते हैं,

24 आंख के लिए आंख, दांत के लिए दांत, हाथ के लिए हाथ,
पैर के लिए पैर,

25 दाह के लिए दाह, घाव के लिए घाव तथा मार के बदले मार
का दंड हो.

26 “यदि किसी व्यक्ति की मार से उसके दास अथवा दासी की
आंख नष्ट हो जाये, तो उसे उसकी आंख के बदले उस दास
अथवा दासी को छोड़ दे.

27 यदि झगड़े में उसके दास अथवा दासी का दांत टूट जाये,
तो उसे इस नुकसान के कारण उस दास अथवा दासी को
छोड़ देना होगा.

28 “यदि कोई बैल के सींग से किसी पुरुष अथवा स्त्री की मृत्यु
हो जाती है, तो निश्चयतः उस बैल को पत्थर से मार दें तथा
उसके मांस को काम में न लें; लेकिन उस बैल के मालिक को
कोई दंड न दिया जाए.

29 किंतु यदि कोई ऐसा बैल है, जो हमेशा लोगों को सींग
मारकर नुकसान पहुंचाता है और बैल के मालिक को बताया
गया हो और बैल को बांधकर नहीं रखा और उस बैल ने किसी
पुरुष अथवा स्त्री की हत्या कर दी है, तो इस स्थिति में वह बैल
तथा उसके मालिक, दोनों ही का पथराव किया जाए.

30 यदि बैल का स्वामी छुड़ाई देना चाहे तो धनराशि जो इसके
लिए ठहराई गई है, पूरा देकर छूट सकता है.

31 चाहे बैल ने पुत्र को मार डाला हो अथवा पुत्री को, उसके
साथ नियम के अनुसार फैसला किया जाएगा.

32 यदि बैल किसी दास अथवा दासी को मार डाले, तो बैल के
मालिक को उस दास अथवा दासी के मालिक को चांदी के
तीस सिक्के देने होंगे, तथा बैल का पथराव किया जाए.

33 “यदि कोई व्यक्ति गड्ढा खोदे और उसे न ढंके और उस गड्ढे
में कोई बैल अथवा गधा जा गिरे,

34 तो उस गड्ढे के मालिक को इसका दाम चुकाना होगा और
वह मृत पशु गड्ढे वाले का हो जाएगा.

35 “यदि किसी व्यक्ति का बैल अन्य व्यक्ति के बैल को मारे
और बैल मर जाये तो बचे जीवित बैल को बेचकर उसका दाम
आपस में बांट लें और मरे हुए बैल को भी आधा-आधा बांट लें.

36 अथवा यदि वह बैल हमेशा ही सबको सींग मारता है और
उसके मालिक ने उसे बांधकर नहीं रखा, तो निश्चय वह व्यक्ति
बैल के बदले बैल ही दे. तब मृत बैल उसकी संपत्ति हो जाएगी.

Exodus 22:1

1 “यदि कोई व्यक्ति किसी बैल अथवा भेड़-बकरी की चोरी
कर उसको मार दे अथवा उसको बेच दे, तो उसे उस बैल के
बदले पांच बैल तथा भेड़-बकरी के बदले चार भेड़-बकरी देने
होंगे.

Exodus 22:1

2 “यदि चोर चोरी करते हुए पकड़ा जाए और उसे मारते समय
उसकी मृत्यु हो जाए, तब उस स्थिति में उसकी मृत्यु का दोष
किसी पर न आए.

3 किंतु सूर्य निकलने के बाद उसने चोरी की हो तो मृत्यु का
दोष लगेगा. “ज़रूरी होगा कि चोर उस नुकसान को भर दे.
यदि वह नहीं भर सकता है, तो वह इस चोरी के कारण बेच
दिया जाए.

4 यदि चोरी की गई वस्तु—बैल, गधा, अथवा भेड़-बकरी—
ज़िंदा उसके पास है तो, उसे उसका दो गुणा दाम देना होगा.

5 “यदि कोई व्यक्ति अपना पशु खुला छोड़ दे, और वह किसी
का खेत अथवा दाख की बारी खा जाएं, तो वह अपने ही खेत
तथा दाख की बारी में से सबसे अच्छा हिस्सा उन्हें दे.

6 “यदि कोई आग जलाए और आग फैलकर झाड़ियों में लग
जाये और जमा किया हुआ अनाज, तथा पूरी उपज और खेत
जलकर राख हो जाए, तो जिस व्यक्ति ने आग लगाई, वह खेत
के नुकसान को चुकाए.

7 “यदि कोई अपने पड़ोसी को धन अथवा सोना-चांदी
संभालने के लिये देता है और कोई इन चीज़ों की चोरी कर
लेता है, और चोर पकड़ा जाता है, तो चोर को उसका दो गुणा
धन देना होगा

8 यदि चोर पकड़ा न जाये, तब उस घर के मालिक को फैसला
करनेवालों के सामने लाया जाये, ताकि यह मालूम हो जाये कि
कहीं उसने ही पड़ोसी के धन पर हाथ न धरा हो.

9 चाहे वह बैल, गधे, भेड़-बकरी, वस्त्र अथवा किसी भी खोई
हुई वस्तु के संबंध में हो, जिसके विषय में कोई यह कहे, ‘यह
तो मेरा है!’ जब किसी चीज़ को लेकर आपस में झगड़ा करें
कि यह मेरा है तब फैसला करनेवाले सही फैसला करके दोषी
को सजा दें और दोषी व्यक्ति दो गुणा दाम उसको लौटाये.

10 “यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी को गधा, बैल, भेड़-बकरी
अथवा अन्य कोई भी पशु उसके घर रखने के लिए देता है,
और तब उस पशु की मृत्यु हो जाती है, और किसी ने नहीं देखा
कि कैसे मरा था, और क्या हुआ

Exodus 23:1

11 तब याहवेह के सामने उन दोनों से पूछें कि उसने अपने
पड़ोसी की संपत्ति पर अधिकार तो नहीं कर लिया है, तब उस
पशु के मालिक को उसकी बात पर विश्वास करना होगा. और
उसे कोई दाम नहीं चुकाना होगा.

12 किंतु यदि वास्तव में चोरी की गई है, तब उसे अपने पड़ोसी
को दाम चुकाना होगा.

13 यदि पशु को कोई जंगली जानवर मारकर टुकड़े-टुकड़े
कर दे तो उस पशु के लिए किसी को भी दाम नहीं चुकाना
होगा.

14 "यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से कोई पशु अपनी मदद
के लिए लेता है, और जब उसका मालिक वहां नहीं हो और
तब उस पशु को चोट लगे या उसकी मृत्यु हो जाये तो उसे
उसका दाम चुकाना होगा.

15 और यदि मालिक के सामने ही पशु को कुछ भी होता है तो
पशु का दाम चुकाने की ज़रूरत नहीं है.

16 "यदि कोई पुरुष किसी कुंवारी को भ्रष्ट करता है, और
उसके साथ संभोग करता है, तो वह उसका मोल देकर उसके
साथ विवाह करे.

17 और यदि उस लड़की का पिता विवाह के लिए तैयार नहीं
होता है, तब उस पुरुष को कुंवारियों के लिए तय किया गया
दाम देना होगा.

18 "तुम तांत्रिक स्त्री को जीवित न रहने देना.

19 "यदि कोई व्यक्ति किसी पशु के साथ मैथुन करे, निश्चयतः
उस व्यक्ति को मार दिया जाए.

20 "जो कोई याहवेह को छोड़े और किसी और देवता को बलि
चढ़ाये उसे नष्ट कर दिया जाए.

21 "तुम किसी अनजान व्यक्ति को परेशान न करना और न
उस पर अत्याचार करना—क्योंकि तुम भी मिस्र देश में
अनजान थे.

22 "तुम किसी विधवा अथवा अनाथ बालक को दुःख न देना.

23 यदि तुम उन्हें किसी भी तरह से दुःख दोगे और उस दुःख
में वे मुझे पुकारेंगे, तो मैं निश्चयतः उन्हीं की पुकार सुनूंगा.

24 और मैं बहुत क्रोधित होऊंगा और तुम्हें तलवार से मार दूंगा
और तुम्हारी पत्नी विधवा तथा तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएंगे.

25 "यदि तुम मेरे लोगों में से किसी को रकम उधार में दोगे तो
उनसे ब्याज मत लेना.

26 यदि तुम कभी अपने पड़ोसी या भाई बहनों से पहनने के
लिए कपड़ा मांगो तो शाम से पहले उन्हें वापस दे देना.

27 क्योंकि हो सकता हैं उसके पास पहनने के लिए एक ही
जोड़ा कपड़ा हो और, यदि वह मुझे पुकारे तब, मैं उसी की
सुनूंगा, क्योंकि मैं दयालु परमेश्वर हूं.

28 "तुम परमेश्वर की निंदा न करना, और न अपने प्रधानों को
शाप देना.

29 "अपनी उपज तथा अपने फलों में से भेंट अर्पण करने में
देरी न करना. "तुम अपने पुत्रों में से पहिला मुझे अर्पण करना.

30 और बैलों तथा गायों के पहलौंठे भी मुझे अर्पण करना, बच्चा
सात दिन तक मां के साथ रहें और आठवें दिन वह मुझे अर्पण
किया जाए.

31 "तुम लोग मेरे लिए अपने आपको पवित्र रखना. जो पशु
मैदान में मरा हुआ मिले, उसका मांस न खाना; तुम उसे कुत्तों
को खिला देना.

Exodus 23:1

1 "तुम झूठी बात न फैलाना. बुरे व्यक्ति की सहायता के लिए
झूठी गवाही न देना.

Exodus 23:1

2 “बुराई करने के लिए न तो भीड़ में जाना, और न किसी झगड़े
में भीड़ के साथ मिलकर झूठ कहना;

3 मुकदमे में अनुचित रूप से गरीब का पक्ष न लेना.

4 “यदि तुम्हें अपने शत्रु का बैल अथवा गधा भटकता हुआ
मिले, तो तुम उसे उसके मालिक को लौटा देना.

5 यदि तुम्हें अपने शत्रु का गधा बोझ से दबा हुआ दिखे, तो उसे
वहां मत छोड़ना और सुनिश्चित उसे बोझ से छुड़ाने की
कोशिश करना.

6 “मुकदमे में गरीब हैं यह सोचकर न्याय न बिगाड़ना.

7 झूठे आरोपों से दूर ही रहना और निर्दोष तथा धर्मी की हत्या
न करना, क्योंकि मैं किसी दोषी को निर्दोष न जाने दूंगा.

8 “तुम कभी घूस नहीं लेना, क्योंकि घूस उस व्यक्ति को,
जिसको दृष्टि हैं, अंधा बना देती है तथा धर्मियों के शब्दों को
खराब कर देती है.

9 “पराये लोगों पर अत्याचार नहीं करना, तुम पराये लोगों की
भावनाओं को जानते हो, क्योंकि मिस्र देश में तुम भी पराये थे.

10 “तुम अपनी भूमि पर छः वर्ष तक खेती करना और उपज
को एक साथ इकट्ठा करना,

11 लेकिन सातवें वर्ष में कुछ नहीं करना सब कुछ वैसा ही
छोड़ देना. तुममें जो गरीब हैं, वह उस वर्ष की उपज लें, और
जो बच जाता हैं, वह पशुओं को खाने दें. अंगूर और जैतून के
बगीचे को भी ऐसे ही छोड़ देना.

12 “छः दिन तक तुम काम करना, लेकिन सातवें दिन कोई
काम न करना, जिससे तुम्हारे बैल तथा गधे भी आराम कर
सकें. तुम्हारे दास तथा तुम्हारे बीच में रह रहे विदेशी भी
आराम कर सकें.

13 “मैंने जो कुछ तुमसे कहा है, उन बातों का ध्यान रखना.
दूसरे देवताओं के नामों का आव्हान न करना; न ही उनके
बारे में अपने मुंह से कुछ कहना.

14 “हर साल तीन बार मेरे लिए उत्सव मनाना.

15 “तुम बिना खमीर की रोटी का उत्सव मनाना; सात दिन तक
बिना खमीर का खाना खाना, मेरे बताये अनुसार अबीब महीने
के निश्चित समय पर ही यह उत्सव मनाना. क्योंकि इसी महीने
में तुम मिस्र देश से निकले थे. “तुममें से कोई भी मेरे सामने
खाली हाथ न आए.

16 “जब फसल तैयार हो जाये, तब कटनी का उत्सव मनाना.
खेत में उगाई गई फसल की पहली उपज जब तैयार हो जाये,
तब कटनी का उत्सव मनाना. “और पूरी उपज को एक साथ
एक जगह पर जमा करके संग्रह का उत्सव मनाना.

17 “तुममें से हर एक पुरुष साल में इन तीन अवसरों पर प्रभु
याहवेह के पास जाएगा.

18 “किसी भी बलि पशु को खमीर वाली रोटी के साथ याहवेह
को भेंट न चढ़ाना. “और न भेंट की वस्तु दूसरे दिन के लिए
बचाना.

19 “तुम अपने खेत की उपज का पहला भाग याहवेह तुम्हारे
परमेश्वर के घर में ले आना.” तुम बकरी के बच्चे को उसकी
मां के दूध में नहीं पकाना.

20 “सुनो, मैं एक स्वर्गदूत तुम्हारी अगुवाई करने के लिए
तुम्हारे आगे-आगे भेज रहा हूं. वह मार्ग में तुम्हारी रक्षा करेगा
तथा वही तुम्हें उस स्थान में पहुंचाएगा, जिसे मैंने तुम्हारे लिए
तैयार किया है.

21 तुम उस स्वर्गदूत के सामने सावधान रहना, उसकी बातों
को मानना, कोई विरोध नहीं करना, क्योंकि वह तुम्हारी गलती
को माफ नहीं करेगा, क्योंकि उसमें मेरा नाम रहता है.

22 यदि तुम दीनता से उसकी बातों को मानोगे तथा वह सब
करोगे जो मैंने कहा है, तब मैं तुम्हारे शत्रुओं का शत्रु तथा
तुम्हारे विरोधियों का विरोधी बन जाऊंगा.

23 क्योंकि मेरा स्वर्गदूत तुम्हारे आगे-आगे चलकर तुम्हें
अमोरियों, हित्तियों, परिज़्ज़ियों, कनानियों, हिव्वियों तथा
यबूसियों के देश में पहुंचाएगा.

24 तुम उनके देवताओं की आराधना मत करना, न उनकी
सेवा करना, और न उनकी बातों को मानना. तुम उनके पूजा
स्थान को नाश कर देना और उनके पूजा के पत्थरों को टुकड़े-
टुकड़े कर देना.

25 तुम याहवेह, अपने परमेश्वर ही की आराधना करना और
याहवेह तुम्हारे अन्न और जल को आशीष देंगे. मैं तुम्हारे बीच
से रोगों को दूर कर दूंगा.

26 तुम्हारे देश में न तो गर्भपात होगा, न कोई स्त्री बांझ होगी;
और मैं तुम्हारी आयु को पूरी करूंगा.

27 "जिन-जिन लोगों के बीच तुम जाओगे मेरा डर सबके बीच
छा जायेगा और सबको भ्रमित कर दूंगा और सब शत्रु पीठ
दिखाकर भाग जाएंगे.

28 मैं तुम्हारे आगे-आगे बर्रों को भेजूंगा जो तुम्हारे सामने से
हिव्वियों, कनानियों तथा हित्तियों को भगा देंगे.

29 मैं उन्हें तुम्हारे आगे से एक ही वर्ष में न निकालूंगा, नहीं तो
पृथ्वी में लोग कम पड़ते जायेंगे और जंगली पशु बढ़ते जायेंगे
जिससे परेशानी बढ़ जायेगी.

30 मैं उनको थोड़ा-थोड़ा करके निकालूंगा जब तक तुम देश
को अपने अधिकार में न कर लो.

31 "मैं लाल सागर से फिलिस्तीनियों के सागर तक तथा निर्जन
प्रदेश से फरात नदी तक तुम्हें दे दूंगा. और उस देश के लोगों
को भी तुम्हें सौंप दूंगा और तुम ही उन्हें अपने सामने से
निकाल देना.

32 तुम उनके देवताओं के साथ कोई भी वायदा नहीं करना.

33 वे तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे, क्योंकि वे तुम्हें मेरे विरुद्ध पाप
करने के लिए मजबूर करेंगे; और यदि तुम उनके देवताओं
की सेवा करोगे, तो तुम मुसीबत में पड़ जाओगे."

Exodus 24:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "तुम और अहरोन, नादाब,
अबीहू और इस्राएल के सत्तर अगुए याहवेह के पास ऊपर
आकर दूर से याहवेह को दंडवत करना.

2 केवल मोशेह ही याहवेह के पास जायेंगे और कोई नहीं. अन्य
लोगों में से कोई भी पास नहीं आये, अन्य कोई जन उनके साथ
ऊपर न आये."

3 मोशेह नीचे उतर आए तथा जब उन्होंने लोगों को याहवेह
द्वारा कही सब बातें बताई तब सबने एक साथ कहा कि
याहवेह की कही सब बातों के अनुसार ही हम करेंगे.

4 तब मोशेह ने याहवेह की कही सब बातों को लिख लिया.
मोशेह ने सुबह जल्दी उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी बनाई,
और इस्राएल के बारह गोत्रों के अनुसार बारह खंभे भी खड़े
किए.

5 उन्होंने इस्राएलियों में से जवानों को भेजा और उन्होंने
याहवेह के लिए होमबलि तथा मेल बलि चढ़ाई.

6 मोशेह ने आधा रक्त बर्तन में रखा और आधा वेदी पर
छिड़क दिया.

7 फिर मोशेह ने वाचा की किताब लेकर सबको पढ़कर
सुनाया. उसे सुनकर लोगों ने कहा "हम याहवेह की सब बात
मानेंगे और उनके साथ चलेंगे!"

8 तब मोशेह ने रक्त लेकर लोगों पर छिड़का और कहा, "यह
उस वाचा का रक्त है, जो तुम्हारे साथ याहवेह ने बांधी हैं."

9 फिर मोशेह, अहरोन, नादाब तथा अबीहू और इस्राएल के
सत्तर अगुओं को साथ लेकर ऊपर गए.

10 वहां उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया. उनके
पांव के नीचे आकाश के जैसा साफ़ नीलमणि था.

11 परमेश्वर ने उन लोगों पर अपना हाथ नहीं बढ़ाया. उन्होंने
परमेश्वर को देखा और खाया पिया.

12 याहवेह ने मोशेह से कहा, "तुम यहां पर्वत के ऊपर मेरे पास आओ और, मैं तुम्हें मेरे नियम लिखी हुई पट्टिया दूंगा, उसे लेकर तुम इन सबको सिखाना."

13 तब मोशेह यहोशू को साथ लेकर परमेश्वर के पर्वत पर गए.

14 किंतु मोशेह ने अगुओं से कहा, "तुम लोग हमारे वापस आने तक यहीं रहना. अहरोन तथा हूर यहां तुम्हारे साथ हैं. यदि कोई विवाद हो तो उनको बताना."

15 यह कहकर मोशेह पर्वत पर चले गए और बादल ने पर्वत को ढक दिया.

16 सीनायी पर्वत पर याहवेह का प्रकाश छा गया. छः दिन तक बादल उस पर्वत को ढके रहा. सातवें दिन याहवेह ने बादलों के बीच से मोशेह को बुलाया.

17 इस्राएलियों को याहवेह का प्रकाश, पर्वत पर भस्म करनेवाली आग के समान दिख रहा था.

18 मोशेह पर्वत पर बादलों के बीच से होते हुए चढ़ गए और चालीस दिन और चालीस रात वहां रहे.

Exodus 25:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा:

2 "इस्राएलियों से कहो कि वे मेरे लिए भेंट लाएं. और तुम यह भेंट उन्हीं से लेना जो अपनी इच्छा से दे.

3 "ये हैं भेंटें जिन्हें तुम उनसे प्राप्त करोगे: "सोना, चांदी, कांसे;

4 नीले, बैंगनी तथा लाल सूक्ष्म मलमल; बकरे के रोम;

5 मेमने की रंगी हुई लाल खाल, सूंस की खाल, बबूल की लकड़ी,

6 दीपक के लिए तेल; अभिषेक का तेल एवं सुगंधधूप के लिए सुगंध द्रव्य;

7 एफ़ोद तथा सीनाबंद में जड़ने के लिए सुलेमानी गोमेद नाग तथा अन्य नग,

8 "और मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाना. ताकि मैं उनके बीच रहूं.

9 पवित्र निवास स्थान के लिये जैसा मैं तुमको बताऊं वैसा ही सामान लेना और उसी तरीके से बनाना.

10 "उन्हीं बबूल की लकड़ी से एक संदूक बनाना, जिसकी लंबाई एक सौ दस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई और ऊंचाई सत्तर-सत्तर सेंटीमीटर हों.

11 और संदूक के अंदर और बाहर सोना लगाना. और संदूक के ऊपर चारों तरफ सोने की किनारी लगाना.

12 इसके चारों पायों पर लगाने के लिए सोने के चार कड़े बनाना; सोने के कड़ों को चारों कोनों पर लगाना—दो कड़े एक तरफ और, दो कड़े दूसरी तरफ हों.

13 फिर बबूल की लकड़ी से डंडे बनवाना, उस पर भी सोना लगाना.

14 डंडों को दोनों तरफ के कड़ों में डालना ताकि संदूक को उठाना आसान हो.

15 डंडे को संदूक की कड़ों में से न हटाना.

16 मैं तुम्हें एक साक्षी पट्टिया दूंगा, उसे उस संदूक में रखना.

17 "सोने से करुणासन बनाना, जो एक सौ दस सेंटीमीटर लंबा तथा सत्तर सेंटीमीटर चौड़ा होगा.

18 सोने के पत्रों से दो करूबों को बनाकर करुणासन के दोनों ओर लगाना.

Exodus 26:1

19 एक करूब एक तरफ तथा दूसरा करूब दूसरी तरफ
लगाना. ये करूब करुणासन के साथ ऐसे जुड़े हों, मानो यह
एक ही हो.

20 करूबों के पंख ऊपर से ऐसे खुले हों जिससे करुणासन
उनसे ढका रह सके और वे एक दूसरे के आमने-सामने तथा
उनके मुंह करुणासन की ओर झुके हुए हों.

21 करुणासन को संदूक के ऊपर लगाना और साक्षी पट्टिया
जो मैं तुम्हें दूंगा उसे संदूक के अंदर रखना.

22 और मैं करुणासन के ऊपर से तुमसे मिलूंगा और
इस्राएलियों के लिए जितनी आज्ञा मैं तुम्हें दूंगा वह संदूक के
अंदर रखना.

23 "तुम बबूल की लकड़ी से एक मेज़ बनाना. जो नब्बे
सेंटीमीटर लंबी, पैंतालीस सेंटीमीटर चौड़ी और साढ़े सड़सठ
सेंटीमीटर ऊंची होगी.

24 मेज़ पर पूरा सोना लगाना मेज़ की किनारी भी सोने की
बनाना.

25 मेज़ के चारों ओर सोने की साढ़े सात सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी
लगाना और चारों तरफ से इस पट्टी को सोने से मढ़ना.

26 मेज़ के लिए सोने के चार कड़े बनाना और मेज़ के चारों पैरों
के ऊपर के कोनों पर इन सोने के कड़ों को लगाना.

27 कड़े पट्टी के पास लगाना ताकि मेज़ उठाने के लिये डंडे इन
कड़ों में डाले जा सके.

28 डंडे बबूल की लकड़ी से बनाकर उस पर सोना चढ़ाना.
डंडे के सहारे से ही मेज़ को उठाया जाए.

29 तुम धूप के लिए थालियों, तवों, कटोरियों तथा सुराहियां,
चम्मच सब सोने से बनवाना.

30 मेज़ पर मेरे सामने भेंट की रोटी हमेशा रखना.

31 "फिर शुद्ध सोने का एक दीपस्तंभ बनाना. उसके आधार
तथा उसके डंडे को बनाना, और उसमें फूलों के समान प्याले
बनाना. प्यालों के साथ कलियां और खिले हुए पुष्प हों. ये सभी
चीज़ें सोना पीटकर एक ही इकाई में परस्पर जुड़ी हुई हो.

32 दीये से छः डालियां निकलें, तीन एक तरफ और तीन दूसरी
तरफ रखना.

33 हर डाली में बादाम के फूल जैसी तीन कलियां और एक
गांठ हों, और एक फूल दीये से बाहर निकली हुई, पूरी छः
डालियों को इसी आकार से बनाना.

34 दीये की डंडी में चार फूल बनाना, जिसमें बादाम के फूल
के समान कलियां तथा पंखुड़ियां बनाना.

35 दीये से निकली हुई छः डालियों में से दो-दो डालियों के नीचे
एक-एक गांठ हों और दीये समेत एक ही टुकड़े से बने हो.

36 कलियां, शाखाएं और दीप का स्तंभ शुद्ध सोने को पीटकर
बने हो.

37 "सात दीये बनाना और सातों दीयों को जलाए रखना ताकि
वे रोशनी दे सकें.

38 चिमटियां तथा इन्हें रखने के बर्तन भी सोने के हों.

39 ये पूरा सामान लगभग पैंतीस किलो सोने से बना हो.

40 सावधानी से इन सभी चीज़ों को बिलकुल वैसा ही बनाना
जैसा तुम्हें पर्वत पर दिखाया गया था.

Exodus 26:1

1 "फिर पवित्र स्थान के लिए कुशल कारीगरों द्वारा दस पर्दे
बनाना, जो बंटी हुई मलमल और नीले, बैंगनी और लाल रंग
के कपड़ों से बने हों और उस पर कढ़ाई के काम किए हुए
करूबों के चित्र हों.

2 हर पर्दे की लंबाई बारह मीटर साठ सेंटीमीटर और चौड़ाई
एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर हो. हर पर्दा एक ही नाप का हो.

Exodus 26:1

3 पांच पर्दों को एक साथ जोड़ना और इसी प्रकार दूसरे पांच
पर्दे भी एक साथ जुड़े.

4 फिर पहले पांच पर्दे के किनारी पर तथा इसी तरह दूसरी
पांच पर्दे के किनारी पर भी नीले रंग का फंदा बनाना.

5 एक पर्दे में पचास फंदे और दूसरे में भी पचास फंदे. वे फंदे
एक दूसरे के सामने बनाना.

6 फिर, सोने के पचास अंकुड़े बनवाना. और उन अंकुड़ों से
दोनों पर्दों को मिलाना, जिससे पवित्र स्थान मिलकर एक हो
जाए.

7 "फिर बकरे के रोमों से ग्यारह पर्दे बनवाना जो पवित्र स्थान
के ऊपर का हिस्सा है.

8 हर पर्दे की लंबाई साढ़े तेरह मीटर और चौड़ाई एक मीटर
अस्सी सेंटीमीटर हो. ग्यारहों पर्दे एक ही नाप के हों.

9 उन पर्दों में पांच को जोड़कर एक पर्दा बनवाना. और बाकी
छः पर्दों को जोड़कर एक और पर्दा बनवाना. छठे पर्दे को तंबू
के सामने मोड़ देना.

10 और दोनों अलग-अलग पर्दों की एक-एक किनारी पर
पचास-पचास फंदे लगाना.

11 फिर कांसे के पचास अंकुड़े बनवाना. उन अंकुड़ों में फंदे
लगवाना और तंबू के दोनों तरफ इस प्रकार जोड़ना कि वे एक
बन जाए.

12 पर्दों का जो भाग बचा है, उसका आधा भाग पवित्र स्थान के
पीछे लटका देना

13 और पर्दों की लंबाई में बचा हुआ भाग पवित्र स्थान के दोनों
तरफ ढकने के लिए पैंतालीस-पैंतालीस सेंटीमीटर दोनों ओर
लटका हुआ छोड़ देना.

14 तंबू के लिए लाल रंग से रंगी हुई भेडों की खाल का एक
ओढ़ना बनवाना और फिर उसके ऊपर लगाने के लिए सूस
के चमड़े का एक और ओढ़ना बनवाना.

15 "फिर पवित्र स्थान को खड़ा करने के लिए बबूल की लकड़ी
के तख्ते बनवाना.

16 हर तख्ते की लंबाई साढ़े चार मीटर और चौड़ाई साढ़े
सड़सठ सेंटीमीटर की हो.

17 तख्ते को जोड़ने के लिए दो समानांतर चूल्हे हों. पवित्र स्थान
के सब तख्ते इसी तरह बनवाना.

18 पवित्र स्थान के लिए बीस तख्ते दक्षिण की ओर बनवाना.

19 उनके नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाना जो तख्तों के
नीचे रखी जायेंगी. हर तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिए
दो कुर्सियां बनवाना.

20 और इसी प्रकार उत्तर की ओर भी बीस तख्ते बनवाना.

21 और चांदी की चालीस कुर्सियां, हर एक तख्ते के नीचे दो
कुर्सियां बनवाना.

22 पवित्र स्थान के पीछे पश्चिम की ओर छः तख्ते बनवाना.

23 और पीछे के भाग के कोनों के लिए दो तख्ते बनवाना.

24 कोने के दोनों तख्ते एक साथ जोड़ देना चाहिए. तले में दोनों
तख्तों की खूंटियां चांदी के एक ही आधार में लगेंगी और दोनों
भाग ऊपर से जुड़े हों, और नीचे का भाग अलग हो.

25 इस प्रकार आठ तख्ते बनवाना, जिनके नीचे चांदी की
सोलह कुर्सियां हों, हर तख्ते के नीचे दो कुर्सियां हों.

26 "फिर बबूल की लकड़ी की छड़ें बनवाना. अर्थात् पवित्र
स्थान की एक तरफ के तख्तों के लिए पांच छड़ें हों,

27 और तथा पवित्र स्थान की दूसरी तरफ के तख्तों के लिए
पांच कड़े तथा पवित्र स्थान के पश्चिमी दिशा के तख्ते के लिए
पांच कड़े बनवाना.

28 तख्ते के एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए तख्ते के
बीच में कड़े बनवाना.

29 तख्तों के ऊपर सोना लगवाना और कड़े में भी सोना
लगवाना. लकड़े की डंड़ियों को भी सोना लगवाना.

30 "इसी प्रकार पवित्र स्थान को बनाना, जैसे तुमको पर्वत पर
दिखाया गया था.

31 "फिर नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से और बंटी हुई
मलमल से एक बीच वाला पर्दा बनवाना, जिस पर कढ़ाई के
काम द्वारा करूबों के रूप बने हुए हों.

32 बबूल की लकड़ी के चार खंभे बनवाना और उनके ऊपर
सोना लगाना. इन खंभों पर पर्दों के लिए सोने की कड़ियां और
चांदी की चार कुर्सियां बनवाना.

33 बीचवाले पर्दे को अंकुड़ियों के नीचे लटकाकर उसकी
आड़ में साक्षी पत्र का संदूक अंदर रखना. बीचवाले पर्दे के
एक तरफ पवित्र स्थान तथा दूसरी तरफ परम पवित्र स्थान
होगा.

34 परम पवित्र स्थान में साक्षी पत्र के संदूक के ऊपर
करुणासन को रखना.

35 पर्दे के बाहर पवित्र स्थान के उत्तरी भाग में मेज़ रखना और
उसके दक्षिण की ओर मेज़ के सामने दीया रखना.

36 "तंबू के द्वार के लिए नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों
का तथा बंटी हुई बारीक़ सनी वाले कपड़ो की कढ़ाई का काम
किया हुआ एक पर्दा बनवाना.

37 इस पर्दे को लटकाने के लिए बबूल की लकड़ी के सोने से
मढ़े हुए पांच खंभे बनवाना. उनकी कुण्डियां सोने की हों और
उनके लिए कांसे की पांच कुर्सियां बनवाना.

Exodus 27:1

Exodus 27:1

1 "बबूल की लकड़ी से एक वेदी बनवाना, तथा उसकी ऊंचाई
एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर हो, वह वेदी चौकोर हो, सवा दो
मीटर लंबी और सवा दो मीटर चौड़ी हो.

2 उसके चारों कोनों पर सींग बनवाना, वेदी और सींग एक ही
टुकड़े से बने हों और उसमें कांसा लगवाना.

3 वेदी से राख उठाने का बर्तन, फावड़े, कटोरे, कांटे और
अंगीठियां कांसे से बनवाना.

4 वेदी के लिए कांसे की जाली की एक झंझरी बनवाना और
जाली के चारों कोनों पर कांसे के चार कड़े बनवाना.

5 उसे वेदी के नीचे इस प्रकार लगवाना कि वह वेदी की आधी
ऊंचाई तक आए.

6 वेदी के लिए डंडे बबूल की लकड़ी के ही बनवाना और
उसमें कांसे लगवाना.

7 वे डंडे कड़ों में डालें ताकि जब वेदी को उठाएं तब डंडे
उसके दोनों ओर हों.

8 वेदी को तख्तों से इस प्रकार बनाना कि वह अंदर से खोखली
रहे. जैसे तुमको पर्वत पर दिखाया गया था, ठीक वैसी ही
बनाना.

9 "फिर पवित्र स्थान के आंगन को बनवाना. आंगन के दक्षिण
हिस्से में बंटी हुई बारिक सनी के कपड़े का पर्दा हो, जिनकी
लंबाई पैंतालीस मीटर हो.

10 तथा बीस खंभे और कांसे की बीस कुर्सियां बनवाना. खंभों
के कुण्डे और पट्टियां चांदी की हों.

11 इसी प्रकार उत्तरी हिस्से के लिए भी पैंतालीस मीटर लंबे
पर्दे बनवाना. उनके लिए बीस खंभे और कांसे की बीस
कुर्सियां बनवाना. मीनारों के कड़े और पट्टियां चांदी की हों.

12 “आंगन का पश्चिमी हिस्सा साढ़े बाईस मीटर लंबा हो तथा
उसके लिए पर्दे, दस खंभे और दस कुर्सियां बनवाना.

13 आंगन का पूर्वी किनारा भी साढ़े बाईस मीटर का हो.

14 द्वार के एक तरफ के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के
हों, और तीन खंभे और तीन कुर्सियां हों,

15 दूसरी ओर के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के हों, तथा
तीन खंभे और तीन कुर्सियां हों.

16 “आंगन के द्वार के लिए नौ मीटर लंबा नीले, बैंगनी और
लाल रंग का कपड़ा तथा बंटा हुआ मलमल का पर्दा बनवाना
उसमें चार खंभे और चार कुर्सियां हों.

17 आंगन के चारों ओर के सब खंभे चांदी की पट्टियों से जुड़े
हुए हों. उनके कुण्डे चांदी के और उनकी खानें कांसे की हों.

18 आंगन की लंबाई पैंतालीस मीटर तथा चौड़ाई साढ़े बाईस
मीटर तथा ऊंचाई दो मीटर तीस सेंटीमीटर ऊंचे हों और
उनकी कुर्सियां कांसे की हों.

19 पवित्र स्थान के उपयोग का सारा सामान, उसकी सब
खूंटियां और आंगन की सब खूंटियां कांसे की हों.

20 “इस्राएलियों को कहना कि वे दीये के लिए जैतून का
निकाला हुआ शुद्ध तेल लायें, जिससे दिया हमेशा जलता रहे,

21 जो मिलनवाले तंबू के बीचवाले पर्दे से बाहर जो साक्षी पर्दे
के सामने हैं. अहरोन और उसके पुत्र, सुबह से शाम तक, उस
दीये को याहवेह के सामने जलता हुआ रखें. यह इस्राएलियों
के लिए पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला आदेश है.

Exodus 28:1

1 “इस्राएलियों में से अपने भाई अहरोन और उसके पुत्र नादाब
और अबीहू, एलिएज़र और इथामार को बुलाना, ताकि वे मेरे
लिए पुरोहित का काम करें.

2 अपने भाई अहरोन के लिए, उसकी मर्यादा और शोभा के
लिए, पवित्र वस्त्र बनवाना.

3 उन सब कुशल शिल्पकारों को, जिन्हें मैंने इस काम के लिए
चुना है, वे अहरोन के अभिषेक के लिए वस्त्र बनाएं, जिसे
पहनकर वह मेरे लिए पुरोहित का काम कर सके.

4 उन्हें वक्षपेटिका, एफ़ोद, अंगरखा, बेलबूटेदार कुर्ता, पगड़ी
और कमरबंध आदि वस्त्र बनाना होगा. वे तुम्हारे भाई अहरोन
और उसके पुत्रों के लिए पवित्र वस्त्र बनाएं, वे इन्हें पहनकर
मेरे लिए पुरोहित का काम करें.

5 वे सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े और मलमल
का उपयोग करें.

6 “तुम एक कुशल शिल्पकार द्वारा सोने के तारों से, नीले,
बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों तथा बंटी हुई मलमल से,
एफ़ोद बनवाना.

7 एफ़ोद को जोड़ने के लिए कंधों की पट्टियां बनाना और कंधे
की इन पट्टियों को एफ़ोद के कंधे से उसके दोनों भाग जोड़
देना.

8 कमरबंध एफ़ोद के साथ बुना हुआ हो और एक ही प्रकार
की सामग्री से बना हो, अर्थात् सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल
रंग के कपड़ों से और बंटी हुई मलमल से बनाना.

9 “सुलेमानी दो मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना,

10 उनके जन्म के अनुसार, एक मणि पर छः नाम और दूसरी
मणि पर बाकी छः नाम खुदवाना.

11 जिस प्रकार जौहरी मुद्राओं को खोदता है, उसी प्रकार इन
दोनों मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम खुदवाना. उन्हें सोने
के खांचों में जड़वा देना.

12 इन दोनों मणियों को इस्राएल के पुत्रों के यादगार मणियों
के रूप में एफ़ोद के कंधे में लगवाना. अहरोन अपने दोनों
कंधों पर उनके नाम याहवेह के सामने याद कराने वाली ये
मणि हो.

Exodus 28:1

13 फिर सोने के खाने बनवाना.

14 और रस्सियों के समान गुंथी हुई कुन्दन की दो जंजीरें
बनवाना और इन गुंथी हुई जंजीरों को खांचों में लगवाना.

15 “तुम एक कुशल शिल्पकार द्वारा न्याय की पेटी बनवाना,
उसे बेलबूटेदार एफ़ोद के समान बनवाना. उसे सुनहरे, नीले,
बैंगनी और लाल रंग के कपड़े तथा बंटी हुई मलमल से
बनवाना.

16 वक्ष पटल को मोड़कर दो भाग बनाना. और इसका आकार
चौकोर हो, और यह साढ़े बाईस सेंटीमीटर लंबा तथा साढ़े
बाईस सेंटीमीटर चौड़ा हो.

17 उसमें मणियों की चार पंक्तियां लगवाना. पहली पंक्ति में
एक माणिक्य, एक पुखराज और एक मरकत हो.

18 दूसरी पंक्ति में एक लाल मणि, एक नीलम और एक हीरा
हो.

19 तीसरी पंक्ति में एक तृणमणि, एक यशब और एक याकूत.

20 चौथी पंक्ति में एक स्वर्णमणि, एक सुलेमानी और एक
सूर्यकांत मणि इन्हें नक्काशी किए हुए सोने के खांचों में
लगवाना.

21 इस्राएल के बारह पुत्रों के अनुसार बारह मणियां हों. हर
मणि पर बारह गोत्रों में से एक नाम लिखा हो जिस तरह मोहरों
पर होता है.

22 “वक्षपेटिका के लिए बंटी हुई डोरियों के रूप में सोने की
गुंथी हुई जंजीर बनवाना.

23 वक्षपेटिका के लिए सोने के दो कड़े भी बनवाना और इन
दोनों कड़ों को वक्षपेटिका के दोनों सिरों पर लगवाना.

24 इसके बाद सोने की इन दोनों डोरियों को वक्षपेटिका के
सिरों में लगे हुए दोनों कड़ों में लगवाना.

25 दोनों डोरियों के दूसरे सिरों को नक्काशी किए हुए दोनों
खांचों में जुड़वाना. उन्हें एफ़ोद के कंधों में सामने की ओर
लगवाना.

26 फिर सोने के दो और कड़े बनवाकर इन्हें वक्षपेटिका के
सिरों पर अंदर की ओर एफ़ोद से सटाकर लगवाना.

27 दो कड़े बनवाना और उन्हें एफ़ोद के कंधों की तरफ़ की
छोर के सामने की तरफ़ से मिला देना, जो एफ़ोद के बुनी हुई
पट्टी के पास से हो.

28 वक्ष पटल को उसके कड़ों के द्वारा एफ़ोद के कड़ों से एक
नीले रंग की रस्सी द्वारा बांधना, जिससे यह अब एफ़ोद के बुने
हुए भाग पर जुड़ जायें ताकि वक्ष पटल एवं एफ़ोद एक दूसरे
से जुड़े रहेंगे.

29 “जब अहरोन पवित्र स्थान में जाएगा, तब वह न्याय पेटी पर
लिखे इस्राएल के नाम अपने हृदय पर लगाकर रखें जिससे
याहवेह के सामने हमेशा उसे याद करते रहे.

30 न्याय पेटी में उरीम और थुम्मीम को रखना, जिससे अहरोन
उन्हें अपने हृदय पर लिए हुए याहवेह के सामने आए. इस
प्रकार अहरोन याहवेह के सामने आते समय इस्राएल को
हमेशा अपने हृदय पर लगाए रखे.

31 “एफ़ोद का पूरा अंगरखा नीले कपड़े का बनवाना.

32 बीच में सिर के लिए एक छेद हो और उस छेद के चारों ओर
गिरेबां जैसी एक गोट हो, जिससे वह फटे नहीं.

33 इस वस्त्र की किनारी पर नीली, बैंगनी तथा लाल सूक्ष्म बंटी
हुई सन के रेशों से अनार बनवाना. सोने की घंटियां भी
बनवाना और इन्हें वस्त्र की किनारी के चारों ओर अनारों के
बीच में लगा देना.

34 अंगरखे के निचले घेरे में एक अनार के बाद सोने की एक
घंटी हो, फिर एक अनार के बाद फिर एक सोने की घंटी.

35 अहरोन सेवा करते समय उसे पहन लेगा जब वह याहवेह
के सामने पवित्र स्थान में जाएगा और उसमें से निकल आएगा,
तो घण्टियों का शब्द सुनाई देगा, ऐसा नहीं होने पर उसकी
मृत्यु हो जाएगी.

36 "शुद्ध सोने की एक पट पर मुहर के समान ये अक्षर खोदे
जायें: याहवेह के लिए पवित्र

37 तुम उसे नीला फीता से सामने की ओर पगड़ी में बांधना

38 अहरोन उसे अपने सिर पर रखे और इससे वह इस्राएलियों
द्वारा चढ़ाए पवित्र चढ़ावों का दोष अहरोन अपने ऊपर उठाए
रखे. वह उस पटिए को सदा अपने सिर पर उठाए रखे, जिससे
याहवेह उससे खुश रहे.

39 "कुर्ता और पगड़ी मलमल के और कमरबंध बेलबूटेदार हों.

40 अहरोन के पुत्रों की मर्यादा और शोभा के लिए कुर्ता,
कमरबंध ओर टोपी बनवाना.

41 अपने भाई अहरोन और उसके पुत्रों को उन्हें पहनाना और
उनका पुरोहित के रूप में अभिषेक करना. उन्हें पवित्र करना,
जिससे वे मेरे लिए पुरोहित का काम कर सकें.

42 "उनके शरीर ढकने के लिए मलमल के जांघिये बनवाना.

43 उनकी लंबाई कमर से जांघ तक हो जब अहरोन और
उसके पुत्र मिलनवाले तंबू में जायें अथवा पवित्र स्थान में सेवा
करने के लिए वेदी के पास जायें, तब वे उस वस्त्र को पहनें,
जिससे वे अपराधी न बनें और उनकी मृत्यु न हो. "यह उसके
और उसके बाद होनेवाले उसके वंश के लिए स्थिर आदेश है.

Exodus 29:1

1 "अब तुम उनको पवित्र करने के लिए एक निर्दोष बछड़ा
तथा दो मेढ़ों को लाना.

2 उनको लेकर बिना खमीर रोटी तथा तेल से बनी बिना खमीर
की पूरियां, तेल लगाई हुई बिना खमीर की रोटियां जिन्हें मैदे
से तैयार किया गया हो, लेना.

3 इन सभी को तुम एक टोकरी में रखकर तथा बछड़े एवं मेढ़ों
के साथ चढ़ाना.

4 तब तुम अहरोन और उसके पुत्रों को मिलनवाले तंबू के द्वार
पर लाकर उनको नहलाना.

5 और अहरोन को कुर्ता तथा एफ़ोद का परिधान, एफ़ोद तथा
वक्ष पटल पहनाकर उसे एफ़ोद के फ़ीते से बांध देना;

6 उसके सिर पर वह पगड़ी रखना तथा उस पगड़ी पर पवित्र
मुकुट रख देना.

7 तब अभिषेक का तेल लेकर उसके सिर पर डालकर उसका
अभिषेक करना.

8 फिर उसके पुत्रों को कुर्ते पहनाना.

9 अहरोन तथा उनके पुत्रों की कमर बांधकर उनके सिर पर
टोपियां रख देना. ऐसे पुरोहित पद पर हमेशा उनका
अधिकार हो जाएगा. "इस तरह अहरोन तथा उसके पुत्रों का
अभिषेक करना.

10 "इसके बाद बछड़े को मिलनवाले तंबू के सामने लाना और
अहरोन के पुत्र उस बछड़े के सिर पर अपना हाथ रखें.

11 तब उस बछड़े को याहवेह के सामने मिलनवाले तंबू के द्वार
पर बलि चढ़ाना.

12 तुम उस बछड़े का लहू अपनी उंगली पर लेकर वेदी के
सींगों पर लगाना और बाकी बचे हुए लहू को वेदी पर डाल
देना.

13 उसकी अंतड़ियां के ऊपर की तथा कलेजे के ऊपर की
चर्बी, तथा दोनों गुर्दों के ऊपर की चर्बी को वेदी पर जला देना.

14 किंतु बैल, उसकी खाल, मांस और इस प्रक्रिया में उत्पन्न
गोबर को छावनी के बाहर अग्नि में जला देना, क्योंकि यह
पापबलि है.

Exodus 29:1

15 “फिर एक मेढ़ा भी लेना और अहरोन तथा उसके पुत्र
अपना हाथ उस मेढ़े के सिर पर रखें;

16 फिर उस मेढ़े की बलि करके उसके लहू को एक साथ
लेकर वेदी के आस-पास छिड़क देना.

17 फिर उस मेढ़े के टुकड़े-टुकड़े करके, उसके आंतरिक
अंगों तथा टांगों को धोकर, इन सबको सिर के साथ रख देना.

18 और पूरे मेढ़े को वेदी पर जला देना. यह याहवेह के लिए
होमबलि होगी, और याहवेह के लिए अग्नि में समर्पित
सुखदायक सुगंध होगा.

19 “इसके बाद दूसरा मेढ़ा अर्थात् संस्कार का मेढ़ा प्रस्तुत
किया जाये और अहरोन और उनके पुत्र उस मेढ़े के सिर पर
अपने हाथ रखें.

20 फिर उस मेढ़े को बलि करना, उसका कुछ रक्त लेकर
अहरोन के दहिने कान पर तथा उनके दाएं हाथ एवं पांव के
दाएं अंगूठों पर लगा देना तथा बाकी बचे हुए लहू को वेदी के
चारों ओर छिड़क देना.

21 फिर वेदी से थोड़ा लहू और अभिषेक का तेल लेकर
अहरोन और उसके पुत्रों के ऊपर और उनके कपड़ों पर
छिड़क देना; इससे अहरोन और उसके कपड़े तथा उसके
पुत्र और उनके कपड़े पवित्र हो जायेंगे.

22 “मेढ़े को अभिषेक वाला मानकर उसकी चर्बी, उसकी पूंछ,
अंतड़ियां तथा कलेजे के ऊपर की चर्बी, दोनों गुर्दे तथा
उसकी चर्बी और मेढ़े की दायीं जांघ लेना—क्योंकि यह
अभिषेक का मेढ़ा है,

23 और एक रोटी, तेल से चुपड़ी एक पूरी, बिना खमीर रोटी
की टोकरी में से एक पपड़ी, जो याहवेह के सामने रखी गई
थी;

24 ये सभी वस्तुएं अहरोन एवं उसके पुत्रों के हाथों में रखकर
इन्हें याहवेह को चढ़ाने की भेंट मानकर याहवेह के आगे
लहराया जाए.

25 फिर वह इन वस्तुओं को लेकर होमबलि के लिए वेदी पर
जलाए ताकि यह याहवेह के लिए सुखदायक सुगंध हो. यह
याहवेह के लिए अग्निबलि होगी.

26 फिर अहरोन के अभिषेक के मेढ़े की छाती को लेकर
याहवेह के सामने लहर की भेंट के रूप में लहराए. और वह
तुम्हारा हिस्सा होगा.

27 “मेढ़े के लहराए जाने की भेंट वाली छाती तथा उठाए जाने
की भेंट वाला जांघ, जिसे लहराया गया था, और जिसे
अभिषेक के मेढ़े में से चढ़ाया था, जो अहरोन एवं उसके पुत्रों
के हिस्से में से था, पवित्र करना.

28 यह इस्राएल वंश से सदा के लिए अहरोन एवं उसके पुत्रों
के लिए उनका हिस्सा होगा, क्योंकि यह उठाए जाने की भेंट
है; यह इस्राएलियों की ओर से उनकी मेल बलियों में से
याहवेह के लिए उठाए जाने की भेंट हो.

29 “अहरोन के बाद अहरोन के पवित्र कपड़े उसके पुत्र के
होंगे, ताकि इन्हीं कपड़ों में उनको पवित्र एवं अभिषेक किया
जा सके.

30 अहरोन के बाद उसके पुत्रों में से जो पुरोहित बनेगा जब
वह पवित्र स्थान में सेवा करने मिलनवाले तंबू में जाएगा तब
अहरोन के कपड़ो को उसे सात दिन तक पहनना होगा.

31 “फिर अभिषेक के उस मेढ़े को तथा उसके मांस को एक
पवित्र स्थान पर पकाना.

32 अहरोन एवं उसके पुत्र, उस मेढ़े के मांस एवं उस टोकरी
की रोटी दोनों को मिलनवाले तंबू के द्वार पर खाएं.

33 इस प्रकार वे अभिषेक तथा पवित्र की गई वस्तुओं को खाएं,
जिनके द्वारा प्रायश्चित किया गया था. लेकिन सामान्य व्यक्ति
इसे न खाएं, क्योंकि ये वस्तुएं पवित्र हैं.

34 यदि अभिषेक के मांस में से कुछ मांस एवं रोटी बच जाती
है तो उसे आग में जला देना, क्योंकि ये पवित्र वस्तुएं हैं.

Exodus 30:1

35 “अहरोन तथा उसके पुत्रों के साथ वही करना जो उनके साथ करने के लिए मैंने तुमसे कहा हैं; सात दिन तक उनको पवित्र करते रहना.

36 रोज तुम पापबलि के लिए एक बछड़ा प्रायश्चित के लिए चढ़ाना. प्रायश्चित करने के समय वेदी को भी साफ़ करना. और उसे पवित्र करने के लिए उसका अभिषेक करना.

37 सात दिन तक वेदी के लिए तुम प्रायश्चित करके उसे पवित्र करना तब यह वेदी महा पवित्र हो जाएगी. जो कोई इस वेदी को छुएगा पवित्र हो जाएगा.

38 “और एक-एक साल के दो मेमने वेदी पर रोज चढ़ाना.

39 एक मेमना सुबह तथा दूसरा शाम को चढ़ाना.

40 पहले मेमने के साथ पेरकर निकाले गए एक लीटर तेल में मिला हुआ डेढ़ किलो मैदा तथा पेय बलि के लिए एक लीटर दाखरस चढ़ाना

41 तथा दूसरे मेमने के साथ शाम को अन्नबलि और पेय बलि चढ़ाना होगा, जो याहवेह के लिए चढ़ाया गया एक सुखदायक सुगंध हो जाए.

42 “यह याहवेह के सामने, मिलनवाले तंबू के द्वार पर जहां मैं तुमसे मिलकर बातें करूंगा, तुम्हारी समस्त पीढ़ियों द्वारा याहवेह के लिए मिलनवाले तंबू के द्वार पर नियमित रूप से होमबलि चढ़ाई जाएगी.

43 वहां मैं इस्राएलियों से मिलूंगा और वह तंबू मेरे तेज से पवित्र किया जायेगा.

44 “मैं मिलनवाले तंबू और वेदी को पवित्र करूंगा और अहरोन एवं उसके पुत्रों को भी पुरोहित के रूप में सेवा के लिए पवित्र करूंगा.

45 मैं इस्राएलियों के साथ रहूंगा तथा मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा.

46 तब वे जान लेंगे कि मैं याहवेह उनका परमेश्वर हूं, जिसने उन्हें मिस्र देश से निकाला ताकि मैं उनके साथ रहूं. मैं याहवेह उनका परमेश्वर हूं.

Exodus 30:1

1 “धूप जलाने के लिए बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनाना.

2 वेदी चौकोर हो, उसकी लंबाई तथा चौड़ाई पैंतालीस-पैंतालीस सेंटीमीटर तथा ऊंचाई नब्बे सेंटीमीटर की हो, उसकी सींग उसी टुकड़े में से बनाए.

3 वेदी के अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे, चारों ओर सोना लगवाना—सींग में भी सोना लगवाना. इसके चारों ओर तुम सोने की किनारी लगवाना.

4 इसकी किनारियों के नीचे सोने के दो-दो कड़े लगवाना. और इसको इन डंडे के द्वारा उठाने के लिए ही दोनों तरफ कड़े लगवाना जो आमने-सामने हो.

5 डंडे बबूल की लकड़ी से बनाकर उसमें सोना लगाना.

6 वेदी को उस पर्दे के सामने रखना, जो साक्षी पट्टिया के संदूक के पास है, अर्थात् करुणासन के आगे जो साक्षी पत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुमसे मिला करूंगा.

7 “अहरोन इसी वेदी पर सुगंधधूप जलाया करे, वह हर रोज सुबह दीये को ठीक करके फिर दिया जलाए.

8 अहरोन शाम के समय जब दीयों को जलाए तब धूप भी जलाए; यह धूप याहवेह के सामने पीढ़ी से पीढ़ी तक लगातार जलाया जाए.

9 तुम उस वेदी पर और किसी प्रकार की धूप न जलाना और न उस पर होमबलि अथवा अन्नबलि चढ़ाना तथा न तुम इस वेदी पर कोई पेय बलि उण्डेलना.

10 साल में एक बार अहरोन इस वेदी के सींगों पर प्रायश्चित किया करेगा. वह वर्ष में एक ही बार पीढ़ी से पीढ़ी तक

Exodus 30:1

पापबलि के लहू से प्रायश्चित किया करेगा. यह याहवेह के लिए परम पवित्र है.”

11 याहवेह ने मोशेह से कहा

12 “जब तुम इस्राएलियों को गिनने लगो, और जिनकी गिनती हो चुकी हो वे अपने लिए याहवेह को प्रायश्चित दें ताकि गिनती करते समय कोई परेशानी न आ जाये.

13 हर एक व्यक्ति, जिसको गिना जा रहा है, वह व्यक्ति पवित्र स्थान की नाप के अनुसार याहवेह के लिए चांदी का आधा शेकेल दे. एक शेकेल बीस गेराह है.

14 हर एक पुरुष, जो बीस वर्ष से ऊपर का हो चुका है, और जिसकी गिनती की जा रही है, वह याहवेह को भेंट दे.

15 जब कभी तुम अपने प्रायश्चित के लिए याहवेह को भेंट दो तब न तो धनी व्यक्ति आधे शेकेल से ज्यादा दे और न गरीब आधे शेकेल से कम दे.

16 तुम इस्राएलियों से प्रायश्चित का रुपया लेकर मिलनवाले तंबू के कामों में लेना ताकि यह इस्राएलियों के लिए याहवेह के सामने यादगार बन जाए, और अपने प्राण का प्रायश्चित भी हो जाए.”

17 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा,

18 “तुम्हें कांसे की एक हौद भी बनानी होगी. उसका पाया कांसे का बनाना. यह हाथ-पैर धोने के लिए काम में लिया जायेगा. उसे मिलनवाले तंबू और वेदी के बीच में रखकर उसमें पानी भरना.

19 अहरोन तथा उसके पुत्र इसी पानी में अपने हाथ एवं पांव धोया करें.

20 जब-जब वे मिलनवाले तंबू में जायें तब-तब वे हाथ-पांव धोकर ही जाएं, और जब वे वेदी के समीप याहवेह की सेवा करने या धूप जलाने जाएं;

21 तब वे हाथ-पांव धोकर ही जाएं ऐसा नहीं करने से वे मर जायेंगे. अहरोन एवं उसके वंश को पीढ़ी से पीढ़ी के लिए सदा यही विधि माननी है.”

22 और याहवेह ने मोशेह से कहा

23 “तुम उत्तम से उत्तम सुगंध द्रव्य, पवित्र स्थान की माप के अनुसार साढ़े पांच किलो, गन्धरस, पौने तीन किलो सुगंधित दालचीनी, पौने तीन किलो सुगंधित अगर,

24 साढ़े पांच किलो दालचीनी तथा पौने चार लीटर जैतून का तेल.

25 इन सबको लेकर अभिषेक का पवित्र तेल तैयार करना, ऐसा कार्य जैसा इत्र बनानेवाले का हो; और यह अभिषेक का पवित्र तेल कहलायेगा.

26 और इसी तेल से मिलनवाले तंबू, साक्षी पत्र के संदूक,

27 मेज़ और उसकी सारी चीज़ें, दीया और उसकी सारी चीज़ें, तथा सुगंधधूप वेदी,

28 होमबलि की वेदी, पाए के साथ हौदी का अभिषेक करना.

29 तुम इन सबको पवित्र करना, ताकि ये सब अति पवित्र हो जाएं. जो कोई इनको छुएगा, वह पवित्र हो जाएगा.

30 “तुम अहरोन एवं उसके पुत्रों को अभिषेक करके पवित्र करना, ताकि वे मेरे पुरोहित होकर मेरी सेवा किया करें.

31 तुम इस्राएलियों से यह कहना, ‘यह पीढ़ी से पीढ़ी तक मेरे लिए पवित्र अभिषेक का तेल होगा.

32 यह किसी भी मनुष्य के शरीर पर न डालना और न ही तुम कभी भी इसके समान कोई और तेल बनाना. यह पवित्र तेल है. यह तुम्हारे लिए पवित्र रहेगा.

33 जो कोई उस पवित्र तेल के समान कोई और तेल बनाने की कोशिश करे या उसमें से किसी अन्य व्यक्ति को दे, तो उसे अपने लोगों के बीच से निकाल दिया जाये.' "

34 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "तुम गन्धरस, नखी, गन्धाबिरोजा, सुगंध द्रव्य तथा शुद्ध लोबान, ये सब बराबर मात्रा में लेना, और

35 इन्हें लेकर एक सुगंधधूप बनाना—जैसे लवण के साथ, विशुद्ध तथा पवित्र हवन सामग्री को बनाता है.

36 इसमें से छोटा टुकड़ा लेकर बारिक पीसकर थोड़ा मिलनवाले तंबू में साक्षी पत्र के आगे रखना, जहां मैं तुमसे भेंट करूंगा. वह तुम्हारे लिए परम पवित्र होगा.

37 जो धूप तुम बनाओगे, उसमें अपनी इच्छा से कुछ मिलावट न करना बल्कि इसे याहवेह के लिए पवित्र रखना.

38 जो कोई धूप के लिए अपनी मर्जी से कुछ भी मिलायेगा तो उसे निकाल दिया जाये."

Exodus 31:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा,

2 "सुनो, मैंने यहूदाह गोत्र के हूर के पौत्र, उरी के पुत्र बसलेल को नाम लेकर बुलाया है.

3 मैंने उसे मेरे आत्मा से प्रवीणता, समझ, बुद्धि और सब कामों की समझ देकर भर दिया है,

4 ताकि वह सोना, चांदी एवं कांसे पर कलात्मक रचना कर सके,

5 जड़ने के उद्देश्य से पत्थर काटने में कुशल तथा लकड़ी के खोदने में बुद्धि से कलाकारी का काम कर सके.

6 और मैंने उसके साथ दान गोत्र के अहीसामक के पुत्र ओहोलियाब को सहायक चुना है. "तथा उन सभी में जो योग्य हैं, उनको मैं समझ देता हूं कि वे वह सब बनाएं, जो मैंने तुमसे कहा.

7 "जैसे मिलनवाले तंबू, साक्षी पत्र का संदूक, उसके ऊपर करुणासन, और तंबू का सारा सामान,

8 मेज़ तथा उसका सारा सामान, सोने का दीया तथा उसका सारा सामान, तथा धूप वेदी,

9 होमबलि की वेदी तथा उसका सारा सामान, तथा पाया सहित उसकी हौदी,

10 बुने हुए वस्त्र, तथा पुरोहित अहरोन तथा उसके पुत्रों के पवित्र वस्त्र, जो वे पुरोहित का काम करते वक्त पहनेंगे;

11 अभिषेक का तेल और सुगंधित धूप, जो पवित्र स्थान के लिए है, "इन सब चीज़ों को वे परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार तैयार करें."

12 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा,

13 "तुम इस्राएलियों से कहना, 'तुम मेरे विश्राम दिन को मानना; क्योंकि यह तुम्हारे पीढ़ी से पीढ़ी तक मेरे एवं तुम्हारे बीच में एक चिन्ह होगा, ताकि तुम यह जान लो कि मैं ही याहवेह हूं, जो तुम्हें पवित्र करता हूं.

14 " 'तुम्हें विश्राम दिन को मानना ही है, क्योंकि यह तुम्हारे लिए पवित्र है. और जो इसे अपवित्र करेगा, वह निश्चय मार डाला जायेगा; जो कोई विश्राम दिन पर कोई भी काम करेगा, वह व्यक्ति उसके समाज में से मिटा दिया जाए.

15 छः दिन तुम काम कर सकते हो, परंतु सातवां दिन पूरा विश्राम का दिन होगा जो याहवेह के लिए पवित्र है.

16 इस्राएलियों में इस दिन को विश्राम दिन मानकर उनकी सारी पीढ़ी हमेशा इस वाचा को याद रखते हुए इस दिन को माने.

17 यह मेरे तथा इस्राएलियों के बीच में पक्का वादा और चिन्ह
है; क्योंकि छः दिनों में याहवेह ने स्वर्ग तथा पृथ्वी को बनाया,
लेकिन सातवें दिन उन्होंने आराम किया.' "

18 जब याहवेह सीनायी पर्वत पर मोशेह से बात कर चुके, तब
परमेश्वर ने मोशेह को अपने हाथ से लिखी हुई साक्षी की दो
पत्थर की पट्टियां दीं.

Exodus 32:1

1 जब लोगों ने देखा कि पर्वत से आने में मोशेह विलम्ब कर
रहे हैं, तब लोगों ने अहरोन के पास जाकर उनसे कहा, "हमारे
लिए एक देवता बनाइए जो हमारे आगे-आगे चलकर हमारी
अगुवाई करे, क्योंकि मोशेह हमें मिस्र से तो निकालकर ले
आये, परंतु अब मोशेह का कोई पता नहीं. अब आगे क्या होगा
नहीं मालूम."

2 यह सुनकर अहरोन ने कहा, "अपनी-अपनी पत्नियों और
पुत्र, पुत्रियों के गहने उतारकर यहां ले आओ."

3 सभी अपने-अपने कानों से गहने उतारकर अहरोन के पास
ले आए.

4 अहरोन ने उनसे सोना ले लिया और एक औज़ार से उसे
बछड़े का एक रूप ढाल लिया, सबने यह नारा लगाया:
"इस्राएल, यह है तुम्हारे देवता, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल
लाए है."

5 तब अहरोन ने इस बछड़े के लिए एक वेदी बनाई और कहा,
"कल याहवेह के लिए एक उत्सव होगा."

6 दूसरे दिन वे सब जल्दी उठ गए और उन्होंने होमबलि चढ़ाई,
और वे मेल बलियां लाए और खाने-पीने बैठ गए; और खड़े
होकर रंगरेलियां मनाने लगे.

7 याहवेह ने मोशेह से कहा, "जल्दी नीचे जाओ, क्योंकि लोगों
ने, जिन्हें तुम मिस्र देश से निकालकर लाए, अपने आपको
अपवित्र कर दिया है.

8 वे इतनी जल्दी उन सब विधियों को भूल गये, जिन्हें मैंने बताई
थी. उन्होंने अपने लिए एक बछड़ा बनाया और उसकी
उपासना करने लगे. उन्होंने इसके लिए बलि चढ़ाई और कहा,
'इस्राएल, तुम्हारे देवता यही है जो तुम्हें मिस्र देश से
निकालकर लाए हैं!' "

9 याहवेह ने मोशेह से कहा, "मैंने इन लोगों को देख लिया कि
उन्होंने क्या किया है; ये हठीले लोग हैं.

10 तुम अब मुझे मत रोकना मेरा गुस्सा उनके लिए बहुत बढ़
गया है और उन्हें नष्ट कर डालूंगा. लेकिन मैं तुम्हारे द्वारा एक
बड़ी जाति बनाऊंगा."

11 तब मोशेह, याहवेह अपने परमेश्वर से बिनती करने लगे, "हे
याहवेह, आपकी क्रोधाग्नि उन पर क्यों भड़क रही है जिनको
आपने अपनी सामर्थ्य और बड़ी शक्ति से मिस्र से निकाला है?

12 मिस्रियों को यह कहने का क्यों दें, कि याहवेह उन्हें मिस्र से
इसलिये निकाल ले गये कि उन्हें पहाड़ पर मार डालें, और
उन्हें पृथ्वी के ऊपर से मिटा डालें? आप अपने गुस्से को शांत
करें और लोगों को नष्ट करने की सोच छोड़ दीजिए.

13 अपने दास अब्राहाम, यित्सहाक तथा इस्राएल से अपने नाम
से की गई शपथ को याद कीजिये. आपने उनसे कहा था, 'मैं
तुम्हारे वंश को आकाश के तारों जितना बढ़ा दूंगा, और सारा
देश तुम्हें दूंगा और वे इस देश के अनंत अधिकारी होंगे.' "

14 यह सुनकर याहवेह ने पछताया और अपने लोगों पर वह
विपत्ति न लाई, जिसकी उन्होने धमकी दी थी.

15 और मोशेह मुड़कर पर्वत से नीचे उतर आए. वह अपने
हाथों में व्यवस्था की दो पट्टियां लिए हुए थे. इन पट्टियों में दोनों
तरफ लिखा हुआ था, आगे और पीछे.

16 ये पट्टियां परमेश्वर ने बनाई थी और उसमें जो खोदकर
लिखा हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ था.

17 जब यहोशू ने लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनी; तब
उन्होंने मोशेह से कहा, "छावनी से लड़ाई की आवाज सुनाई
दे रही है."

18 किंतु मोशेह ने कहा, "यह न तो जीत की खुशी की आवाज
हैं, और न हार के दुःख की, लेकिन मुझे तो गाने की आवाज
सुनाई दे रही है."

19 और जैसे ही मोशेह पड़ाव के पास पहुंचे, उन्होंने बछड़े के
सामने लोगों को नाचते हुए देखा. गुस्से में मोशेह ने याहवेह की
दी हुई पट्टियां नीचे फेंक दीं और पटियां चूर-चूर हो गई.

20 मोशेह ने वह बछड़ा जिसे लोगों ने बनाया था, उसे आग में
जला दिया और उसकी राख लेकर पानी में मिला दिया, तथा
वह पानी इस्राएलियों को पीने के लिए मजबूर किया.

21 मोशेह ने अहरोन से कहा, "इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या
किया कि तुमने उनसे इतना बड़ा पाप करवाया?"

22 अहरोन ने जवाब दिया, "मेरे प्रभु आप नाराज मत होइए,
आप इन लोगों को अच्छी तरह जानते हो कि ये पाप करने के
लिये कितने इच्छुक रहते हैं!

23 उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे लिए एक ऐसे देवता बनाइए, जो
हमारी अगुवाई कर सके; क्योंकि मोशेह, जो हमें मिस्र से
निकाल लाए, उनका कुछ पता नहीं.'

24 तब मैंने उनसे कहा, 'जिस किसी के पास सोना है, वह उसे
यहां ले आए.' वे सोना मेरे पास ले आए, मैंने सोने को आग में
डाला और आग से यह बछड़ा बाहर निकल आया."

25 मोशेह ने देखा कि लोग जंगलीपन पर उतर आये हैं और
अहरोन ने उन्हें इतनी छूट दे दी कि वह अपने बैरियों के हास्य
पात्र बन गये.

26 तब मोशेह ने छावनी के द्वार पर खड़े होकर कहा, "जो कोई
याहवेह की ओर का है, वह मेरे पास आए!" सभी लेवी वंश के
लोग मोशेह के पास आ गए.

27 मोशेह ने उनसे कहा, "इस्राएल का परमेश्वर, याहवेह यों
कहते हैं, 'तुममें से हर एक पुरुष अपनी-अपनी तलवार
उठाए, छावनी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाए, और जाते-
जाते तुममें से हर एक व्यक्ति अपने भाई को, मित्र तथा पड़ोसी
को मारता हुए जाए.' "

28 तब लेवियों ने वही किया, जैसा मोशेह ने कहा. उस दिन
लगभग तीन हजार लोग मारे गए.

29 फिर मोशेह ने कहा, "आज तुम्हें याहवेह के लिए अलग
किया गया है, क्योंकि हर एक ने अपने पुत्र तथा अपने भाई का
विरोध किया और इसलिये याहवेह ने तुमको आशीष दी है."

30 अगले दिन मोशेह ने लोगों से कहा कि तुम सबने बहुत बड़ा
पाप किया है. और मैं अब याहवेह के सम्मुख प्रायश्चित करने
जा रहा हूं.

31 यह कहकर मोशेह याहवेह के पास गए और कहा, "लोगों
ने बहुत बड़ा पाप किया है. उन्होंने अपने लिए सोने का देवता
बनाया.

32 लेकिन आप चाहें तो उनका पाप क्षमा कर दीजिए—यदि
नहीं, तो कृपा कर मेरा नाम अपनी उस किताब से हटा दीजिए,
जो आपने लिखी है!"

33 याहवेह ने मोशेह से कहा, "अपनी किताब से मैं उसी व्यक्ति
का नाम मिटाऊंगा जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है.

34 किंतु अब तुम जाओ. इन लोगों को उस जगह पर ले जाओ
जो मैंने तुमसे कहा था; मेरा स्वर्गदूत तुम्हारे आगे-आगे चलेगा.
लेकिन जब उनको दंड देने का समय आएगा, मैं उनके पाप
का दंड उन्हें ज़रूर दूंगा."

35 याहवेह ने लोगों के बीच एक महामारी भेजी, क्योंकि उन
लोगों ने अहरोन से कहकर बछड़ा बनवाया था और उसकी
उपासना की थी.

Exodus 33:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, "इन लोगों को, जिन्हें मैं मिस्र
देश से छुड़ाकर लाया हूं—उन्हें उस देश में ले जाओ, जिसका
वायदा मैंने अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से किया था.

2 मैं तुम्हारे आगे स्वर्गदूत भेजूंगा. मैं उन कनानियों, अमोरियों,
हित्तियों, परिज़्ज़ियों, हिव्वियों तथा यबूसियों को वहां से
निकाल दूंगा.

Exodus 33:1

3 और तुम्हें ऐसे देश में ले जाऊंगा, जिसमें दूध और मधु की
धारा बहती है. और मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगा, क्योंकि तुम
लोग पापी हो और कहीं गुस्से में होकर मैं तुमको नाश न कर
दूं."

4 याहवेह की इन क्लेशकारी बातों को सुनकर लोग दुःखी हुए
और रोने लगे, और किसी ने भी गहने नहीं पहने;

5 क्योंकि मोशेह से याहवेह ने कहा था, "इस्राएलियों से कह दो
कि तुम हठीले हो. और यदि मैं तुम्हारे साथ एक क्षण भी चलूं,
तो हो सकता है कि तुम्हें मैं नाश कर दूं, इसलिये अब तुम सब
अपने गहने उतार दो और मुझे सोचने दो कि मैं तुम्हारे साथ
क्या करूं."

6 इस्राएलियों ने जो गहने पहने थे उन्हें होरेब पर्वत में उतार
दिये.

7 मोशेह ने छावनी से दूर एक तंबू खड़ा किया और उसका
नाम मिलनवाले तंबू, रखा. जिस किसी को भी याहवेह से
मिलने की इच्छा होती, वे छावनी के बाहर मिलनवाले तंबू के
पास चले जाते.

8 और जब मोशेह मिलनवाले तंबू में जाने के लिए उनके
सामने से होकर निकलते, तब सब लोग खड़े हो जाते और
मोशेह को तब तक देखते रहते, जब तक मोशेह मिलनवाले
तंबू के अंदर न चले जाते.

9 जैसे ही मोशेह मिलनवाले तंबू में चले जाते, बादल का खंभा
मिलनवाले तंबू के द्वार पर रुक जाता था और याहवेह मोशेह
से बातें करते थे.

10 तब सब लोग मिलनवाले तंबू पर बादल का खंभा देखकर
सब अपने-अपने तंबू से दंडवत करते थे.

11 याहवेह मोशेह से इस प्रकार बात करते, जैसे अपने मित्र से
बात कर रहे हों. फिर मोशेह वापस छावनी में आ जाते थे; परंतु
नून के पुत्र यहोशू, जो मोशेह के सेवक था, वह मिलनवाले तंबू
को नहीं छोड़ता था.

12 मोशेह ने याहवेह से कहा, "आपने मुझे यह जवाबदारी दी
कि इन लोगों को उस देश में ले जाऊं! लेकिन आपने मुझे यह
नहीं बताया कि आप किसे मेरे साथ वहां भेजेंगे. और आपने
यह आश्वासन भी दिया है कि तुम्हें तो मैं तुम्हारे नाम से जानता
हूं और मेरा अनुग्रह तुम्हारे साथ है.

13 अब, मुझ पर आपका अनुग्रह हैं तो, मुझे आपकी गति
समझा दीजिए, ताकि मैं आपको समझ सकूं तथा आपका
अनुग्रह जो मुझ पर हैं, वह हमेशा रहे और यह भी याद रखे
कि यह जाति भी आपके लोग है."

14 याहवेह ने कहा, "तुम्हारे साथ मेरी उपस्थिति बनी रहेगी
तथा मैं तुम्हें शांति और सुरक्षा दूंगा."

15 यह सुन मोशेह ने कहा, "यदि आप हमारे साथ नहीं होंगे,
तो हमें यहां से आगे नहीं जाने दें.

16 अब यदि आपकी उपस्थिति हमारे साथ नहीं रहेगी, तो सब
लोग यह कैसे जानेंगे कि आपका अनुग्रह मुझ पर और इन
लोगों के साथ है? और कौन सी ऐसी बात है जो हमें दूसरे लोगों
के सामने अलग दिखाएगी?"

17 याहवेह ने मोशेह से कहा, "मैं तुम्हारी इस बात को भी
मानूंगा, जो तुमने मुझसे कही; क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो और
मेरा अनुग्रह तुम्हारे साथ हैं और तुम्हारा नाम मेरे हृदय में बसा
है."

18 यह सुन मोशेह ने कहा, "मुझे अपना प्रताप दिखायें!"

19 याहवेह ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने से चलते हुए अपनी
भलाई तुम्हें दिखांऊगा और मेरे नाम की घोषणा करूंगा और
मैं जिस किसी पर चाहूं, कृपादृष्टि करूंगा, और जिस किसी
पर चाहूं; करुणा."

20 फिर याहवेह ने कहा, "तुम मेरा मुख नहीं देख सकते,
क्योंकि कोई भी मनुष्य मुझे देखने के बाद जीवित नहीं रह
सकता!"

21 फिर याहवेह ने कहा, "जहां मैं हूं, इस स्थान के पासवाली
चट्टान पर खड़ा होना.

22 जब मेरा प्रताप वहां से होकर आगे बढ़ेगा, मैं तुम्हें चट्टान
की दरार में छिपा दूंगा और वहां से निकलने तक तुम्हें अपने
हाथ से ढांपे रखूंगा.

23 फिर मैं अपना हाथ हटा लूंगा. तुम उस समय मेरी पीठ को
देख पाओगे—मेरा मुख तुम्हें दिखाई नहीं देगा."

Exodus 34:1

1 याहवेह ने मोशेह से कहा, "पहले के ही समान दो पट्टियां मेरे
पास लाओ; मैं दुबारा उन दोनों पर वही वचन लिखूंगा जो
प्रथम पट्टियों पर लिखे थे और जिन्हें तुमने तोड़ दिए थे.

2 सबेरे तुम तैयार रहना और सीनायी पर्वत पर चढ़ आना, वहां
मेरे समक्ष तुम प्रस्तुत होना.

3 कोई भी व्यक्ति तुम्हारे साथ न आए और न किसी भी व्यक्ति
को पर्वत पर लाना—यहां तक कि भेड़-बकरी तथा अन्य
पशुओं को भी पर्वत के सामने चरने न दिया जाए."

4 इसलिये मोशेह ने पत्थर की दो पट्टियां तराशी और उन्हें
लेकर सबेरे सीनायी पर्वत पर गए, जैसा याहवेह ने कहा था;
वह उन पट्टियों को अपने हाथ में लिये थे.

5 तब याहवेह बादल में मोशेह के पास खड़े हो गए तथा अपने
नाम "याहवेह" की घोषणा की.

6 याहवेह मोशेह के पास से होकर निकले और कहा, "याहवेह,
जो याहवेह परमेश्वर वह, दयालु, कृपालु, क्रोध करने में
धीरजवंत तथा अति करुणामय एवं सत्य से परिपूर्ण हैं,

7 हजारों पीढ़ियों तक करुणा करनेवाले, जो अधर्म, अपराध
और पाप का क्षमा करनेवाले हैं; परंतु दोषी को किसी भी
स्थिति में बिना दंड दिए नहीं छोड़ते. पूर्वजों के अधर्म का दंड
उनके बेटों, पोतों और परपोतों तक को देते हैं."

8 मोशेह ने भूमि पर झुककर आराधना की.

9 उन्होंने कहा, "हे प्रभु, यदि आपकी दया मुझ पर है, तो आप
हमारे साथ चलिये, यद्यपि ये लोग पापी और हठीले हैं, तो भी
हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कीजिये तथा हमें अपना
मानकर स्वीकार कीजिये."

10 फिर याहवेह ने कहा, "सुनो, मैं एक वाचा बांधता हूं कि मैं
सब लोगों के सामने अनोखे काम करूंगा, जो इससे पहले
पृथ्वी पर और न किसी जाति के बीच में कभी हुए हैं. वे सब
लोग जो तुम्हारे बीच रहते हैं, इन कामों को देखेंगे, क्योंकि मैं
तुम्हारे साथ एक भयानक काम करूंगा.

11 आज जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूं, तुम उसे मानना. तुम्हारे
बीच से अमोरियों, कनानियों, हित्तियों, परिज्ज़ियों, हिव्वियों
तथा यबूसियों को मैं निष्कासित कर दूंगा.

12 इसलिये ध्यान रखना; जिस देश में तुम रहने जा रहे हो, तुम
उस देश के लोगों से वाचा नहीं बांधो, कहीं ऐसा न हो कि यही
तुम्हारे लिए फंदा बन जाए.

13 लेकिन तुम उनकी वेदी गिरा देना, उनके पूजा के खंभों को
तोड़ देना तथा उनकी अशेरा नामक मूर्ति को काट डालना.

14 तुम किसी भी देवता को दंडवत नहीं करना, क्योंकि
याहवेह, जिसका नाम जलनशील है, वह वास्तव में जलनशील
परमेश्वर हैं!

15 "ऐसा न हो कि तुम उस देश के लोगों से वाचा बांधो और वे
देवताओं के संग व्यभिचार पूजा करके तुम्हें न्योता दें, और
देवताओं को बलि चढ़ाई हुई वस्तु को खाने के लिए कहें.

16 तुम उनकी बेटियों को अपने बेटों की पत्नियां न बनाना,
क्योंकि उनकी बेटियां देवताओं के संग व्यभिचार करनेवाली
होंगी और तुम्हारे बेटों को भी उस राह पर ले जाएंगी.

17 "तुम कभी कोई देवताओं की मूर्ति न बनाना.

18 "तुम खमीर रहित रोटी का उत्सव मनाया करना. तुम सात
दिन बिना खमीर रोटी खाना, इसे अबीब महीने में मनाना,
क्योंकि तुम अबीब महीने में ही मिस्र देश से निकले थे.

Exodus 35:1

19 “किसी भी स्त्री का पहलौठा मेरा है. पहलौठा जानवर भी;
तुम्हारी गाय, बकरियों या भेड़ों से जो पहलौठा उत्पन्न होता
है, वे सब मेरे है.

20 गधे के पहलौठे के बदले मेमने का पहलौठा दे सकते हो.
यदि तुम यह न करो, तो तुम्हें उसकी गर्दन तोड़नी होगी. तुम्हें
अपने पहले बेटों को बदला देकर छुड़ाना होगा. “मेरे पास
कोई भी खाली हाथ न आये.

21 “तुम छः दिन तो काम करना, परंतु सातवें दिन कोई काम
न करना, न खेत जोतने के समय न फसल कटने के समय.

22 “गेहूं की पहली उपज की कटनी के समय सप्ताहों के
उत्सव को मनाना और साल के अंत में जमा करने का पर्व भी
मनाना.

23 तुममें से हर एक पुरुष साल में इन तीन अवसरों पर
इस्राएल के परमेश्वर प्रभु याहवेह के सम्मुख उपस्थित हों.

24 क्योंकि मैं वहां से सारी जनता को निकालूंगा और तुम्हारे
राज्य की सीमाओं को बढ़ाऊंगा, और जब तुम साल में तीन
बार याहवेह अपने परमेश्वर के पास आओगे, तब कोई भी
तुम्हारी ज़मीन का लालच न करेगा.

25 “तुम मेरी बलि के रक्त को किसी भी खमीर के साथ न
चढ़ाना और फ़सह के पर्व की बलि में से सुबह तक के लिए
कुछ न बचाना.

26 “तुम अपने खेत की उपज का पहला भाग याहवेह तुम्हारे
परमेश्वर के घर में ले आना. “तुम बकरी के बच्चे को उसकी
मां के दूध में नहीं पकाना.”

27 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा, “मेरी इस बात को लिख लो,
क्योंकि इसी बात के अनुसार मैंने तुमसे तथा इस्राएलियों से
वायदा किया है.”

28 मोशेह याहवेह के साथ चालीस दिन तथा चालीस रात रहे.
उन्होंने न तो रोटी खाई और न पानी पिया. उन्होंने उन पट्टियों
पर परमेश्वर की वाचा अथवा दस आज्ञाएं लिखीं.

29 सीनायी पर्वत से उतरते समय, मोशेह के हाथ में साक्षी की
दोनों पट्टियां थीं, तथा याहवेह के साथ रहने के कारण उनके
चेहरे से किरणें निकल रही थीं, पर वे यह बात नहीं जानते थे.

30 जब अहरोन तथा सभी इस्राएलियों ने उनकी ओर देखा, तब
उन्होंने उनके चेहरे पर किरणें देखीं और वे उनके पास जाने
के लिए डर रहे थे.

31 किंतु मोशेह ने उन्हें अपने पास बुलाया; अहरोन एवं सभी
प्रधान मोशेह के पास गए.

32 सभी इस्राएलियों को भी पास बुलाकर मोशेह ने उन्हें
सीनायी पर्वत पर याहवेह द्वारा कही बातों को मानने के लिए
कहा.

33 जब मोशेह अपनी बात पूरी कह चुके, तब उन्होंने अपने
मुंह को ढंक लिया.

34 मोशेह जब कभी भी याहवेह के पास जाते तब मुंह बिना
ढंके जाते, लेकिन जब बाहर लोगों के पास आते और जो आज्ञा
याहवेह ने दी हैं उन्हें वैसा ही इस्राएलियों से कह देते,

35 तब इस्राएली मोशेह का चेहरा देखते थे कि कैसे मोशेह के
चेहरे से किरणें निकलती थीं. फिर जब तक मोशेह याहवेह के
पास अंदर न जाते, तब तक अपना चेहरा ढंक कर रखते थे.

Exodus 35:1

1 मोशेह ने सभी इस्राएलियों से कहा, “जो काम याहवेह ने
करने के लिए कहा वह यह है:

2 छः दिन तुम काम करना, लेकिन सातवां दिन पवित्र और
याहवेह के लिए परम विश्राम का दिन मानना. जो कोई इस
दिन काम करते हुए पाया जाए, उसे मार डाला जाए.

3 किसी भी घर में विश्राम के दिन आग तक न जलाएं.”

4 मोशेह ने सभी इस्राएलियों को कहा, “याहवेह कहते हैं

5 कि तुम सब मिलकर याहवेह के लिए भेंट लाओ. जो कोई
अपनी इच्छा से देना चाहे वे; “सोना, चांदी, कांसे;

6 नीले, बैंगनी तथा लाल सूक्ष्म मलमल; बकरे के रोम;

7 मेढ़े की रंगी हुई लाल खाल; सूंस की खाल बबूल की लकड़ी;

8 दीपक के लिए तेल; अभिषेक का तेल एवं सुगंधधूप के लिए
सुगंध द्रव्य;

9 सुलेमानी गोमेद नाग तथा अन्य नग एफ़ोद तथा सीनाबंद में
जड़ने के लिए दें.

10 “तुममें से जो कुशल कारीगर हैं, वे आये और याहवेह ने
जिन चीज़ों को बनाने की आज्ञा दी है, उन चीज़ों को बनाएं:

11 “तंबू, ओहार समेत निवास उसकी घुंड़ी, उसके लिए
आवश्यक तख्ते, बड़े, छड़, खंभे तथा कुर्सियां;

12 संदूक, डंडों समेत करुणासन, बीच वाला पर्दा;

13 मेज़ और उसके सभी सामान और डंडे, भेंट की रोटी;

14 प्रकाश के लिए दीया, उससे संबंधित पात्र, दीप एवं उनके
लिए आवश्यक तेल;

15 धूप वेदी डंडों समेत, अभिषेक का तेल तथा सुगंधधूप;
आंगन के प्रवेश द्वार के लिए पर्दा;

16 होमबलि की वेदी और उसकी कांसे की झंझरी, उसके डंडे
तथा उसके सामान; कांसे की हौदी,

17 आंगन के लिए पर्दा, खंभे और कुर्सियां, और आंगन के द्वार
का पर्दा;

18 निवास और आंगन दोनों की खूंटियां तथा रस्सियां;

19 पवित्र स्थान में सेवा के अवसर पर बुने हुए वस्त्र, अहरोन
तथा उनके पुत्रों के लिए पवित्र वस्त्र, जो पुरोहित के पद पर
कार्य करते समय पहना जायेगा.”

20 इसके बाद इस्राएल के सारे लोग मोशेह के पास से चले गये.

21 जिसका मन आनंद से भर गया वे अपनी इच्छा से
मिलनवाले तंबू के बनाने के कार्य के लिये और सेवकाई में
और पवित्र वस्त्र बनाने के लिए याहवेह के लिए भेंट लाने लगे.

22 तब वे सभी स्त्री-पुरुष, अपनी इच्छा से अपने-अपने गहने,
नथुनी, अंगूठी, कंगन और सोने के गहने लाए और हर एक
पुरुष ने याहवेह को सोना भेंट किया.

23 हर व्यक्ति, जिसके पास नीले बैंगनी तथा लाल वस्त्र, बकरे
के रोम, लाल रंग में रंगी गई मेढ़े की खाल तथा सूंस की खाल
थी, सब ले आए.

24 और जो चांदी तथा कांसे भेंट करना चाहते थे उन्होंने
याहवेह के लिए वह दी, जिनके पास बबूल की लकड़ी थी, जो
सेवकाई में काम आ सके उन्होंने वही दिया.

25 प्रत्येक निपुण स्त्रियां अपने हाथों से कात कर जो उनके
पास था उसे ले आईं—नीले, बैंगनी तथा लाल सूत और सन,

26 और जो स्त्रियां इच्छुक थीं और कातने में निपुण थीं, उन्होंने
बकरे के रोम के सूत काते.

27 प्रधान जन सुलेमानी गोमेद और दूसरे वे सारे रत्न जो एफ़ोद
और सीनाबंद के लिये थे, वे ले आये.

28 लोग सुगंध द्रव्य और जैतून का तेल दीपकों के लिए,
अभिषेक के तेल के लिए तथा सुगंधित धूप बनाने के लिए ले
आए.

29 सभी इस्राएली स्त्री-पुरुष जिनकी इच्छा थी, याहवेह के लिये
मोशेह को दी गई आज्ञा के अनुसार सारे कार्य करने के लिये
याहवेह के लिए भेंट लाए.

30 तब मोशेह ने इस्राएलियों से कहा, “सुनो, याहवेह ने यहूदाह
गोत्र से हूर के पौत्र उरी के पुत्र बसलेल को चुना है,

31 और परमेश्वर ने उन्हें अपने आत्मा से प्रवीणता, समझ, बुद्धि
और सब कामों की समझ देकर भर दिया है.

32 ताकि वह सोना, चांदी एवं कांसे पर कलात्मक रचना कर
सकें,

33 और जड़ने के उद्देश्य से पत्थर काटने में कुशल तथा
लकड़ी के खोदने में बुद्धि से कलाकारी का काम कर सकें.

34 याहवेह ने बसलेल तथा दान के गोत्र के अहीसामक के पुत्र
ओहोलियाब को दूसरों को सिखाने की शक्ति दी.

35 याहवेह ने उन्हें कौशल से भर दिया है कि वह एक कारीगर
के किए जानेवाले सारे कामों को कर सके; खोदने, गढ़ने,
नीले, बैंगनी तथा लाल रंग के मलमल पर कशीदाकारी करने
और बुनने वाले वस्त्र को नए-नए तरीके से बनाएं.

Exodus 36:1

1 बसलेल, ओहोलियाब और उन सारे लोगों को जिन्हें याहवेह
ने कौशल, समझ, बुद्धि और ज्ञान दिया है कि वह पवित्र स्थान
को बनाने के कार्य को कैसे करना है. वे उन कामों को उसी
प्रकार से करेंगे जैसे याहवेह ने आज्ञा दी है.”

2 तब मोशेह ने बसलेल, ओहोलियाब और उन सारे लोगों को
जिन्हें याहवेह ने कौशल दिया, और जो अपनी इच्छा से
सेवकाई करना चाहते थे, बुलवाया.

3 इन्होंने मोशेह से इस्राएलियों द्वारा पवित्र स्थान को बनाने के
लिये जो भी भेंट लाई गई थी, उन चीज़ों को लिया, और लोग
सुबह दर सुबह स्वेच्छा से वस्तुएं लाते गये.

4 पवित्र स्थान को बनाने में जितने भी योग्य कारीगर थे वह
अपने कार्य को छोड़ मोशेह के पास आये.

5 उन्होंने मोशेह से कहा, “पवित्र स्थान, जैसे याहवेह ने कहा
है, वैसे बनाने में जितने सामान की ज़रूरत थी, लोग उससे
कहीं ज्यादा हमारे पास ला रहे हैं.”

6 तब मोशेह ने आज्ञा दी और इस बात की पूरी छावनी में
घोषणा हुई कि कोई भी स्त्री या पुरुष अब पवित्र स्थान के लिये
भेंट स्वरूप कुछ न लाये. इस प्रकार लोगों को कुछ और न
लाने के लिये पाबंद किया गया.

7 क्योंकि अब उनके पास ज़रूरत से ज्यादा सामान हो गया
था.

8 फिर पवित्र स्थान बनाया गया जिसमें दस पर्दे बनाये गये थे,
जो बंटी हुई मलमल और नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों
से बने थे, और इन पर्दों पर कुशल कारीगरों द्वारा करूबों का
चित्र बुना हुआ था.

9 हर पर्दे की लंबाई बारह मीटर साठ सेंटीमीटर और चौड़ाई
एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर थी. हर पर्दा एक ही नाप का था.

10 उन्होंने पांच पर्दों को एक साथ जोड़कर पांच पांच के दो
पर्दे बनाए.

11 पहले पांच पर्दों की किनारी पर तथा इसी तरह दूसरे पांच
पर्दों की किनारी पर नीले रंग का फंदा बनाया.

12 एक पर्दे में पचास फंदे और दूसरे में भी पचास फंदे. वे फंदे
एक दूसरे के सामने बनाया.

13 फिर सोने की पचास अंकुड़े बनाईं और दोनों पर्दों को एक
दूसरे से जोड़ दिया; इस प्रकार पवित्र स्थान बन गया.

14 फिर बकरे के रोमों से ग्यारह पर्दे बनाए जो पवित्र स्थान के
ऊपर का हिस्सा था.

15 हर एक पर्दे की लंबाई साढ़े तेरह मीटर तथा चौड़ाई एक
मीटर अस्सी सेंटीमीटर थी. सभी ग्यारह पर्दे एक ही नाप के थे.

16 उन्होंने ऐसे पांच पर्दों को एक साथ तथा बाकी छः पर्दों को
एक साथ जोड़कर बड़ा कर दिया.

Exodus 36:1

17 और दोनों अलग-अलग पर्दों की एक-एक किनारी पर
पचास-पचास फंदे लगाए.

18 और दोनों पर्दों को जोड़ने के लिए कांसे के पचास अंकुड़े
बनाए और उन कड़ों पर पर्दा लगाकर पूरा एक हिस्सा बना
दिया.

19 तंबू के लिए लाल रंग से रंगी हुई भेडों की खाल का एक
ओढ़ना बनाया, और फिर उसके ऊपर लगाने के लिए सूस के
चमड़े का एक और ओढ़ना बनाया.

20 फिर पवित्र स्थान को खड़ा करने के लिए बबूल की लकड़ी
के तख्ते बनाए.

21 हर तख्ते की लंबाई साढ़े चार मीटर तथा चौड़ाई साढ़े
सड़सठ सेंटीमीटर थी.

22 तख्ते को जोड़ने के लिए दो समानांतर चूलें थीं. पवित्र स्थान
के सब तख्ते इसी तरह बनवाये.

23 उन्होंने पवित्र स्थान के दक्षिण दिशा के लिए बीस तख्ते
बनाए.

24 उनके नीचे चांदी की चालीस कुर्सियां बनवाईं, जो तख्तों के
नीचे रखी गई थीं. हर तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के लिए
दो कुर्सियां बनवाईं.

25 और इसी प्रकार उत्तर की ओर भी बीस तख्ते बनाये,

26 और चांदी की चालीस कुर्सियां हर एक तख्ते के नीचे दो
कुर्सियां बनाईं.

27 पवित्र स्थान के पीछे पश्चिम की ओर छः तख्ते बनाए.

28 और पीछे के भाग के कोनों के लिए दो तख्ते बनाए.

29 कोने के दोनों तख्ते एक साथ जोड़ दिए. तले में दोनों तख्तों
की खूंटियां चांदी के एक ही आधार में लगाई और दोनों भाग
ऊपर से जुड़ा हुआ और नीचे का भाग अलग था.

30 इस प्रकार आठ तख्ते बनवाये, जिसके नीचे चांदी की
सोलह कुर्सियां थीं, हर तख्ते के नीचे दो कुर्सियां थीं.

31 फिर बबूल की लकड़ी की छड़ें बनाए, पवित्र स्थान की एक
तरफ के तख्तों के लिए पांच छड़ें बनवाए

32 तथा पवित्र स्थान की दूसरी तरफ के तख्तों के लिए पांच
कड़े तथा पवित्र स्थान के पश्चिमी दिशा के तख्ते के लिए पांच
कड़े बनाए.

33 तख्ते के एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए तख्ते के
बीच में कड़े बनाए.

34 तख्तों के ऊपर सोना लगवाया और कड़े में भी सोना
लगवाया. लकड़ी की डंड़ीयों को भी सोना लगवाया.

35 फिर नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों से और बंटी हुई
मलमल से एक बीच वाला पर्दा बनाए, जिस पर कढ़ाई के
काम द्वारा करूबों के रूप बनाए.

36 उसने बबूल की लकड़ी के चार खंभे बनाए और उसके
ऊपर सोना लगाया. इन खंभों पर पर्दों के लिए सोने की
कड़ियां और चांदी की चार कुर्सियां बनाए.

37 तंबू के द्वार के लिए नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों
का, तथा बंटी हुई बारीक़ सनी वाले कपड़ों की कढ़ाई का
काम किया हुआ एक पर्दा बनवाया.

38 और पांच खंभे बनाए. खंभे के ऊपर और नीचे के हिस्से में
सोना लगाया, उनकी पट्टियां सोने से बनाई गई तथा उनकी
पांचों कुर्सियां कांसे की बनाई.

Exodus 37:1

Exodus 37:1

1 फिर बसलेल ने बबूल की लकड़ी से संदूक बनाया. इसकी
लंबाई एक सौ दस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई और ऊंचाई सत्तर-
सत्तर सेंटीमीटर थी.

2 संदूक के अंदर और बाहर सोना लगाया और चारों तरफ
सोने की किनारी लगाई.

3 इसके चारों पायों पर लगाने के लिए सोने के चार कड़े
बनाए—दो कड़े एक तरफ और, दो कड़े दूसरी तरफ थे.

4 उसने बबूल की लकड़ी के डंडे बनाए और उस पर सोना
लगाया तथा इन्हें संदूक के दोनों तरफ लगे कड़ों में डाल दिया
ताकि संदूक को उठाना आसान हो.

6 फिर सोने से करुणासन बनाया जो एक सौ दस सेंटीमीटर
लंबा तथा सत्तर सेंटीमीटर चौड़ा था.

7 उन्होंने सोने के पत्रों से दो करूबों को करुणासन के दोनों
तरफ बनाया.

8 एक करूब एक तरफ तथा दूसरा करूब दूसरी तरफ
बनाया और करूब को करुणासन के साथ एक ही टुकड़े से
बनाया.

9 करूबों के पंख ऊपर से ऐसे खुले थे जिससे करुणासन
उनसे ढंका रहा और वे एक दूसरे के आमने-सामने
करुणासन की ओर थे, तथा उनका मुंह करुणासन की ओर
झुका हुआ था.

10 बसलेल ने बबूल की लकड़ी की एक मेज़ बनाई, जो नब्बे
सेंटीमीटर लंबी, पैंतालीस सेंटीमीटर चौड़ी थी तथा साढ़े
सड़सठ सेंटीमीटर ऊंची थी.

11 उसमें सोना लगाकर उसके चारों ओर इसकी किनारियां
सोने की बनाई.

12 उन्होंने इसके चारों ओर साढ़े सात सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी
बनाई—इस पट्टी के चारों ओर सोने की किनारियां लगाई गईं.

13 मेज़ के लिए सोने के चार कड़े बनाये और इन कड़ों को मेज़
के चारों पैरों के ऊपर के कोनों पर इन सोने के कड़ों को लगा
दिया.

14 कड़े पट्टी के पास लगाये ताकि मेज़ उठाने के लिये डंडे इन
कड़ों में डाले जा सकें.

15 डंडे बबूल की लकड़ी के बनाए गए थे तथा ऊपर सोना लगा
दिया गया.

16 इस मेज़ पर रखे जानेवाले समान अर्थात्, थालियां, तवे,
कटोरियां तथा पेयार्पण डालने के लिए बर्तन, ये सब सोने के
बनाए.

17 फिर उन्होंने शुद्ध सोने का एक दीपस्तंभ बनाया. उसे
पीटकर आधार तथा उसके डंडे को बनाया, और उसने फूलों
के समान दिखनेवाले प्याले बनाए. प्यालों के साथ कलियां
और खिले हुए पुष्प थे. ये सभी चीज़ें एक ही इकाई में परस्पर
जुड़ी हुई थीं.

18 दीये से छः डालियां निकलीं, तीन एक तरफ और तीन दूसरी
तरफ रखीं.

19 हर डाली में कलियों और फूलों के साथ बादाम के फूलों के
आकार के तीन पुष्पकोष और एक गांठ थे. पूरे छः डालियों
को, जो दीये से निकलीं, इसी आकार से बनाई.

20 दीये की डंडी में चार फूल बने थे, जिसमें बादाम के फूल के
समान कलियां तथा पंखुड़ियां बनी थीं.

21 दीये से निकली हुई छः डालियों में से दो-दो डालियों के नीचे
एक-एक गांठ और दीये समेत एक ही टुकड़े से बने थे.

22 ये सभी कलियां, शाखाएं और दीप का स्तंभ शुद्ध सोने को
पीटकर बने थे.

23 उन्होंने वे सातों दीये, इनके बुझाने के साधन तथा रखने के
बर्तन सोने से बनाए.

24 दीये और उसके साथ सभी सामान को लगभग पैंतीस किलो सोने से बनाया गया.

25 फिर बबूल की लकड़ी से धूप वेदी बनाई; यह चौकोर थी, जिसकी लंबाई पैंतालीस सेंटीमीटर तथा चौड़ाई भी पैंतालीस सेंटीमीटर थी, व ऊंचाई नब्बे सेंटीमीटर, तथा इसकी सींग एक ही टुकड़े से बनाई गई थी.

26 पूरी धूप वेदी का ऊपरी हिस्सा इसके चारों परत तथा इसके सींग और चारों ओर की किनारी सोने की बनाई.

27 इसकी किनारियों के नीचे सोने के दो-दो कड़े लगाए. इसको इन डंडे के द्वारा उठाने के लिए ही दोनों तरफ आमने-सामने कड़े लगवाया.

28 इन डंडों को बबूल की लकड़ी से बनाकर उसमें सोने की परत चढ़ाई.

29 बसलेल ने अभिषेक का पवित्र तेल और सुगंध द्रव्य भी बनाया, जिस प्रकार से कोई निपुण इत्र बनानेवाला बनाता है.

Exodus 38:1

1 और बसलेल ने बबूल की लकड़ी से होमबलि के लिए चौकोर वेदी बनाई. यह दो मीटर पच्चीस सेंटीमीटर लंबी तथा इतनी ही चौड़ी थी. इसकी ऊंचाई एक मीटर सैंतीस सेंटीमीटर थी.

2 और इसके चारों कोनों पर एक-एक सींग बनाया, जो वेदी के साथ एक ही टुकड़े में कांसे से बनाये गये.

3 डोल, बेलचे, छिड़काव कटोरे, कांटे तथा तवे जैसी वेदी में काम आनेवाली सभी चीज़ों को कांसे से बनाया.

4 वेदी के लिए कांसे की जाली की एक झंझरी बनाई, जो वेदी की आधी ऊंचाई पर लगाई गई थी.

5 कांसे की झंझरी के चारों कोनों पर चार कड़े लगाए, ताकि इनके बीच से डंडों को लगा सकें.

6 डंडे बबूल की लकड़ी से बनाकर उस पर कांसे लगवा दी.

7 उसने उन डंडों को उन कड़ों में डाल दिया ताकि वेदी को उठाया जा सके. वेदी भीतर से खोखली थी और तख्ते जोड़कर बनाई गई थी.

8 इसकी हौदी और पाये दोनों कांसे के बनाए. इसे उन स्त्रियों के दर्पणों से बनाया, जो मिलनवाले तंबू के द्वार पर सेवा करती थीं.

9 फिर पवित्र स्थान के आंगन को बनाया. आंगन के दक्षिण हिस्से में बंटी हुई बारिक सनी के कपड़े का पर्दा था, जिसकी लंबाई पैंतालीस मीटर थी,

10 तथा बीस खंभे और कांसे की बीस कुर्सियां बनवाईं. खंभों के कुण्डे और पट्टियां चांदी की थी.

11 आंगन के उत्तरी दिशा के लिए भी पैंतालीस मीटर लंबे पर्दे बनाए गए और इसके लिए कांसे के बीस खंभे और बीस कुर्सियां बनाई गईं. मीनारों की कड़ियां तथा उसकी पट्टियां चांदी की थीं.

12 पश्चिम दिशा के पर्दे साढ़े बाईस मीटर लंबे थे, तथा इसके लिए दस खंभे एवं दस कुर्सियां बनाई गई थी. मीनारों की कड़ियां तथा पट्टियां चांदी की थी.

13 पूर्वी दिशा के पर्दे भी साढ़े बाईस मीटर लंबे थे.

14 द्वार के एक तरफ के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के थे, और तीन खंभे और तीन कुर्सियां बनाई गयीं.

15 आंगन के प्रवेश द्वार की दूसरी ओर के पर्दे छः मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर के थे, तथा और तीन खंभे और तीन कुर्सियां बनाई गयीं.

16 आंगन के चारों ओर के पर्दे सूक्ष्म बंटी हुई सन के थे.

17 मीनारों की कुर्सियां कांसे की बनाई गई थी, मीनारों की कड़ियां तथा उनकी पट्टियां चांदी की थीं. उनका ऊपरी हिस्सा चांदी का था तथा आंगन के सभी मीनारों पर चांदी की पट्टियां लगाई गई थीं.

18 आंगन के प्रवेश द्वार के पर्दे सन के उत्तम रेशों के नीले, बैंगनी तथा लाल कपड़े के बने थे. इस पर कढ़ाई कढ़ी हुई थी. इसकी लंबाई नौ मीटर तथा ऊंचाई सवा दो मीटर थी, जो आंगन के दूसरे पर्दे के बराबर थी.

19 इनके चारों खंभे तथा उनकी चारों कुर्सियां कांसे की थीं. इनकी कड़ियां तथा ऊपरी हिस्सा तथा उनकी पट्टियां चांदी की थीं.

20 पवित्र स्थान और उसके चारों ओर के आंगन की सभी खूंटियां कांसे की थीं.

21 मोशेह के आदेश के अनुसार बनाए गए पवित्र स्थान और वाचा के पवित्र स्थान के निर्माण में जो जो सामग्रियां उपयोग में आई थीं, उन सभी की गिनती, जो पुरोहित अहरोन के पुत्र इथामार के नेतृत्व में लेवियों द्वारा की गई, वह इस प्रकार है:

22 जिन वस्तुओं को बनाने की आज्ञा याहवेह द्वारा मोशेह को दी गई थी, वह यहूदाह गोत्र के बसलेल ने बना दी—बसलेल उरी के पुत्र, हूर के पोते थे.

23 उनके साथ दान गोत्र के अहीसामक के पुत्र ओहोलियाब थे, जो नक्काशी और शिल्पकार तथा कढ़ाई करने तथा सूक्ष्म बंटी हुई सन और नीले, बैंगनी तथा लाल वस्त्रों के बनाने में निपुण थे.

24 पवित्र स्थान को बनाने में जितना सोना भेंट चढ़ा था, वह सोना पवित्र स्थान की तौल के अनुसार कुल एक हजार दो किलो था.

25 इस्राएलियों ने पवित्र स्थान के लिए जो चांदी भेंट दी थी, वह पवित्र स्थान की तौल के अनुसार लगभग तीन हजार पांच सौ बीस किलो थी.

26 जो इस्राएली बीस वर्ष की उम्र से ज्यादा के थे, वे संख्या में कुल छः लाख तीन हजार पांच सौ पचास व्यक्ति थे, उन्होंने पवित्र स्थान की तौल के अनुसार आधा शेकेल, अर्थात् छः ग्राम भेंट दी.

27 पवित्र स्थान तथा बीच के पर्दों के लिए लगभग साढ़े तीन हजार किलो चांदी उपयोग की गई थी—एक सौ कुर्सियां साढ़े तीन हजार किलो चांदी से बनीं—एक कुर्सी के लिए लगभग पैंतीस किलो चांदी लगी.

28 जो बीस किलो चांदी बच गई, उससे मीनारों के लिए कड़ियां बनाई और ऊपरी हिस्से की पट्टियां भी बना दीं.

29 भेंट में चढ़ाया गया कांस्य लगभग दो हजार सवा चार सौ किलो था.

30 उससे मिलनवाले तंबू के द्वार के लिए कुर्सियां, कांसे की वेदी तथा इसकी जाली तथा वेदी का सारा सामान,

31 आंगन के चारों ओर की कुर्सियां तथा उसके द्वार की कुर्सियां तथा निवास और आंगन के चारों ओर की खूंटियां भी बनाई गईं.

Exodus 39:1

1 नीले, बैंगनी और लाल रंग के सूत से पवित्र स्थान में सेवा के अवसर पर पहनने के लिए वस्त्र बनाए, और अहरोन के लिए पवित्र वस्त्र, जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी, वैसा ही बनाया.

2 उन्होंने एफ़ोद को सुनहरे और नीले बैंगनी तथा लाल रंग के कपड़े का और सूक्ष्म बंटे हुए सन के कपड़े का बनाया.

3 उन्होंने सोने को पीटकर उसकी पत्तियां बनाई तथा इन्हें काटकर इनके धागे बनाए ताकि इन्हें नीले, बैंगनी तथा लाल रंग के सूत के उत्तम रेशों में बुना जा सके, जो एक कुशल कारीगर का काम था.

4 उन्होंने एफ़ोद के जोड़ने के लिए कंधों की पट्टियां बनाईं और कंधे की इन पट्टियों को एफ़ोद के कंधे पर टांका

5 कमरबंध एफ़ोद के साथ बुना हुआ बनाया, और एक ही प्रकार की सामग्री से बनाया, अर्थात् सुनहरे, नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़ों और बंटी हुई मलमल से बनाया, जैसा ही याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

Exodus 39:1

6 उन्होंने सुलेमानी गोमेद को सोने की महीन जालियों में जड़ा
और उनमें इस्राएली पुत्रों के नाम मुहर जैसे खोदकर सोने के
खानों में लगा दिये.

7 इन दोनों मणियों को इस्राएल के पुत्रों के यादगार मणियों के
रूप में एफ़ोद के कंधों में लगाया, जैसा मोशेह को याहवेह ने
आज्ञा दी थी.

8 उन्होंने एक कुशल शिल्पकार द्वारा न्याय की पेटी बनवाई,
उसे बेलबूटेदार एफ़ोद के समान बनवाया. उसे सुनहरे, नीले,
बैंगनी और लाल रंग के कपड़े तथा बंटी हुई मलमल से
बनवाया.

9 इसे मोड़कर दो भाग बनाए, और इसका आकार चौकोर था,
यह साढ़े बाईस सेंटीमीटर लंबा तथा साढ़े बाईस सेंटीमीटर
चौड़ा था.

10 इस पर उन्होंने मणियों की चार पंक्तियां बनाई. पहली
पंक्ति में एक माणिक्य, एक पुखराज और एक मरकत थे.

11 दूसरी पंक्ति में एक लाल मणि, एक नीलम और एक हीरा
लगाए.

12 तीसरी पंक्ति में एक तृणमणि, एक यशब और एक याकूत.

13 चौथी पंक्ति में एक स्वर्णमणि, एक सुलेमानी और एक
सूर्यकांत मणि; इन्हें नक्काशी किए हुए सोने के खांचों में लगा
दिये.

14 ये इस्राएल के बारह पुत्रों के अनुसार बारह मणियां थी. हर
मणि पर बारह गोत्रों में से एक नाम लिखे गये, जिस तरह एक
कारीगर मुहर पर खोदता है. एक मणि पर इस्राएल के बारह
गोत्रों में से एक का नाम था.

15 वक्षपेटिका के लिए बंटी हुई डोरियों के रूप में सोने की
गुंथी हुई जंजीर बनवाया.

16 वक्षपेटिका के लिए सोने के दो कड़े भी बनवाये, और इन
दोनों कड़ों को वक्षपेटिका के दोनों सिरों पर लगवाये.

17 इसके बाद सोने की इन दोनों डोरियों को वक्षपेटिका के
सिरों में लगे हुए दोनों कड़ों में लगवाये.

18 उन्होंने दोनों डोरियों के दूसरे सिरों को नक्काशी किए हुए
दोनों खांचों में जुड़वाये. उन्हें एफ़ोद के कंधों में सामने की ओर
लगवाये.

19 उन्होंने फिर सोने के दो और कड़े बनाकर इन्हें वक्षपेटिका
के सिरों पर अंदर की ओर एफ़ोद से सटाकर लगवाये.

20 फिर उन्होंने दो कड़े बनाए और उन्हें एफ़ोद के कंधों की
तरफ़ की छोर के सामने की तरफ़ से मिला दिया, जो एफ़ोद
की बुनी हुई पट्टी के पास से थी.

21 उन्होंने वक्ष पटल को उसके कड़ों के द्वारा एफ़ोद के कड़ों
से एक नीले रंग की रस्सी द्वारा बांध दिया, जिससे यह अब
एफ़ोद के बुने हुए भाग पर जुड़ गया, जिससे वक्ष पटल एवं
एफ़ोद एक दूसरे से जुड़े रहते थे. यह सब याहवेह द्वारा मोशेह
से कहे गये वचन के अनुसार किया गया.

22 फिर उन्होंने एफ़ोद का पूरा अंगरखा नीले कपड़े का
बनवाया.

23 इस वस्त्र के बीच में एक छेद था. छेद के चारों ओर एक
कोर बनाया ताकि वह फट न पाए.

24 इस वस्त्र की किनारी पर नीली, बैंगनी तथा लाल, सूक्ष्म बंटी
हुई सन के रेशों से अनार बनाए.

25 उन्होंने सोने की घंटियां भी बनाईं और इन्हें वस्त्र की
किनारी के चारों ओर अनारों के बीच में लगा दिया.

26 वस्त्र में एक अनार, फिर एक घंटी, और एक अनार फिर
एक घंटी लगाई गई कि वह वस्त्र पहनकर सेवा का काम करें.
यह वैसा ही किया जैसा याहवेह ने मोशेह से कहा था.

27 अहरोन एवं उनके पुत्रों के लिए उन्होंने मलमल के कुर्ते,

28 पगड़ियां एवं टोपियां और जांघिया बनाई.

Exodus 40:1

29 उन्होंने नीले, बैंगनी तथा लाल रंग के मलमल से पगड़ी
बनाई, जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

30 शुद्ध सोने की एक पट पर मुहर के समान ये अक्षर खोदे
गए: याहवेह के लिए पवित्र.

31 उन्होंने उसमें एक नीला फीता लगाया कि वह पगड़ी के
ऊपर रहे—जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

32 इस प्रकार मिलनवाले तंबू और पवित्र स्थान का काम पूरा
हुआ. इस्राएलियों ने सब कुछ वैसा ही किया, जैसे जैसे याहवेह
ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

33 फिर वे पवित्र स्थान की सब वस्तुएं मोशेह के पास लाए:
अर्थात् तंबू, इसकी अंकुड़ियों, तख्ते, छड़ें, खंभे तथा कुर्सियां;

34 मेढ़े की खालों का ओढ़ना जो लाल रंग से रंगी गई थी, सूंस
की खाल का ओढ़ना तथा पर्दा;

35 संदूक, डंडों समेत करुणासन, बीच वाला पर्दा;

36 मेज़ और उसके सभी सामान, भेंट की रोटी,

37 सारे सामान सहित, दीवट उसकी सजावट के दीपक, और
दीये के लिए तेल,

38 सोने की वेदी और अभिषेक का तेल, सुगंधधूप और तंबू के
द्वार का पर्दा;

39 कांसे की वेदी और उसकी कांसे की झंझरी, उसके डंडे
तथा उसके सामान; कांसे की हौदी;

40 आंगन के द्वार का पर्दा, उसके खंभे और कुर्सियां सहित
आंगन का पर्दा; उसकी डोरियां, उसकी खूंटियां; तथा
मिलनवाले तंबू के पवित्र स्थान का सारा सामान;

41 पवित्र स्थान में सेवा के अवसर पर पहनने के बुने हुए वस्त्र,
अहरोन तथा उनके पुत्रों के लिए पवित्र वस्त्र, जो पुरोहित के
पद पर कार्य करते समय पहनकर जाना था.

42 इस प्रकार इस्राएलियों ने वह सब काम पूरा किया, जिसकी
याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

43 मोशेह ने उन सब कामों को जांचा जो उन्होंने किया था, और
सब काम जैसी याहवेह की आज्ञा थी, उसी के अनुसार ही
किया गया था. फिर मोशेह ने सबको आशीष दी.

Exodus 40:1

1 फिर याहवेह ने मोशेह से कहा:

2 “पहले महीने के पहले दिन मिलनवाले तंबू के पवित्र स्थान
को खड़ा कर देना.

3 उसमें साक्षी पत्र के संदूक को रखकर बीचवाले पर्दे के पीछे
रख देना.

4 मेज़ का सारा सामान लेकर उसे अंदर ले आना, फिर दीप
स्तंभों को ले आना और दीयों को जला देना.

5 साक्षी पत्र के संदूक के सामने सोने की वेदी को, जो धूप के
लिए है, उसे रखना और पवित्र स्थान के पर्दे को लगा देना.

6 “और पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार पर, अर्थात् मिलनवाले तंबू
के सामने, होमबलि की वेदी को रखना.

7 मिलनवाले तंबू और वेदी के बीच हौद में पानी भरकर रखना.

8 तुम इसके चारों तरफ आंगन बनाना और आंगन के द्वार पर
पर्दा लगाना.

9 “फिर अभिषेक का तेल लेकर पवित्र स्थान और जो कुछ
उसमें हैं, सबका अभिषेक करना और पवित्र करना.

Exodus 40:1

10 तुम होमबलि की वेदी और उसके सब सामान को अभिषेक
करना, तब वेदी महा पवित्र हो जायेगी.

11 और पाए समेत हौदी का भी अभिषेक करके पवित्र करना.

12 “फिर अहरोन एवं उनके पुत्रों को मिलनवाले तंबू के द्वार
पर नहलाना.

13 और अहरोन को पवित्र वस्त्र पहनाना, और उनका
अभिषेक करके उनको पवित्र करना, ताकि वह मेरे लिए
पुरोहित होकर मेरी सेवा करे.

14 फिर उनके पुत्रों को उनके वस्त्र पहनाना.

15 और उनका भी अभिषेक उसी प्रकार करना, जिस प्रकार
उनके पिता का किया था, ताकि वे भी मेरी सेवा कर सकें.
उनका यह अभिषेक उनकी पीढ़ी से पीढ़ी तक पुरोहित
होकर मेरी सेवा का चिन्ह रहेगा.”

16 मोशेह ने सब काम वैसे ही किया, जैसा याहवेह ने उनको
आज्ञा दी थी.

17 दूसरे साल के पहले महीने के पहले दिन में पवित्र स्थान को
खड़ा किया गया.

18 मोशेह ने जब पवित्र स्थान को खड़ा किया, तब कुर्सियों पर
तख्ते रखकर उनमें कड़े डाले और मीनारों को खड़ा किया.

19 मोशेह ने पवित्र स्थान के ऊपर तंबू बिछाया और तंबू के
ऊपर ओढ़नी लगाई जैसे याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

20 मोशेह ने साक्षी पट्टियों को संदूक में रखा और संदूक में
डंडों को लगाकर उसके ऊपर करुणासन से ढंका.

21 मोशेह ने संदूक को पवित्र स्थान में रखवाया और बीचवाले
पर्दे को टांग दिया और साक्षी पत्र के संदूक को अंदर पर्दे की
आड़ में किया, जैसे याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

22 फिर मिलनवाले तंबू में पवित्र स्थान के उत्तर दिशा पर बीच
के पर्दे के बाहर मेज़ लगवाया.

23 मेज़ पर मोशेह ने रोटियों को याहवेह के सम्मुख जमाया,
जैसा याहवेह ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

24 मोशेह ने मिलनवाले तंबू में मेज़ के सामने दक्षिण दिशा में
दीपस्तंभ को रख दिया.

25 और दीयों को याहवेह के सामने जला दिया, जैसा याहवेह
ने मोशेह को आज्ञा दी थी.

26 फिर मोशेह ने मिलनवाले तंबू के भीतर, बीच के पर्दे के
सामने, सोने की वेदी को रखा.

27 और उस पर सुगंधित धूप जलाया, जैसा याहवेह ने मोशेह
को आज्ञा दी थी.

28 मोशेह ने फिर पवित्र स्थान के द्वार पर पर्दा लगाया,

29 और मिलनवाले तंबू के पवित्र स्थान के द्वार पर होमबलि
की वेदी रखकर उस पर होमबलि और अन्नबलि चढ़ाई, जैसी
याहवेह ने उन्हें आज्ञा दी थी.

30 मिलनवाले तंबू और वेदी के बीच हौदी रखी, और उसमें
पानी भर दिया.

31 इसमें से पानी लेकर मोशेह, अहरोन तथा उनके पुत्र अपने
हाथ एवं पांव धोते थे.

32 जब भी वे मिलनवाले तंबू तथा वेदी के पास जाते थे, वे
अपना हाथ-पांव धोकर ही जाते थे, जैसी याहवेह ने मोशेह को
आज्ञा दी थी.

33 पवित्र स्थान और वेदी के चारों ओर आंगन बनाया और
आंगन के द्वार पर पर्दा लगाया. इस प्रकार मोशेह ने काम पूरा
किया.

34 तब बादल मिलनवाले तंबू पर फैल गया और याहवेह का
तेज पवित्र स्थान में भर गया.

35 मोशेह तंबू में न जा सके, क्योंकि मिलनवाले तंबू के ऊपर
बादल था और याहवेह का तेज पवित्र स्थान में भरा हुआ था.

36 इस्राएलियों की पूरी यात्रा में, जब-जब बादल पवित्र स्थान
के ऊपर से उठता, तब-तब वे वहां से निकलते.

37 अगर बादल पवित्र स्थान से नहीं हटता, तब तक इस्राएली
लोग कुछ नहीं करते; जब तक बादल उठ नहीं जाता.

38 इस्राएलियों की सारी यात्राओं में याहवेह उनके लिए दिन में
पवित्र स्थान के ऊपर बादल से उनको छाया देते, और रात में
बादल में आग से उन्हें रोशनी दिखाई देती थी.